CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी शब्दानुशासन

२४०

रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

શ્રી સ્વામી વિમલાનંદજી ને (સ્વામી)
~~શ્રી હરિવલ્લભ~~ ચરણે ~~પ્રસાદ~~ સિદ્ધાંજી
કે
સાદર ભેંટ
, જનાર્દના,
૧૫.૫.૭૬.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के १८वां फूल

भोजपुरी शब्दानुशासन

लेखक
रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर

प्रकाशक
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद
द्वारा/रोड—ए, क्वार्टर—टी/६, टेल्को कॉलनी, जमशेदपुर—८३१००४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद
द्वारा
रोड–ए, क्वार्टर–टी/६, टेल्को कॉलनी
जमशेदपुर—८३१००४

सर्वाधिकारी—लेखक

दाम
११ रुपया (पुस्तकालय संस्करण)
९ रुपया (साधारण संस्करण)

संस्करण : प्रथम
स्वतंत्रता दिवस, १५ अगस्त १९७५ ई०

मुद्रक
जयदुर्गा प्रेस
नयाटोला, पटना–४

BHOJPURI SHABDANUSHASAN
[An Introductory Grammar of Bhojpuri]
Rasik Bihari Ojha "Nirbhik", M. A., Research Scholar

JAMSHEDPUR BHOJPURI SAHITYA PARISHAD
C/o Qtr T--6, Road A, Telco Colony
Jamshedpur—831004

Price : Rs. 11/– only (*Library Edition*)
Rs. 9/– only (*Popular Edition*)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय लोक साहित्य आ संस्कृति

के

संरक्षक, प्रतिष्ठापक, मरमी विद्वान

परम पूज्य गुरुवर

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

के

कर-कमल

में

सादर समर्पित

निर्भीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन कथ

'व्याकरण' संस्कृत भाषा के वहुत पुरान शब्द ह जेकर व्याख्या कइल गइल वा—'व्याक्रियन्ते शब्दा अनेन इति व्याकरणम्'। यानी जवना शास्त्र के सहारा से भाषा व्याकृत कइल जाय, मतलब ओकर व्याख्या कइल जाय ओकरा शब्दन के खंड-खंड क के ओकर वास्तविक सरूप आ आपसी सम्वन्ध वगैरह स्पष्ट कइल जाय ओकरा के व्याकरण कहल जाला।

व्याकरण के दोसर नाँव शब्दानुशासन ह। अधिक प्रचलित शब्द त व्याकरणे वा। वाकी 'शब्दानुशासन' शब्द में व्याकरण के प्रयोजन ढेर झलकत वा। एकरा में मार्का के शब्द 'अनु' वा। व्याकरण भाषा प शासन ना करे। व्याकरण अपना आज्ञा से शब्द के स्वरूप में परिवर्तन नइखे कर सकत। ओकरा अर्थ में कवनो हेर-फेर नइखे कर सकत। भाषा के गति नइखे वदल सकत। ऊ त अनुशासन भर कर सकेला। अनु के मतलब होला पश्चात् भा अनुसार—वाद में भा मोताविक। परम्परा से जवना शब्द के रूप चलल आ रहल वा आ जेकर जवना अर्थ में प्रयोग वा, व्याकरण ओकरे अनुगमन करी। ओकरे पीछे चली। ऊ भाषा के अनुसार चली आ भाषा के गति भंग करे वाला अनाड़ी-अनजान भा वहकल-सहकल लोग के सही राह प ले आई। ईहे एकर अनुशासन वा।

शब्दानुशासन कहल जाउ भा व्याकरण दूनो के मतलव एके वा। हमरा विचार से शब्दानुशासन अधिक सटीक वा। एह से एह पुस्तक के नाँव 'भोजपुरी शब्दानुशासन' रखाइल।

अनेकन शोध कार्य से अब ई सिद्ध हो चुकल वा कि भोजपुरी वोली ना वलुक एगो वहुत समृद्ध भाषा ह। एकरा में व्यक्त करे के शक्ति कवनो भाषा से कम नइखे। पद्य के अलावा गद्य साहित्य के अनेक नया विधा प सफल ग्रंथ रचाइल वाड़े स। अकेले जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के सतरह प्रकाशन एकर प्रमाण वा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश के एकइस जिलन में पसरल लगभग छव करोड़ लोग के भाषा ह। भोजपुरी एगो अन्तरराष्ट्रीय भाषा ह। भोजपुरी बोलेवाला लोग नेपाल, फीजी, ट्रिनिडाड, जमइका, गायना, मारिशस, दक्षिण अफ्रिका, केनिया, बर्मा, सिंगापुर वगैरह में लाखन के संख्या में बाड़न। अतहत बड़ जनसमूह के भाषा के अब तक कवनो सहज, सरल आ व्यावहारिक व्याकरण ना रहल हा।

भोजपुरी के मान्यता देवे के सवाल अब तक जब कबो उठल त आन भाषा-भाषी भा अधिकारी हमनी से पूछि देत रहले हा कि भोजपुरी के व्याकरण बा ? त हमनी का आपन सिर खुझुलावे लागवि जा भा आपन लाज पचावे खातिर सीना तानिके कहवि जा कि हमनी के भाषा के व्याकरण लिखले बानीं अंग्रेज विद्वान डॉ० जे० बीम्स (नोट्स ऑन दि भोजपुरी डाइलेक्ट औफ हिन्दी स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार-सन् १८६७ ई० में), एम० एच० केलॉग (ए ग्रामर औफ दि हिन्दी लैंग्वेज-सन् १८७५ ई० में), जे० आर० डी० (नोट्स औन दि डाइलेक्ट करेन्ट इन आजमगढ़-सन् १८७७ ई० में), डॉ० ए० एफ० आर० हार्नले (ए ग्रामर औफ ईस्टर्न हिन्दी कम्पेयर्ड विथ दि अदर इन्डियन लैंग्वेजेज-सन् १८८० ई० में), डॉ० जी० ए० ग्रियर्सन (सेवेन ग्रामर्स औफ दि डायलेक्ट्स एण्ड सबडाइलेक्ट्स औफ दि बिहारी लैंग्वेजेज—सन् १८८४ ई० में), फादर ई० एच० ह्विटली (नोट्स औन दि गनवारी डाइलेक्ट औफ लोहरदगा-छोटानागपुर-सन १८९६ ई० में) आ भारतीय विद्वानन में डॉ० उदयनारायण तिवारी (ए डाइलेक्ट औफ भोजपुरी—लेख, सन् १९३५ ई० में, ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आफ भोजपुरी—शोध प्रबन्ध, सन् १९४५ ई० में), डॉ० शुकदेव सिंह (हिन्दी और भोजपुरी—सन् १९६७ ई० में), श्री रासबिहारी राय शर्मा (भोजपुरी व्याकरण-सन् १९६४ ई० में) वगैरह।

साँच बात बा कि ई हमनी के कवनो गलथेथि भा लाज पचावे के बात ना रहल हा। ऊपर लिखल विद्वान भोजपुरी भाषा आ एकरा व्याकरण प अपना अंग्रेजी भा हिन्दी माध्यम से लिखल लेख, शोध प्रबन्ध भा पुस्तक वगैरह में काफी गोता लगवले बाड़न। ई सभ काम 'भाषा विज्ञान' का दृष्टि से भइल बा भा तुलनात्मक दृष्टि से। निछक्का व्याकरण के जरूरत कवनो से पूरा ना होत रहल हा। एह से एकर कवनो आम उपयोग ना रहल हा। एह में हिन्दी माध्यम से लिखल डॉ० शुकदेव सिंह आ श्री रासबिहारी राय शर्मा के क्रमशः तुलनात्मक आ वर्णनात्मक व्याकरण कुछ उपयोगी बा, बाकी ई बहुते संक्षेप में बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याकरण तीन तरह के होला—(क) **ऐतिहासिक व्याकरण**—जवन 'भाषा विज्ञान' के दृष्टिकोण से लिखाला। एह में शब्दन के परिवर्त्तन के इतिहास वगैरह रहेला, जइसे डॉ० उदयनारायण तिवारी के शोध प्रबंध। (ख) **तुलनात्मक व्याकरण**—जवना में एक भाषा के व्याकरण से दोसरा भाषा के व्याकरण से तुलना कइल रहेला, जइसे डॉ० उदयनारायण तिवारी के शोध प्रबंध के आधार प लिखल 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के खण्ड 'ख', डॉ० शुकदेव सिंह के 'हिन्दी और भोजपुरी' आ श्री रासबिहारी राय शर्मा के 'भोजपुरी व्याकरण' आ (ग) **वर्णनात्मक व्याकरण** जवना में व्याकरण के सभ अंगन के व्याख्या आ उदाहरण रहेला, ई विद्यालय में पढ़ावल जाला, आ एकर व्यवहार में उपयोग कइल जाला, जइसे अंग्रेजी के नेसफिल्ड ग्रामर आ हिन्दी के कामता प्रसाद गुरु के हिन्दी व्याकरण वगैरह।

ई पुस्तक भोजपुरी माध्यम से लिखल भोजपुरी के पहिला वर्णनात्मक व्याकरण वा। एकर आधार लोक व्यवहार आ प्रयोग वा।

जवरदस्ती व्याकरण के अंग के नाँव (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया-विशेषण, अव्यय वगैरह) भोजपुरिआवल नइखे गइल। ई सभ अउर आर्य भाषा लेखा वा। व्याकरण के सभ अंग के नाँव मराठी, मलयालम, उड़िया, तेलुगू, पंजावी, वंगला वगैरह में हू-ब-हू संस्कृते लेखा वा। एह से अगर भोजपुरियो में ओसहीं राखल गइल वा त ई कवनो दूसे के वात ना होई।

वैयाकरण (व्याकरण-लेखक) के काम जवरन नियम वना के कवनो भाषा प लादल ना ह। अइसे कइला प सभ केहू एकमत नइखे हो सकत। वैयाकरण के काम ओह भाषा के प्रकृति-स्वभाव भा ढर्रा के अध्ययन क के लोगन के देखा दीहल आ वतला दीहल कि एह भाषा के ढर्रा ईहे वा। पहिले भाषा बनेला आ वाद में व्याकरण। व्याकरण अहथिर शब्दन के अध्ययन करेला। अब केहू चाह (चाय) के 'चा' लिखि दे त व्याकरण एह प्रयोग के गलत करार करी, भले ई 'भाषा विज्ञान' के अध्ययन के विषय वनो।

कवनो भाषा के ओकरा क्रियापद से पहचानल जाला खाली शब्दे से ना। तेलुगू, वंगला, हिन्दी, मैथिली में पचास प्रतिशत से अधिक शब्द संस्कृत के वाड़े स तवो ऊ अलग स्वतंत्र भाषा हवे स एह से कि उन्हनी के क्रिया पद भा लिपि अलग-अलग वा। एह से भोजपुरी में तत्सम शब्दन के प्रयोग से हिचके के ना चाहीं। अइसे ना कइला से भोजपुरी प्रतिष्ठित आ धनी ना होई। एकर शब्द-भंडार ना बढ़ी। एह से तत्सम शब्द के प्रयोग कइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उचित आ जरूरी बा। बाकी जवना तत्सम शब्द के बदला भोजपुरी में ओकर तद्भव रूप बा त तद्भवे रूप प्रयोग करे के चाहीं। जवरन तत्सम शब्द के ओही लगले भोजपुरी पहिरावा पेन्हाके तद्भव ना बनावे के चाहीं यानी ओकर असली रूप बिगाड़े के ना चाहीं, जइसे परिसद्, प्रकाशक, रविशंकर, शशिभूषण, विशेषण वगैरह के परिसद, परकासक, रविसंकर, ससिभूसन, बिसेसन वगैरह ना लिखे के चाहीं। शब्दन के रूप गढ़े के टकसाल जनसमूह ह। समय से शब्दन के रूप-परिवर्त्तन होत रहेला। अंग्रेजी के लैण्टर्न ललटेन हो गइल। स्टेशन टेशन भा टीसन बनि गइल। संस्कृत के मातृ आ भ्रातृ--माई आ भाई बनि गइल बा। अब इन्हनी के भोजपुरी तद्भवे रूप लिखे के चाहीं।

खास क के संज्ञा भा दोसर तत्सम शब्द के रूप बिगड़ला प, चिट्ठी के पता आ पुस्तक के प्रचार में कठिनाई होई। तत्सम रूप रहला से दोसर भाषा-भाषी के हमनी के भाषा समुझे आ पकड़े में सहूलियत होई। अइसे भले कवनो नाटक भा उपन्यास के अपढ़ पात्र अपना वार्त्ता में तालव्य 'श' आ मूर्द्धन्य 'ष' के उचारन दन्त 'स' करे त ओह अवस्था में 'शशिभूषण' ससिभूसने लिखाउ।

भोजपुरी के तद्भव रूप में—ऋ, लृ, ऐ, औ, क्ष, त्र, ज्ञ, श, ष आ विसर्ग (:) के उच्चारण ना होखे, जइसे—मैल-मइल, कौवा-कउवा, क्षमा-छमा, ज्ञानी–गियानी, यज्ञ–जगि, शौकीन-सवखीन, पौष-पूस, ऋषि–रिखी हो जाला। एकर विस्तृत विवेचन 'वर्ण-विचार' शीर्षक पाठ में भइल बा।

भोजपुरी में ङ, ञ, के उच्चारण सुरक्षित बा जबकि हिन्दी में इन्हनी के प्रयोग अब बन हो गइल बा। एकरा बदला में पहिला अच्छर प अनुस्वार लगा के काम चल जाता। भोजपुरी में एकर उच्चारन अहथिर बा। जइसे—अङना (अंगना) बेङ (बेंग), निनिञा (निनियां), बढ़िञा (बढ़ियां)। आगे एह प 'वर्ण विचार' नामक पाठ में विचार भइल बा।

भोजपुरी में प्लुत शब्दन के भरमार बा। एकर चिन्ह (ऽ) लगाके लिखल जाता। एह प्रयोग के छोड़ि देबे के चाहीं। एह से बेकार में छपाई आ लिखाई में कठिनाई बढ़ी। भाषा प बोझ पड़ी। बंगला हिन्दी वगैरह में प्लुत उच्चारण कइल जाला। बाकी इन्हनी में एह चिन्ह के प्रयोग नइखे। भाषा के स्वभाव (ढर्रा) के जेकरा ज्ञान होई ऊ खुदे अर्थ निकालि ली। एह से एकर प्रयोग भोजपुरी में कइल ठीक नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्त्ता रूप में इ, उ के प्रयोग भोजपुरी प्रकृति के अनुस्वार ह्रस्व के बा, जइसे—उ कहले ? इ का ह ? हमरा मत से इन्हनी के उच्चारन दीर्घ के नइखे। एही से अपना अब तक के साहित्यिक रचनन आ पुस्तकन में भा जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के शुरू के सात आठ प्रकाशनन में हम हरदम ह्रस्व इ, उ के प्रयोग कइले बानीं। बाकी आजु सैकड़े अंठानबे साहित्यकार आ भोजपुरी के पत्र-पत्रिका में दीर्घ ई, ऊ के प्रयोग हो रहल बा। एह से हमहूँ बहुमत के प्रयोग स्वीकारतानी आ एह व्याकरण के पुस्तक से ह्रस्व इ, उ के प्रयोग कइल बन क देतानीं। भाषा में एकरूपता ले आवे खातिर बहुमत के प्रयोग सही मनाई।

लिंग दू तरह के होला—लौकिक आ व्याकरणिक। अब तक के व्याकरण प काम करेवाला अंग्रेज भा भारतीय विद्वान खाली लौकिक लिंग प विचार क के निकलि गइल रहले हा। व्याकरणिक लिंग यानी अ-प्राणीवाचक शब्दन के लिंग प विचार ना भइल रहल हा। एकर खास कारन रहल हा कि भोजपुरी के कवनो शब्दकोश नइखे जवना से शब्दन के प्रकृति के अध्ययन कइल जा सके आ प्रयोग के सही ढर्रा पकड़ि के स्त्रीलिंग आ पुल्लिंग के नियम निकालल जा सके।

व्याकरण लिखत खा सबसे बड़ समस्या हमरो भीरी अ-प्राणीवाचक शब्दन के लिंग निर्णय के तरीका खोजल रहे। ८-९ मार्च १९७५ ई० के प्रयाग में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधिवेशन में भाग लिहलीं आ भाषा-गोष्ठी में आपन विचार रखलीं आ व्यक्तिगत रूप में अनेक विद्वानन से व्याकरणिक लिंग के संबंध में बातचीत कइलीं बाकी एकर कवनो ओर छोर के थाह ना लागल। केहू कवनो तरीका ना बतला सकल।

मई १९७५ ई० में गाँवें (निमेज, भोजपुर) कुछ दिन छुट्टी में रहलीं। ओहिजे लगभग १५०० शब्द एकाठा कइलीं आ ओकर प्रयोग पढ़ल आ अपढ़ लोगन से करवबलीं। फेनु ओह प नजर दउरल त लिंग-निर्णय के नियम भा तरीका अपने आप झलके लागल। जइसे अकारान्त, आकारान्त आ ह्रस्व भा दीर्घ उकारान्त शब्द भोजपुरी में पुल्लिंग में व्यवहार होत बाड़े स, जइसे उतरहा बहता। हवा चलता। लूक बहता। हर चलता। बालू धीकल बा। रखांतु लागल बा। बड़का बाल्टा फूटल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ-प्राणीवाचक ह्रस्व भा दीर्घ 'ईकारान्त' आ 'इयान्त' शब्द स्त्रीलिंग होलन स, जइसे बुढ़िया आन्ही आवतिया। वड़की वाल्टी चूअतिया। पुरवइया ललकरले विया। खटिया टूटल विया।

एहीतरी भोजपुर जिला के कुछेक गाँव के नाँव नजर आइल, जइसे वड़का राजपुर, छोटका राजपुर। वड़का सिंहनपुरा आ छोटका सिंहनपुरा। वड़की भरवली आ छोटकी भरवली। हजारन वरिस पहिले एह गाँव के नाँव परल होई आ जनसमूह इन्हनी के वड़का आ वड़की, छोटका-छोटकी कहत आ रहल वा। एह से साफ झलकता कि राजपुर आ सिंहनपुरा-अकारान्त आ आकारान्त शब्द वाड़े स। इन्हनी के पुल्लिग में वोले के ढर्रा वा। एही से इन्हनी के सङे वड़का आ छोटका पुल्लिग विशेषण लागल वा। भरवली 'ई' दीर्घान्त वा जवना के स्त्रीलिंग में वोले के रपटा वा। इहे भाषा के सोभाव वा। एही से उन्हनी के सङे वड़की आ छोटकी स्त्रीलिंग विशेषण लागल वा। अव तक एह प केहू के ध्यान ना गइल रहल हा। एकर अपवादो वा जेकर 'लिंग' शीर्षक पाठ में चर्चा वा।

हिन्दी के लिंग के मोताविक भोजपुरी में अ-प्राणीवाचक शब्दन के लिंग नइखे। हिन्दी, फारसी, अरवी के ढेर शब्द जवन हिन्दी में स्त्रीलिंग में प्रयोग होलन स ऊ भोजपुरी में पुल्लिग में प्रयोग होत वाड़े स।

हिन्दी में स्त्रीलिंग-पुल्लिग के पहचान सर्वनामो से होला, जइसे मेरा लड़का आ मेरी लड़की। वाकी भोजपुरी में लिंग के प्रभाव सर्वनाम प ना पड़े, जइसे हमार लइका आ हमार लइकी।

हिन्दी माध्यम से शिक्षा भइला के कारन एकर प्रभाव पड़ल स्वाभाविक वा। कतने भोजपुरी के साहित्यकार हिन्दी लेखा 'भी' के प्रयोग भोजपुरी में करत वाड़े जवन ना करे के चाहीं। संज्ञा भा विशेषण शब्दन के अन्त में 'ओ' लगा देला से 'भी' के मतलव निकलि जाला, जइसे ललनो वेमार वाड़े आ उनुकर लइको। वइरि मीठो विया आ कुछ-कुछ खटो। सर्वनाम में— उत्तम पुरुष आ मध्यम पुरुष में 'हूँ' आ अन्य पुरुष में 'ओ' लगवला से 'भी' के अरथ निकलि जाला, जइसे हमहूँ भोजन करवि। तूँहूँ पढ़। उहो पढ़सु। क्रिया में 'ओ' लागेला, जइसे गाइ चरतो विया आ चलतो विया। ऊ हँसतो वाड़े आ रोवतो वाड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में 'ही' (हीं) के प्रयोग सुरक्षित बा, जइसे—क्रिया में—हमरा जाही के पड़ी। तहरा आवहीं के पड़ी। ओकरा खाहीं के पड़ी। संज्ञा आ सर्वनाम शब्दन में—'ही' ए में बदलि जाला, जइसे—ई रामे के किताब ह। ऊ तोहरे कलम ह। ऊ ओकरे गाइ ह।

भोजपुरी में संबंध कारक के विभक्ति (पुंल्लिग आ स्त्रीलिग दूनो खातिर) 'के' के प्रयोग का जगहा 'का' के प्रयोग तब होला जब 'के' का आगा कवनो विभक्ति युक्त शब्द रहे, जइसे राम का खेत में सरिसो फुलाइल बा। मोहन का हाथ में कलम बा। चिमनी का धुँआ से आसमान करिआ हो गइल। बाकी शहर के रहनिहार आ हिन्दी माध्यम से शिक्षा पवनिहार अब 'का' के प्रयोग छोड़ि रहल बाड़े। ओह लोग का हाथे सगरे 'के' के प्रयोग हो रहल बा। समय पा के एकर निर्णय होई कि संबंध बोधक विभक्ति के एके रूप 'के' रही कि 'का' भी चली।

एह पुस्तक के लिखत खा बहुत से साहित्यिक शुभचिंतक मित्र हिदायत कइले कि व्याकरण मौलिक होखे के चाहीं। ऊ भइल बा जहाँ सम्भव बा। बाकी व्याकरण के नियम आ सूत्र के सभ जगे एकदम उलटि के मौलिक नइखे बनावल जा सकत। ऊ त बीजगणित के सूत्र लेखा चिर सत्य बा। मौलिकता हर जगे सम्भव ना होखे। एकरा चक्कर में केहू गोड़ से चलल छोड़ि के मूड़ी के बले चले त मौलिकता ना कहाई बलुक अउर कुछ कहाई। गोड़ के जवन स्वाभाविक धर्म बा ओकरा उल्टा चलल मौलिकता ना होई, भले चाल में नयापन, चमत्कार आ करामात एह दिशा में आई। भोजपुरी में जवन व्याकरण के सूत्र आ नियम संस्कृत, हिन्दी आ दोसर भाषा निअन बा ओकरा के बदलल नइखे जा सकत। हर पाठ में ओह खास पाठ के सामग्री आ ओकरा विषय प चिंतन आ मनन भइल बा। लोक-व्यवहार में ओकर प्रयोग जोहाइल बा आ बटोराइल बा। जहाँ बारीकी बा ओकर भरसक चर्चा कइल गइल बा।

भोजपुरी पद्य में अब ढेर एकरूपता आ गइल बा। बाकी गद्य में अभी नइखे। उत्तरी, पश्चिमी, दक्षिणी आ मधेसी भोजपुरी के क्रियापद में फरक बा। ई दूरी का चलते बा।कहलो जाला—चार कोस प पानी बदले आ आठ कोस प बानी। गद्य साहित्य में एकरूपता समय से आई, जब खूब लिखाई तब अलग-अलग रूप के समन्वय अपने-आप हो जाई, जइसे पश्चिमी आ पूर्वी हिन्दी के बोले वाला रूप में अन्तर रहलो प साहित्यिक रूप एक हो गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह पुस्तक के लिखे में बढ़ावा, सराहना आ समय-समय प उचित राय मिलल वा—आदरणीय प्रो० मेजर चन्द्रभूषण सिन्हा, पं० गणेश चौबे, सर्वश्री सत्यनारायण लाल जी, श्री हरिशंकर वर्मा, पाण्डेय कपिल वगैरह आ प्रियवर परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी', दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश', कन्हैया सिंह 'सदय', जय बहादुर सिंह, गंगा प्रसाद 'अरुण', मनोकामना सिंह, डी० एस० मूर्ति, भैरवनाथ पाण्डेय, रामायण सिंह वगैरह से। एह विद्वानन के हम दिल से आभार मानत बानीं।

'काल' आ 'लिंग' के प्रयोग में सहायक रहल बानीं—सर्व श्री रामकृपाल ओझा, रामयज्ञ शर्मा, ललन गोसाईं, रामाधार ओझा 'तुच्छ', सदानंद उपाध्याय के० एन० पाण्डे, सुदामा सिंह वगैरहं आ प्रियवर रामचन्द्रजी, सुरेश चन्द्र ओझा, सुखरामजी, प्रभुदयाल जी, मूटन राम, कमला प्रसाद जी वगैरह। यथा उचित एह लोगन के प्रति कृतज्ञ वानी आ दिल से धन्यवाद देत वानी।

घर में अगर प्रियवर जगदानन्द ठाकुर, अभय कुमार आ अजय कुमार के त्याग, सहायता आ सेवा ना मिलल रहित त ई जगि आसानी से पूरा ना होखित। एह बच्चन के रोवाँ-रोवाँ आसिरवाद देता। प्रेम आ निष्ठा से एह पुस्तक के साजे-सँवारे में जवन सहयोग आ अपनापन आदरनीय भाई श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी से मिलल आ जवन मरमी सूझ-बूझ, सवख-साध आ जिम्मेवारी के निरवाह 'जयदुर्गा प्रेस' के मालिक प्रियवर श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह (लछुमनजी) में पवलीं ओकर वखान कइसे करीं, बुझात नइखे।

जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के ई अठरहवाँ पुस्तक विशुद्ध व्याकरण के कमी दूर करी, साहित्यकार आ विद्यार्थी खातिर उपयोगी होई, अव केहू के सामने एकरा के वेसक राखल जा सकी आ कहत संकोच ना होखी कि हमनी के मातृ भाषा भोजपुरी के व्याकरण हइहे वा।

जमशेदपुर —रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

२८ वां स्वतंत्रता दिवस

१५ अगस्त १९७५ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

विषय ... पृष्ठ-संख्या

१. व्याकरण आ ओकर विभाग १७

१. व्याकरण के परिभाषा

२. भाषा के खंड—(क) वर्णविचार (ख) शब्दविचार (ग) वाक्यविचार

२. भाषा, वाक्य, शब्द आ अक्षर १८–१९

३. वर्ण विचार २०–२७

वर्ण के परिभाषा

लिपि

वर्णमाला—(क) स्वर (ख) व्यंजन

स्वर के स्थिति

स्वर के भेद—ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत

स्वर के मात्रा के रूप

स्वर के उच्चारन-स्थान

अनुनासिक स्वर

संयुक्त स्वर

व्यंजन के स्थिति

अनुस्वार आ चन्द्रबिन्दु

व्यंजन के उच्चारण-स्थान—महाप्राण आ उष्म, अल्पप्राण

४. शब्द-विचार २८–३०

शब्द के परिभाषा

शब्द के भेद

उत्पत्ति के आधार प—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज

व्युत्पत्ति के आधार प—रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द

रूप के आधार प—विकारी शब्द आ अविकारी शब्द

विकारी शब्द के भेद

अविकारी शब्द के भेद

५. शब्द-रचना ३१–३९

उपसर्ग, प्रत्यय, समास, पुनरुक्ति, अनुकरणात्मक ध्वनि, कृदन्त, तद्धित

६. संधि ४०–४४

संधि के परिभाषा

संधि के भेद—स्वर संधि—व्यंजन संधि—विसर्ग संधि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय	पृष्ठ संख्या
७. संज्ञा	४५–४७
परिभाषा	
संज्ञा के भेद—व्यक्तिवाचक—जातिवाचक— समूहवाचक—द्रव्यवाचक—भाववाचक	
संज्ञा के रूप—भाववाचक संज्ञा बनावे के नियम	
८. सर्वनाम	४८–५६
परिभाषा	
सर्वनाम के भेद—पुरुषवाचक–निश्चयवाचक–अनिश्चयवाचक–निजवाचक–संबंधवाचक–प्रश्नवाचक	
आदरसूचक सर्वनाम—	
यौगिक भा मिश्र सार्वनामिक विशेषण-रीतिवाचक भा गुणववाचक-परिमाण भा संख्यावाचक—सार्वनामिक क्रिया विशेषण	
९. विशेषण	५७–६१
परिभाषा	
विशेषण के अवस्था—मूलावस्था भा सामान्यावस्था—उत्तरावस्था—उत्तमावस्था	
विशेषण के रूप	
विशेषण के भेद—गुणवाचक—संख्यावाचक—परिमाणवाचक—सार्वनामिक विशेषण—व्यक्तिवाचक विशेषण	
१०. वचन	६२–६४
परिभाषा	
भेद—एकवचन—बहुवचन	
एकवचन से बहुवचन बनावे के कुछ नियम	
११. लिंग	६५–७५
परिभाषा	
लिंग के भेद—पुल्लिग—स्त्रीलिंग	
प्राणीवाचक शब्दन के लिंग निर्णय के तरीका	
प्राणीवाचक पुल्लिग शब्द के स्त्रीलिंग बनावे के तरीका	
अप्राणीवाचक शब्दन के लिंग निर्णय के तरीका	
प्रयोग के अनुसार अप्राणीवाचक शब्द के पहचान—पुल्लिग—स्त्रीलिंग	
लिंग-कोश	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय		पृष्ठ संख्या
१२.	क्रिया	७६–७९
	परिभाषा	
	धातु	
	क्रिया के भेद—सकर्मक—अकर्मक—उभय विधि क्रिया—	
	व्युत्पत्ति से धातु भेद—मूल धातु—यौगिक धातु—यौगिक धातु के प्रकार—प्रेरणार्थक—नाम धातु—संयुक्त धातु—अनुकरणात्मक धातु	
	सहायक क्रिया	
१३.	वाच्य	८०–८१
	परिभाषा	
	वाच्य के भेद—कर्तृवाच्य—कर्मवाच्य—भाववाच्य	
१४.	अविकारी शब्द : अव्यय	८२–८६
	अविकारी शब्द के परिभाषा	
	अव्यय के भेद—समुच्चयवोधक—विस्मयादिवोधक—संवंधवोधक	
१५.	अविकारी शब्द : क्रियाविशेषण	८७–९०
	क्रियाविशेषण के परिभाषा	
	क्रियाविशेषण के भेद—रूप के आधार से—प्रयोग के आधार से—अर्थ के आधार से	
१६.	काल	९१–११६
	काल के परिभाषा	
	काल के भेद—भूतकाल—वर्त्तमान काल—भविष्यत काल	
	क्रिया के काल के रूप—काल के रूपावली—भोजपुर—मिर्जापुर—वाराणसी—बस्ती—आजमगढ़	
१७.	कारक	११७–११८
	परिभाषा	
	कारक के भेद—कर्त्ता—कर्म—करण—सम्प्रदान—अपादान—संवंध—अधिकरण—सम्वोधन	
१८.	समास	११९–१२४
	परिभाषा	
	विग्रह	
	समास के भेद—अव्ययीभाव—तत्पुरुष—द्वन्द्व—वहुव्रीहि—कर्मधारय—द्विगु—नञ	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय पृष्ठ संख्या

१९. वाक्य विचार १२५–१३६

वाक्य के परिभाषा

वाक्य के अंग—उद्देश्य—विधेय—उद्देश्य के विस्तार—विधेय के विस्तार—शब्द आ पद

वाक्य के भेद—बनावट के अनुसार, साधारन—मिश्र—संयुक्त—मुख्य उपवाक्य—आश्रित उपवाक्य के भेद—संज्ञा उपवाक्य—विशेषण उपवाक्य—क्रिया उपवाक्य

अर्थ के अनुसार—विधिसूचक—निषेधसूचक—प्रश्नसूचक—आज्ञासूचक—इच्छासूचक—संदेहसूचक—संकेतसूचक—विस्मयसूचक

क्रिया के अनुसार—कर्तृवाच्य—कर्मवाच्य—भाववाच्य

वाक्य विश्लेषण—साधारन वाक्य के विश्लेषण—मिश्र वाक्य के विश्लेषण—मिश्र उपवाक्य के विश्लेषण—संयुक्त वाक्य के विश्लेषण

वाक्य प्रसारण

वाक्य संक्षेपण

वाक्य परिवर्त्तन

२०. विराम चिह्न १३७–१३९

परिभाषा

मुख्य विराम चिह्न—पूर्ण विराम—अल्प विराम—अर्द्ध-विराम—प्रश्न चिह्न—विस्मयादिबोधक चिह्न—उद्धरण चिह्न—कोष्ठक चिह्न—संयोजकचिह्न—विवरण चिह्न—लोप चिह्न

२१. छंद विचार १४०–४५

छंद के परिभाषा

छंद के भेद—मात्रिक, वर्णिक

छंद के अंग—चरण-मात्रा भा वर्ण—संख्या-क्रम-गति-यति आ तुक

गुण—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण सगण। लघु-गुरु स्वर

मात्रिक छंद—चौपाई—दोहा—सोरठा—आल्हा—कुण्डलिया

वर्णिक छंद—त्रोटक—द्रुत विलंबित—कवित्त—सवैया।

परिशिष्ट १४६–१४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ १

व्याकरण आ ओकर विभाग

१. कवनो भाषा के अक्षर, शब्द आ वाक्य के रूप आ ओकरा अर्थ के जानकारी हासिल करे खातिर ओह भाषा के व्याकरण पढ़े के चाहीं। व्याकरण ऊ विद्या ह जवना से भाषा यानी अक्षर, शब्द आ वाक्य के सही-सही लिखे आ बोले के नियम सीखल जाला। हर एक भाषा के व्याकरण होला आ ओह में ओह भाषा के सही जानकारी के नियम रहेला।

२. भाषा के खंड—अक्षर, शब्द आ वाक्य के अलग-अलग विवेचन करे खातिर व्याकरण के खास तीन गो विभाग कइल गइल बा—(क) वर्ण विचार (ख) शब्द विचार (ग) वाक्य विचार।

(क) वर्ण विचार—वर्ण के परिभाषा, भेद, उच्चारण-स्थान आ मिले वगैरह के तरीका के अध्ययन वर्ण विचार कहाला।

(ख) शब्द विचार—शब्दन के भेद, रूपान्तर आ उन्हनी के रचना के नियम वगैरह के अध्ययन शब्द विचार कहाला।

(ग) वाक्य विचार—वाक्य, वाक्य के भेद, वाक्य बनावे के नियम वगैरह के अध्ययन वाक्य विचार कहाला।

एह तीनो विभाग प आगे विस्तार से विवेचन कइल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ २

भाषा, वाक्य, शब्द आ अक्षर

१. मनई बोलता जीव ह। ऊ आपन विचार दोसरा का सामने बोलि के भा लिखि के परगट करेला। ऊ दोसरा के विचार सुनवो करेला। एह विचारन के साफ-साफ परगट करे के साधन भाषा ह।

कुछु विचार इशारन से जाहिर कइल जा सकत वा वाकी ऊ ढेर अधूरा होला भा साफ परगट ना होखे। भाषा अनेक पूरा आ साफ विचारन के मेल से वनेला। हर एक पूरा विचार के **वाक्य** आ एकरा (वाक्य के) हर खण्ड के **शब्द** कहल जाला। अक्षर (वर्ण) के मिलला से शब्द वनेला।

२. वाक्य में कम-से-कम दू शब्द जरूरे रहे के चाहीं ना त ऊ पूरा विचार परगट ना क सके, जइसे—विजय जाई; तूं आव; ऊ जइहें। ई सभ दू-दू शव्दन के वाक्य वाड़े स। इन्हनी से पूरा विचार परगट होत वा। जहवाँ एके शव्द से पूरा विचार परगट भइल मालूम पड़े ओहिजा दोसर शव्द छिपल रहेला, जइसे—आसिरवाद = आसिरवाद वा; चल = तूं चल।

३. 'ल' आ 'द' क्रिया रूप में प्रयोग होला वाकी एकरो में कवनो वस्तु के भाव छिपल वा। एह से इन्हनियों के वाक्य मानल जा सकेला वाकी एकरा प्रसंग में पहिले कुछु वात होखे के चाहीं तवे पूरा अर्थ परगट होई।

४. आपन विचार परगट करत खानी हमनी का कवनो वात दोसरा के सुनाईलेजा। अतने ना, आपन इच्छा भा अचरजो परगट करीलेजा। एहतरे हमनी के विचार कइएक रूप धारन करेला। एह से वाक्य के कइएक भेद होला। अर्थ के अनुसार वाक्य के पाँच भेद होला।

१. सामान्य वाक्य के जरिये हमनी का दोसरा के स्वीकृति (आपन मत) भा निषेध (मनाही) के सूचना देलीं जा, जइसे—वइर मीठ वा। घाम तीखा वा। काल्हु हमार भइया गाँवें जाइवि। हम एहिजा ना रहलीं हाँ। घरे केहू नइखे।

२. प्रश्नसूचक वाक्य से सवाल कइल जाला, जइसे—जयशंकर कहवाँ वाड़े? का तूं हमरा जवरे चलव? विजय कव गइल हा?

३. आज्ञासूचक वाक्य से आज्ञा (हुकुम) भा अनुमति (राय) के भाव बोध होला, जइसे—तूं जा। चुप रह। तूं वइठ। अव मत खा। तूं पढ़।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. प्रार्थनासूचक वाक्य से प्रार्थना (निहोरा) के भाव बोध होला, जइसे—हमरे के दे दीं। कृपा कके चलल जाय। हमरा के एहिजे रहे दिआउ।

५. इच्छा बोधक वाक्य से इच्छा, आसिरवाद भा सराप के बोध होला, जइसे—हे भगवान ! हमार दुख हर ! भगवान तहरा के कायम राखसु ! तहरा के काली माई उठा लेसु !

६. विस्मयादिबोधक वाक्य सें विस्मय (अचरज, अचम्भा) खुशी, कलेस वगैरह के भाव जाहिर होला, जइसे—वाह ! ई लइका कतना सुन्नर बा ! आरे इयार कतना दिन प मिलल बाड़ ! आजु कइ बरिस प दूध भेंटाइल बा ! आहि दादा ! ई का भइल ! बेटी के बिदाई लहुरी मरन ह !

३. वाक्य के सार्थक खण्ड कइला से शब्द मिलेला। अगर शब्दे के खण्ड कइल जाय त एगो भा अनेक अक्षर (वर्ण) मिली। 'जा' में ज+आ, मोहन में म+ओ+ह+न मिलल बा। हर एक छोट-से-छोट खण्ड अक्षर भा वर्ण कहाला। एगो भा अधिक अक्षर (वर्ण) के मेल से शब्द बनेला, जइसे ना, ल, द, घर बतुस वगैरह। एह तरह से भाषा वाक्य से, वाक्य शब्द से आ शब्द अक्षर (वर्ण) से बनावल जाला।

कवनो भाषा के अध्ययन करे खातिर ओकरा शब्द, वाक्य के रूप आ गठन के जानकारी हासिल कइल जाला।

टिप्पणी—अक्षरे के वर्ण भा ध्वनि कहल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ण विचार

वर्ण के परिभाषा—वर्ण के अक्षरो कहल जाला। केहू-केहू वर्ण के ध्वनियो कहेला। वर्ण ऊ मूल ध्वनि ह जवना के टुकड़ा ना कइल जा सके; जइसे—अ, इ, उ, क्, च्, त्, ट्, र्, प् वगैरह।

लिपि—ध्वनि के हर एक इकाई के एगो लिखल संकेत दीहल जाला। एह संकेत के सहारे लिखल रूप के लिपि कहल जाला।

ध्वनि के लिपि संकेत मिलले प ऊ भाषा हो सकेला। अलिखित रहला प ऊ बोली कहाला। भोजपुरी के उच्चारन होखे वाली ध्वनि नागरी लिपि संकेत में बा। पहिले ई कैथी लिपि[1] में लिखल जात रहे।

वर्णमाला—मूल ध्वनि भा वर्ण के लिखल संकेत चिन्हन के समूह के वर्णमाला कहल जाला।

भोजपुरी में वर्णमाला के नीचे लिखल वर्ण बा :—

(क) स्वर—अ, आ, इ, ई; उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ (कुल ग्यारह)।

स्वर के स्थिति स्वतन्त्र होला। एकरा उच्चारन में कवनो दूसर वर्ण के सहायता के जरूरत ना होखे। एह से स्वर ओह वर्ण के कहल जाला जेकर उच्चारन स्वतन्त्र रूप से होला। एकरा के ऊपर के उदाहरन में देखल जा सकत बा।

(ख) व्यंजन—

कवर्ग—क, ख, ग, घ, ङ।

चवर्ग—च, छ, ज, झ, ञ।

टवर्ग—ट, ठ, ड, ढ, ण।

तवर्ग—त, थ, द, ध, न।

---

१. टिप्पणी—एगो प्राचीन लिपि जवन नागरी लिपि से बहुत कुछ मिले जुलेले। एह में अक्षरन प माथा ना भरल जाय। बिहार राज्य के देहातन में कागजपत्तर में पावल जाले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवर्ग—प, फ, ब, भ, म ।
अन्तस्थ—य, र, ल, व ।
उष्म—श, ष, स, ह ।
अनुस्वार— ं
विसर्ग— :

व्यंजन वर्ण स्वतन्त्र रूप से नइखे बोलल जा सकत। एकरा उच्चारन खातिर स्वर के सहायता लेवे के पड़ेला। एह से व्यंजन ओकरा के कहल जाला जेकर उच्चारन स्वर के सहायता से होखे। जइसे उपर लिखल व्यंजन के उदाहरन में देखल जा सकत वा। अकेले क्, च्, त्, प् वगैरह के उच्चारन सम्भव नइखे। 'अ' के सहायता मिलले प इन्हनी के उच्चारन क, च त, प हो सकेला। क्+अ=क, च्+अ=च वगैरह। शुद्ध व्यंजन लिखे खातिर नीचे हल के चिन्ह (्) लगावल जाला। कुछ लोग 'ड़' आ 'ढ़' के अलग से गनेला काहें कि 'डमरू' आ 'फेंड़' के 'ड' आ 'ड़' के उच्चारन में फरक वा। एही तरी 'ढकन' आ 'वाढ़न' में 'ढ' आ 'ढ़' के उच्चारन में फरक वा।

क्ष, त्र, ज्ञ के वर्णमाला में स्थान दीहल वेकार वा काहें कि ई संयुक्ताक्षर हवे स। इन्हनी के उच्चारन भोजपुरी में नइखे। क्+ष=क्ष। त्+र=त्र। ज्+ञ=ज्ञ। क्ष के उच्चारन छ हो जाला, जइसे—क्षत्री=छत्री, क्षमा= छमा, क्षय=छय वगैरह।

'त्र' के उच्चारन कतहूं-कतहूं सुरक्षित वा, जइसे—त्राहि हे देवता पितर! एह में पहिला 'त्र' में उच्चारन त ठीक वा बाकी दोसर में 'पित्र' 'पितर' हो गइल वा। अइसे 'त्र' के उच्चारन 'तर' लेखा एकदम ठेठ भोजपुरी में हो जाला जइसे "त्रिलोकी नाथ के कथा' "तिरलोकी नाथ के कथा" कहाला। "त्रिपाठीजी" "तिरपाठीजी" हो जाले।

'ज्ञ' के उच्चारन भोजपुरी में 'गि' हो गइल वा। जइसे निमेज (भोजपुर) गाँव में 'गियानी' (ज्ञानी) के शिवाला वा। तहार 'गिआन' (ज्ञान) मरा गइल वा। पाँड़ेपुर में जगि (यज्ञ) हो रहलवा।

स्वर के स्थिति

भोजपुरी में मूल स्वर तीने गो वा—अ, इ, उ। एह में ऋ आ लृ स्वर स्वर के उच्चारन ना होखे। ऋ के उच्चारण 'रि' होला, जइसे—'ऋण' के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिन, 'कृपा' के किरिपा, 'ऋषि' के रिखी भा रिसी होला। 'ऋ' के भोजपुरी अपना सोभाव के अनुसार बना लेले बिया।

'लृ' के उच्चारन त हिन्दियो में ना होखे आ भोजपुरियो में ना होला। संस्कृत में कतहूँ-कतहूँ पावल जाला।

स्वर के भेद

स्वर के तीन गो भेद बा—ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत।

स्वर के साधारन उच्चारन के ह्रस्व स्वर कहल जाला, जइसे—अचार, अनार, अकिल, इनार, इलाज, इनरदली, उधार, उजबुक, उवार वगैरह। एह तरह से अ, इ, उ ह्रस्व स्वर भइले स।

ह्रस्व स्वर के लम्बा उच्चारन के दीर्घ स्वर कहल जाला। ई उच्चारन खींचि के कइल जाला। अ, इ, उ के दीर्घ (लम्बा) उच्चारन आ, ई, ऊ होला। एह से आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर हवे स, जइसे—आखत, आम, आन, आठ, ईसर, ईंगुर, ईद, ऊखि, ऊन, वगैरह। प्लुत—दीर्घ से दीर्घतम उच्चारण के प्लुत कहल जाला। प्लुत उच्चारन बहुत खींचि के कइल जाला। भोजपुरी में प्लुत उच्चारनन के भरमार बा, जइसे—हई लेवऽ। कुछ बोलऽ। कुछ दऽ। राम होऽऽऽ……।

एह में व, ल, द, हो के उच्चारन में प्लुतता बा। इन्हनी में अ के उच्चारन दीर्घतम होत बा। 'हो' में 'ओ' के उच्चारन दीर्घतम बा। प्लुत उच्चारन से वाक्य के अर्थ में भेद होखे लागेला, जइसे—'रहव' के अर्थ होई स्वीकरोक्ति यानी रहे के मन करत बा = ठहरबि। बाकी 'रहवऽ' के अर्थ होई प्रश्नवाचक यानी 'का रहवऽ? भा का ठहरवऽ?

भोजपुरी में प्लुत के उच्चारन के संकेत चिह्न मात्राबोधक 'ऽ' कुछु लोग लिखत बा। बाकी एकरा के लिखला से बेकार में छपाई आ लिखाई में कठिनाई बढ़ी। एह से एकर प्रयोग ना करे के चाहीं। संस्कृत, हिन्दी, बँगला वगैरह में प्लुत उच्चारन कइल जाला बाकी ओह में कवनो एकर लिपि संकेत नइखे। भाषा के प्रकृति (सोभाव) के जेकरा गिआन होई ऊ खुदे अर्थ निकालि ली। अनजान भा अनाड़ी खातिर भाषा ना ह।

ए, ऐ, ओ, औ

ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर हवे स, जइसे अ-इ के मेल से 'ए' अ-ए के मेल से 'ऐ', अ-उ के मेल से 'ओ' आ 'अ' ओ के मेल से 'औ' बनल बा। दू स्वर के मेल से एगो नया तीसर बनि गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में 'ऐ' आ 'औ' के उच्चारन ना होखे। भाषा के प्रकृति के अनुसार एह वर्ण के उच्चारन सम्भव नइखे, जइसे—

हिन्दी	भोजपुरी	उच्चारन कइसन होता	
कैलाश	कएलास	'ऐ'—अए	जइसन
ऐव	अएव	" अए	"
भैया	भइया	" अइ	"
मैल	मइल	" अइ	"
सैंया	सँइयाँ	" अइ	"
शौकीन	सवखीन	'औ'—अव	"
फुलौरा	फुलवरा	" अव	"
धौरा	धवरा	" अव	"
भौंरा	भँवरा	" अव	"
कौन	कवन	" अव	"
कौवा	कउवा	" अउ	"
मौत	मउअति	" अउअ	"
गौन	गवन	" अव	"

ऊपर के उदाहरन से साफ जाहिर वा कि भोजपुरी में 'ऐ' के उच्चारन 'अ इ' हो जाता आ 'औ' के उच्चारन 'अ व', 'अ उ' आ 'अ उ अ' हो जाता।

टिप्पणी—साहित्यिक भोजपुरी में तत्सम शब्द भा व्यक्तिवाचक संज्ञा के लिखे में 'ऐ' आ 'औ' के प्रयोग करे चाहीं। एही तरी 'क्ष', 'त्र' आ 'ज्ञ' के प्रयोग कइल उचित वा। जवरन भोजपुरिअवला से भाषा के सौंदर्य नष्ट हो जाई। अइसे कइला से भोजपुरी धनी ना वनी। हँ, जवन तत्सम शब्द कालक्रम से घीसि के भोजपुरी के प्रकृति के अनुसार वनि गइल वाड़े स ओइसन भोजपुरी शब्दन के भोजपुरी रूप लिखे के चाहीं।

स्वर के मात्रा के रूप

ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ

जव स्वर के अकेले प्रयोग होला त ओकर मूल रूप (अ, आ, इ, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) लिखल जाला आ जव व्यंजन से मिला के प्रयोग होला त स्वर के 'मात्रा' के रूप प्रयोग में आवेला, जइसे 'क' व्यंजन में स्वर के मात्रा एह तरह से लगावल जाई—क, का (क्+ा), कि (क्+ि) की (क्+ी),

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कु (क+ु), कू (क्+ू), कृ (क्+ृ). के (क्+े), कै (क्+ै), (क्+ो), कौ (क्+ौ) ।

'र' व्यंजन में 'उ' आ 'ऊ' के मात्रा नीचे लिखल तरह से लगावल जाला—

र्+उ=रु

र्+ऊ=रू

स्वर के उच्चारन स्थान

कंठ	तालू	ओठ	कंठ-तालू	कंठ-ओठ
अ	इ	उ	ए	ओ
आ	ई	ऊ	ऐ	औ

अनुनासिक स्वर

चन्द्रविन्दु आ अनुस्वार लगा के भोजपुरी में अनुनासिक स्वर बनेला । सभ स्वरन में अनुस्वार लागेला, जइसे—

अँ—डँस, हँस, फँस वगैरह ।

अं—घंटी, अंडा, पंछी, रंथी वगैरह ।

आँ—गाँती, आँच, खाँच, दाँत वगैरह ।

ि—वाहि वगैरह ।

इं—इंकड़ी, सिंकरी वगैरह ।

ईं—ईंटा, सींकि, मेहीं वगैरह ।

उँ—खुँखुड़ी, भुँजिया वगैरह ।

ऊँ—ऊँट, बूँट, खूँख, टूँड़, छूँछी वगैरह ।

एं—वेंट, जेंवन वगैरह ।

ओं—खोंप, खोंढ़, गोंड़, डोंड़, सोंठि वगैरह ।

सयुक्त स्वर

भोजपुरी में संयुक्त स्वर के ढेर शब्द पावल जाला; जइसे—

अइ—भइल, कइल, धइल, गइल वगैरह ।

अई- चिरई, दिअरी, मिरजई वगैरह ।

अउ – खउरा, हंउरा, दउरा, लहुरा, वहुरा वगैरह ।

अए—वएल, छएल वगैरह ।

आई— ओकाई, रोआई, दवाई, वोआई वगैरह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आउ—चाउर, बाउर वगैरह ।

आऊ—नाऊ, खाऊ, कमाऊ वगैरह ।

आए - खाए, नहाए वगैरह ।

इअ--पिअल ।

इआ—करिआ, सतपुतिआ ।

इउ --जिउतिआ ।

इए—एकलगिए ।

इओ—दहिओ, दइओ, भइओ ।

ईआ—दीआ ।

उआ—उरुआ, महुआ, बन्हुआ ।

उइ--दुइ ।

उई—सुई ।

उए—बबुए, कउए ।

एआ—देआद, बेआज ।

एइ—खेइ ।

एउ – देउकुरि ।

एओ—देओतो ।

एउ—नेउर ।

ओअ—धोअन ।

ओइ—पोइ, कोइर ।

ओए—धोए ।

ओअ—धोअ, रोअ, बोअ ।

ओआ—धोआ, कोआ ।

ओई--धोई, लोई, तोई ।

ओउ · बोउ ।

एह संयुक्त स्वरन के अनुनासिको रूप मिलेला । एकरा अलावा तीन स्वर के संयुक्त रूप मिलेला; जइसे--

अउअ—मउअत ।

अउआ--कउआ ।

इआउ—ननिआउर, अजिआउर ।

उआई—अगुआई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्हनियों के अनुनासिक रूप पावल जाला; जइसे जेंउआँ, भुइँआँ वगैरह।

व्यंजन के स्थिति

अनुस्वार आ विसर्ग के व्यंजन माने के चाहीं काहें कि दूनो के उच्चारन में स्वर के सहायता लेवे के पड़ेला; जइसे कं, कः।

अनुस्वार (ं) के उच्चारन भा प्रयोग त भोजपुरी में सुरक्षित वा वाकी विसर्ग (:) के प्रयोग नइखे। हिन्दी के प्रभाव के कारन भले केहू छी: छी: लिखि देइ वाकी ऊ भोजपुरी में 'छी छी लाज नइखे लागत ?'—कहाई।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़ वगैरह अरवी-फारसी के शब्दन के उच्चारन भोजपुरी में नइखे। एहसे एकरा के भोजपुरी वर्ण में ठूसे के ना चाहीं। कागज़, ज़रूरत वगैरह शब्दन के कागज (कागद), जरूरत वगैरहे लिखे के चाहीं।

भोजपुरी में 'ष' आ 'ण' के उच्चारन ना होखे। 'ष' के उच्चारन 'ख' निअन आ 'ण' के उच्चारन 'न' निअन होला; जइसे—पखान (पाषाण), वरखा (वर्षा), भाखा (भाषा), रिखी (ऋषी), गनेश (गणेश), प्रनाम (प्रणाम), उच्चारन (उच्चारण), वान (वाण) वगैरह।

कतहूँ-कतहूँ ष' के उच्चारन 'स' लेखा होला; जइसे पुरुष के पुरुस (पुरुख), पौष के पूस, धनुष के धनुस, शेष के सेस वगैरह।

'श' के प्रयोग भा उच्चारन भोजपुरी में ना होखे। 'श' के उच्चारन भा लिखित प्रयोग 'स' के होला; जइसे शास्त्रीजी—सासतीरी जी, शास्त्र के सास्तर, विश्वनाथ के विसनाथ, महेश के महेस वगैरह।

वाकी व्यक्तिवाचक संज्ञा (शशि, शंकर वगैरह) भा तत्सम शब्द (शब्द, प्रकाशक, परिषद्, शुद्ध, शोला, शरवत वगैरह) भा कवनो दोसर भाषा के शब्द के साहित्यिक भोजपुरी में लिखत खानी ओकर शुद्ध रूप लिखे के चाहीं। वहुत से विद्वान अइसन प्रयोग साहित्यिक भोजपुरी में कर रहल वाड़े। तवे एह भाषा के परिनिष्ठित रूप आई आ दोसर भाषा के ई वरावरी कर सकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुस्वार आ चन्द्र विन्दु

हिन्दी में ङ, ञ, ण, न, म के प्रयोग कम भइल जाता। एकरा वदला में पहिला अक्षर में अनुस्वार लगा के काम चल जाता। भोजपुरी में एकर उच्चारन अहथिर वा। एह से एकर प्रयोग कइल ठीक वा; जइसे अङना (अंगना), वेङ (वेंग), रङ (रंग), भुइञा, भाङ (भाँग), कङना (कँगना), निनिञा, काइञा, वढ़िञा, कान (कर्ण), सोना (स्वर्ण), व्राभन (व्राह्मण) वगैरह। भोजपुरी में ण के उच्चारन न हो गइल वा।

जहँवा नाक के हलुक मदत से उच्चारन कइल जाय ओहिजा चन्द्रविन्दु (ँ) के प्रयोग होला, जइसे डँस, खाँच, छूँछ वगैरह।

हिन्दी में 'ञ' के वदला में य लिखि के ओह प अनुस्वार भा चन्द्र विन्दु दीहल जाला; जइसे ऊपर के उदाहरन के भुइयाँ, वढ़ियाँ, काइयाँ वगैरह।

व्यंजन के उच्चारन स्थान

कवर्ग के व्यंजन के उच्चारन स्थान कंठ, चवर्ग के तालू, टवर्ग के मूर्धा, तवर्ग के दाँत आ पवर्ग के ओठ के सहायता से होला।

टिप्पणी—क वर्ग से लेके प वर्ग तक के अंतिम वर्ण अनुनासिक वर्ग कहाला।

कुछ अइसन व्यंजन वाड़ेस जवना के उच्चारन स्वर आ व्यंजन के वीच में होला। एकरा के अन्तस्थ व्यंजन कहल जाला; जइसे य, र, ल, व।

महाप्राण भा उष्म व्यंजन

जवन व्यंजन अधिक प्राणवायु के योग से उच्चरित होखे ओकरा के महाप्राण भा उष्म ध्यंजन कहल जाला जइसे श, ष, स, आ ह आ हर वर्ग के दूसरा आ चउथा वर्ण। एह व्यंजन के उच्चारन में गरमाहट मालूम पड़ेला। एह से ई व्यंजन महाप्राण उष्म ह।

अल्प प्राण व्यंजन

कम प्राण वायु से जवन ध्वनि उच्चरित होखे ओकरा के अल्प प्राण व्यंजन कहल जाला; जइसे (क) स्वर वर्ण (ख) हर वर्ग के पहिला, तीसरा आ अंतिम वर्ण आ (ग) य, र, ल, व।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्द-विचार

शब्द के परिभाषा– कइएक वर्ण के मिलला से शब्द बनेला। वर्ण के ओह समूह के, जेकर कुछु अर्थ होखे, शब्द कहल जाला; जइसे बएल, गाइ, चाउर, लीची वगैरह। व्याकरण में खाली सार्थके शब्द प विचार कइल जाला।

शब्द के भेद

उत्पत्ति के आधार प शब्द के चारि गो भेद होला :—

१. तत्सम—संस्कृत से जवन शब्द सीधे भोजपुरी में आ गइल बाड़ स, जइसे प्रिय, स्नेह, पुण्य, प्रणाम वगैरह।

२. तद्भव—संस्कृत शब्द के अपभ्रंश रूप जवनन के भोजपुरी भाषा में प्रयोग हो रहल बा, जइसे—चक्र से चक्कर, मातृ से माई, भाद्र से भादो, जेष्ठ से जेठ, ओष्ठ से ओठ, अग्नि से आग वगैरह।

३. देशज—अइसन शब्द जवन भारत के दोसर भाषा से छनि के भोजपुरी में आ गइल बाड़ स, जइसे—पगड़ी, जूता, कटोरा, खिचड़ी, लोटा, छत।

४. विदेशज—ओइसन शब्द जवन अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली वगैरह से भोजपुरी में आ गइल बाड़ स; जइसे—इनाम, काबू, फीता, इम्तहान, लालटेन, हेड पंडित, डकपिउन, रसीदवही, अफसोस, आराम, आमदनी, अजब, गजब, जज वगैरह।

व्युत्पत्ति के आधार प शब्द के भेद

व्युत्पत्ति के मतलब बनावट होला। शब्द भा ओकरा मेल से बनल शब्दन के खण्ड-खण्ड (टुकड़ा-टुकड़ा) में तूरि के ओकर अर्थ बतावे के तरीका के व्युत्पत्ति कहल जाला, जइसे विद्यालय एगो शब्द भइल। एहिजा विद्या + आलय—एह खण्डन के अलग कइले व्युत्पत्ति कहाई। विद्यालय दू शब्द के मेल से बनल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्युत्पत्ति के आधार प शब्द के तीन भेद होला—

(१) रूढ़ शब्द
(२) यौगिक शब्द
(३) योग रूढ़ शब्द

१. रूढ़ शब्द—जवना शब्द के खण्ड कइला प कवनो अर्थ ना निकले ओकरा के रूढ़ शब्द कइल जाला; जइसे घर=घ+र, माला=मा+ला, कान=का+न, तन=त+न, मन=म+न, धन=ध+न, चिमटा=चि+म+टा, ठोकच=ठो+क+च वगैरह।

२. यौगिक शब्द—अइसन शब्द जेकर खण्ड सार्थक होखे यौगिक शब्द कहाला; जइसे पाठशाला, हिमालय, गंगोतरी, दिन-राति, डंड-बइठक, देशभक्त वगैरह।

३. योगरूढ़ि शब्द—अइसन यौगिक शब्द जेकर टुकड़ा कइला प अर्थ भिन्न होखे वाकी मिलल रहला प ओकर एगो विशेष (खास) अर्थ होखे, जइसे महावीर=हनुमान जी, रामरस=नून, जटाधारी=शिवजी, लमोदर=गनेसजी वगैरह। योगरूढ़ शब्द मिलल रहलो प आपन साधारन अर्थ छोड़ि के एगो खास अर्थ परगट करेला।

रूप के आधार प शब्द भेद

(क) विकारी शब्द
(ख) अविकारी शब्द

(क) विकारी शब्द—अइसन शब्द जेकर रूप लिंग, वचन, कारक विभक्ति वगैरह के कारन बदले, विकारी शब्द कहाला, जइसे—लइका, लइकन, लइका लोग, लइका सभ आवतारे। लइकी सभ आवतारी।

विकारी शब्द के भेद

विकारी शब्द के मुख्य भेद नीचे लिखल होला—

(क) संज्ञा
(ख) सर्वनाम
(ग) विशेषण
(घ) क्रिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) अविकारी शब्द—अइसन शब्द जवना के रूप लिंग, वचन, भा कारक, विभक्ति वगैरह के कारन ना बदले यानी जस के तस रहे, अविकारी शब्द कहल जाला; जइसे—अब, तब, आरे, कब, जोर-जोर वगैरह।

अविकारी शब्द के भेद

(क) क्रिया विशेषण

(ख) संबंध वाचक

(ग) समुच्चय वाचक

(घ) विस्मयादि बोधक

अविकारिये शब्दन के अव्यय कहल जाला।

आगे इन्हनी के पूरा विवेचन इन्हनी के मथेला के पाठ में कइल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ ५

शब्द रचना

व्युत्पत्ति यानी शब्द रचना के अनुसार शब्द दू तरह के होला—रूढ़ आ यौगिक ।

जइसे कि पहिले कहल जा चुकल वा कि जवन शब्द दोसरा शब्द के जोड़ला से ना वनल होखे, अइसन शब्दन के टुकड़ा कइला प कवनो अर्थ ना निकले ऊ रूढ़ कहाला, जइसे घर, वन, हाथ, लाल, नाक, पीअर वगैरह ।

दोसर शब्द के जोड़ से वनल शब्द यौगिक कहाला । एकर हर टुकड़ा सार्थक होला । जइसे गड़िवान, एकवान, लड़कपन, झटपट, घोड़सवार, वगैरह । यौगिक शब्दन में समास शामिल वा । अर्थ के अनुसार यौगिक शब्द के एगो अउर भेद योगरूढ़ि होला जवना से कवनो विशेष (खास) अर्थ पावल जाला जइसे—महावीर के अर्थ भइल जे वहुत वीर होखे वाकी एकरा से खास अर्थ अंजनी के लइका हनुमान जी से लगावल जाला । असहीं गिरिधारी (किसुन भगवान), जटधारी (शिवजी), लंवोदर (गनेस जी), वगैरह शब्द के अर्थ लागेला ।

यौगिक शब्द पाँच तरह से वनेला :

(क) उपसर्ग के योग से

(ख) प्रत्यय के योग से

(ग) समास के योग से

(च) पुनरुक्ति (एके शब्द के दोंहरवला से)

(ङ) अनुकरणात्मक ध्वनि (कवनो आवाज के नकल कइला से)

उपसर्ग

जवन शब्द अक्षर भा अक्षर समूह (शब्द के खण्ड) के पहिले लगावल जाला, ओकरा के उपसर्ग कहल जाला, जइसे—अनदेखल, अनजान, वेलूर, सरहद, वदनाम, भरसक, निडर, अवेर वगैरह । एह में अन, वे, सर, भर, नि, अ, उपसर्ग वा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ उपसर्गन के सूची

१. अ :—अथाह, अवेर, अकारथ, अधिरिजी, अपार ।

२. अध :—अधकचरा, अधमरू, अधपकू, अधवार ।

३. अन: —अनमोल, अनगिनित, अनजान, अनादर, अनभल, अनराज, अनदेखल, अनसुना ।

४. अव :—अवगुन, अवघड़ ।

५. ओ :—ओकाई, ओलार, ओनाह ।

६. ओन :— ओनइस, ओनतालिस ।

७. कम :—कमजोर, कमसीन ।

८. कु :—कुचाल, कुभाख, कुलच्छन ।

९. दु, दू :—दूवर, दूलम, दुधार, दुसेरी, दुमूहाँ, दुआह ।

१०. ना :—नापाता, नापसन, नाबालिक ।

११. नि :—निडर, निकामा, निफिकिर ।

१२. वे :—वेहाल, वेटाइम, वेकल, वेराम ।

१३. भर :—भरपेट, भरपूर, भरसक ।

विदेशी उपसर्ग (अरवी-फारसी से भोजपुरी में आइल) :

१. अल (निश्चय) :—अलवत्त, अलगरज, अलमस्त ।

२. कम (थोर) :—कमजोर, कमखोर, कमस्सल ।

३. खुश (अच्छा) :—खुशवू, खुशदिल, खुशमिजाज, खुशकिस्मत ।

४. गर (गैर) (अलग) :—गरहाजिर, गरमोनासिब, गरवाजिव ।

५. दर (में) :—दरकार, दरअसल, दरवाजा, दरवान, दरगाह ।

६. बद (खराव) :—बदनाम, वदवू, वदमास, वदचलन, बदजात ।

७. वे (विना) :—वेईमान, वेहूदा, वेहाथ, वेचलन, वेकूटल, वेकार, वेधड़क, वेकसूर ।

८. ला (विना) :—लाचार, लावारिस, लापरवाह ।

९. सर (प्रमुख) :—सरकार, सरपंच, सरताज ।

१०. हम (साथ) :—हमउमिरिया, हमजोली, हमदर्द, हमराही ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंग्रेजी उपसर्ग

हेड (बड़) :—हेड पंडित, हेड मोलवी।

सब (छोट) :—सब-ओभरसियर, सब-इंसपेक्टर।

ओवर (पूरा) :—ओभर कोट, ओभर मैन।

प्रत्यय :—जवन शब्द भा अक्षर, भा अक्षर-समूह (शब्द के खण्ड) के बाद में जोड़ल जाला ओकरा के प्रत्यय कहल जाला, जइसे—बुढ़ापा, अगिला, गमखोर, दूधगर, तोनइल, बनइला, घुम्मकड़। एह में पा, आ, खोर, गर, इल, अक्कड़ प्रत्यय ह।

टिप्पणी :—शब्द कहल जाला कवनो अंक्षर भा अक्षर समूह के जवन स्वतन्त्र रूप से कवनो अर्थ परगट करेला, बाकी "उपसर्ग" आ "प्रत्यय", अइसन अक्षर भा अक्षर समूह होला जे ना स्वतंत्र रूप से सार्थक होला आ ना व्यवहारे में। 'उपसर्ग' कवनो शब्द के पहिले आ 'प्रत्यय' कवनो शब्द के बाद में लागेला यानी बाद में जुटि के अर्थवान होला।

समास :—दू भा दू से अधिक शब्द के मिलि के एक शब्द बनि गइला के समास कहल जाला, जइसे—गंगा-जल, दालि-भात, मझधार, रसोई-घर, नयन-सुख, वगैरह।

पुनरुक्त :—दोहरवला से बनल यौगिक शब्द पुनरुक्त कहाला जइसे :—घर-घर, मने-मने, काम-धाम, काट-कूट, बेर-बेर, रोज-रोज, खाइल-पीअल, लोटा-डोर, बने-बने, लाल-लाल, गोर-गोर, छोटे-छोटे, लामा-लामा।

अनुकरणवाचक :—कवनो आवाज के नकल प बनल यौगिक शब्द अनुकरण वाचक कहाला, जइसे—खर-खर, धड़-धड़, धड़ाक-धड़ाक, चट-पट, तड़ाक, खटर-पटर वगैरह।

प्रत्यय के भेद :—प्रत्यय के प्रयोग खास क के दू तरह से होला—

(१) धातु (क्रिया) के बाद जवन प्रत्यय लगावल जाला ओकरा के 'कृत' कहल जाला आ ओकरा से बनल शब्द 'कृदन्त' कहाला, जइसे—चढ़ाई, लड़ाई, पढ़ाई, लिखाई, देखाई वगैरह।

(२) कवनो नाँव (संज्ञा) के बाद में लागल प्रत्यय से बनल शब्द तद्धित कहाला, जइसे—खाट से खटिया, चोर से चोरी, खेत से खेती, कोठा से कोठारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृदन्त

कृदंत के भेद—अर्थ के विचार से कृदन्त के तीन भेद कइल जा सकत बा—(क) वर्त्तमानकालिक कृदंत;

(ख) भूतकालिक कृदंत आ;

(ग) पूर्वकालिक कृदंत।

(क) वर्त्तमानकालिक कृदंत :—वर्त्तमानकालिक कृदन्त बनावत खा 'अव' आ 'अवा' प्रत्यय से संयुक्त रूप व्यवहार होला, जइसे—नाचत लट्टू, घूमत चरखी, उड़त चिरईं, बहत पानी, डूबत गगरी, छूटत गाड़ी, सरत अँचार, ढरत लोर, चूअत छान्हि, रमता जोगी, बहता पानी वगैरह।

(ख) भूतकालिक कृदंत :—भूतकालिक कृदंत के अंत में 'ल' प्रत्यय होला, जइसे—बइठावल, हँसल, हँसावल, सुनाइल, पिटाइल, डपटाइल, रगराइल, लिखाइल, भोगल, पाकल वगैरह।

(ग) पूर्वकालिक कृदंत :—'इ' प्रत्यय से अंत होखेवाला शब्द के साथ 'क' के मिलवला से पूर्वकालिक कृदन्त बनेला, जइसे—देखि के, सुनि के, पढ़ि के, जानि के, मानि के, आनि के, ठानि के, तानि के, कहि के वगैरह।

धातु		प्रत्यय		कृदन्त	शब्द
फेर	+	आ	=	फेरा	संज्ञा
लड़	+	आई	=	लड़ाई	,,
खेल	+	आड़ी	=	खेलाड़ी	,,
लूट	+	एरा	=	लुटेरा	,,
पूज	+	आ	=	पूजा	,,
भला	+	आई	=	भलाई	,,
धन	+	वान	=	धनवान	,,
भाग	+	ओड़ा	=	भगोड़ा	,,
वेद	+	अन	=	वेदन	,,
मिल	+	आप	=	मिलाप	,,
पूजा	+	आई	=	पुजाई	,,
समझ	+	अवता	=	समझवता	,,
चाट	+	नी	=	चटनी	,,
चर	+	अन	=	चरन	,,
लूट	+	अ	=	लूट	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धातु		प्रत्यय		कृदन्त	शब्द
जाँच	+	अ	=	जाँच	संज्ञा
पहुँच	+	अ	=	पहुँच	,,
सोच	+	अ	=	सोच	,,
घेर	+	आ	=	घेरा	,,
झट	+	का	=	झटका	,,
चढ़	+	आई	=	चढ़ाई	,,
खेद	+	आई	=	खेदाई	,,
काम	+	आई	=	कमाई	,,
चढ़	+	अत	=	चढ़त	,,
मिल	+	अत	=	मिलत	,,
उड़	+	आन	=	उड़ान	,,
पड़	+	आव	=	पड़ाव	,,
लग	+	आव	=	लगाव	,,
चढ़	+	आव	=	चढ़ाव	,,
लिख	+	आवट	=	लिखावट	,,
थक	+	आवट	=	थकावट	,,
रुक	+	आवट	=	वनावट	,,
वन	+	आवट	=	वनावट	,,
पी	+	आस	=	पिआस	,,
वोल	+	ई	=	वोली	,,
धमक	+	ई	=	धमकी	,,
घुड़क	+	ई	=	घुड़की	,,
हँस	+	ई	=	हँसी	,,
पिस	+	अवनी	=	पिसवनी	,,
कुट	+	अवनी	=	कुटवनी	,,
डूव	+	उकी	=	डुवकी	,,
वच	+	त	=	वचत	,,
खप	+	त	=	खपत	,,
रंग	+	त	=	रंगत	,,
चल	+	न	=	चलन	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धातु		प्रत्यय		कृदन्त	शब्द
खा	+	न	=	खान	संज्ञा
पा	+	न	=	पान	,,
कट	+	नी	=	कटनी	,,
कर	+	नी	=	करनी	,,
हो	+	नी	=	होनी	,,
ठोक	+	र	=	ठोकर	,,
धुन	+	इया	=	धुनिया	,,

क्रिया से विशेषण

(धातु) क्रिया	+	प्रत्यय		कृदन्त
वूझल	+	अक्कड़	=	वुझक्कड़
भूलल	+	अक्कड़	=	भुलक्कड़
उड़ल	+	आक	=	उड़ाक
पवँरल	+	आक	=	पवँराक
अड़ल	+	इयल	=	अड़ियल
सड़ल	+	इयल	=	सड़ियल
वढ़ल	+	इया	=	वढ़िया
घटल	+	इया	=	घटिया
विगड़ल	+	ऊ		विगाड़ू , विगारू वगैरह ।

कुछ विशेषण शब्दन के सूची जवना के भोजपुरी में प्रयोग हो रहल बा :—

वहुत से विदेशी शब्द भोजपुरी में पचि गइल वाड़ें स। कुछ आपन रूप-रंग वदलि देले वाड़ें स आ भोजपुरी में ढरि गइल वाड़ें स आ कुछ आपन असलिये रूप में वाड़ें स—

(क) फारसी—अफसोस, आराम, आमदनी, आवाज, आवारा, करीव, कुश्ती, कमरवन्द, कुरवान, कूचा, जवान, मंजिल, चश्मा, दरवार, दिलासा, दिमाग, मुर्दा, सरकार, खयरियत, खुशामद, शराव, शादी. गिरह, खामोश, कमान, पुर्जा, तहसील, तगमा, तश्तरी, तोप, गर्दा, गम, यादगारी, साहेव, खाम-खा, आस्ते, मुरुग, वदली वगैरह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) अरबी—अजनवी, अजव, गजव, अदावत, अर्क, कवुर, औरत, अल्ला, तज, तमाशा, तारीख, मादा, हाल, होशियार, मिसाल, अदालत, हाकिम, किताव, हिसाव, गरीव, हुकुम, लिफाफा, फैसला, नगद, नक्सा, नहर, तरक्की वगैरह।

(ग) तुर्की—कुली, खाँ, गलीचा, वेगम, चाकू, चोंगा, दरोगा, मशालची, तोशक, वीवी, चुगल, जाजिम, लफंगा, वावर्ची' बुलबुल, चिक, कइँची, चारपाई, वेगम, खान वगैरह।

(घ) अंग्रेजी—अफसर, इंजिन, डाक्टर, अपील, अस्पताल, जेहल, कॉपी, जंक्शन, राशन, कमीसन, ओभरसियर, कलक्टर, वोतल, कन्ट्रोल, कोटा, टिकट, रेल, इस्लेट, लालटेन, दर्जन, फेल, पास, फीस, मील, मोटर, सरकस, सूटकेस, सिमेंट, गिलास, कांग्रेस, जनवरी, फरवरी, अरदली, फारम वगैरह।

(ङ) फ्रांसीसी शब्द—कूपन, कारतूस, जज, जनरल, फैसन, होटल, होस्टल वगैरह।

(च) पुर्तगाली—अँचार, अनन्नास, इस्तिरी, काजू, अलमारी, चाभी, फीता, गिरजा, तम्वाकू, संतरा, वटम, काफी, कोवी, गमला, किरानी, अलपीन, तमाकू वगैरह।

तद्धित

जइसन कि पाछे कहल गइल वा, क्रिया के छोड़ि के कवनो संज्ञा आ विशेषण के वाद में लागेवाला प्रत्यय के तद्धित कहल जाला।

तद्धित आ कृदन्त में फरक ई वा कि कृदन्त प्रत्यय धातु भा क्रिया के अन्त में लागेला आ तद्धित संज्ञा भा विशेषण के अन्त में, जइसे—चढ़ (धातु)+आई=पढ़ाई (कृदन्त)।

विहार (संज्ञा)+ई=विहारी (तद्धित)।

वड़ (विशेषण)+आई=वड़ाई (तद्धित)।

तद्धित प्रत्यय से वनेवाला शब्द

संज्ञा/विशेषण		तद्धित प्रत्यय		संज्ञा
मीठा	+	आस	=	मिठास
लइका	+	पन	=	लइकपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संज्ञा/विशेषण		तद्धित प्रत्यय		संज्ञा
बुरा	+	आई	=	बुराई
तेल	+	ई	=	तेली
रंग	+	त	=	रंगत
माला	+	ई	=	माली
सोना	+	आर	=	सोनार
लोहा	+	आर	=	लोहार
कोठा	+	री	=	कोठारी

संज्ञा		तद्धित प्रत्यय		विशेषण
बाजार	+	ऊ	=	बाजारू
मामा	+	एरा	=	ममेरा
चाचा	+	एरा	=	चचेरा
घर	+	एलू	=	घरेलू
घमंड	+	ई	=	घमंडी
घाव	+	एल	=	घाएल
खेल	+	आड़ी	=	खेलाड़ी
जंगल	+	ई	=	जंगली
देस	+	ई	=	देसी
दान	+	ई	=	दानी
धन	+	ई	=	धनी
दूध	+	आर	=	दुधार
मास	+	इक	=	मासिक
हवा	+	ई	=	हवाई
साल	+	आना	=	सालाना
रोज	+	आना	=	रोजाना
लोभ	+	ई	=	लोभी
लाठी	+	अइत	=	लठइत
रोग	+	ई	=	रोगी
भय	+	आनक	=	भयानक
नमक	+	ईन	=	नमकीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संज्ञा		प्रत्यय		विशेषण
नाम	+	ई	=	नामी
नोक	+	ईला	=	नोकीला
पेट	+	ऊ	=	पेटू
अधिकार	+	ई	=	अधिकारी
कसरत	+	ई	=	कसरती
खर्च	+	ईला	=	खर्चीला
गाँव	+	ई	=	गँवईं
गुन	+	ई	=	गुनी
उपज	+	आऊ	=	उपजाऊ
कागद	+	ई	=	कागदी
जवाव	+	ई	=	जवावी
सुख	+	ई	=	सुखी
दुख	+	ई	=	दुखी
कुल	+	ईन	=	कुलीन
मर्द	+	आना	=	मर्दाना
पंजाव	+	ई	=	पंजावी

विशेषण से संज्ञा

विशेषण संज्ञा	विशेषण संज्ञा
वड़—वड़ाई	पागल—पागलपन
वुरा—वुराई	आपन—अपनापन
गरीव—गरीवी	वेईमान—वेईमानी
सुस्त—सुस्ती	चतुर—चतुराई
खाट—खटाई	मरद—मरदाही
चल्हांक—चल्हांकी	नवाव—नवावी
मीठा—मिठास	मोट—मोटाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संधि

संधि शब्द अधिकतर संस्कृते वाड़े स। हिन्दी के ढेर संधिवाला शब्द संस्कृतके हवे स जवना के प्रयोग हिन्दी में हो रहल वा। हिन्दी के संधिवाला आपन शब्द कम वाड़े स।

खाँटी भोजपुरी शब्दन में संधिसम शब्द मिलल कठिन वा। संस्कृत भा हिन्दी संधि के सभ भेद, उपभेद आ नियम एह में लागू नइखे। भोजपुरी के अधिकतर ओही शब्दन में संधि पावल जाला जवन संस्कृत, प्राकृत आ अपभ्रंश से आवत-आवत भोजपुरी में पचि गइल वाड़े स आ प्रयोग में आ रहल वाड़े स।

संधि के परिभाषा

जव दू अक्षरन के मेल से कवनो विकार पैदा होखे त ओह मिलावट के संधि कहल जाला। संधि में कतो-कतो एक अक्षर में परिवर्तन होल। आ कतो-कतो दूनों अक्षरन में, आ कतो-कतो दूनों के वदला एगो तीसर हो जाला, जइसे—राम+आसरे - रामासरे, महा+ईसर - महेसर, जगत+ईश= जगदीश।

संधि के भेद

संधि के तीन भेद होला—(क) स्वर संधि, (ख) व्यंजन संधि आ (ग) विसर्ग संधि।

(क) स्वर संधि

स्वर के स्वर के साथ मेल से जवन विकार पैदा होला, ओकरा के स्वर संधि कहल जाला, जइसे—

उदाहरण		संधि	नियम
परम+आतमा	=	परमातमा	अ+आ=आ
राम+अनुज	=	रामानुज	अ+अ=आ
महा+आतमा	=	महातमा	अ+आ=आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊपर के उदाहरन के शब्दन के पहिला खंड के आखिरी अक्षर दूसरा खंड के पहिला अक्षर से मिलि गइल वा। एह दूनो के मेल से एगो नया अक्षर वनि गइल वा। एकरे के संधि कहल जाला।

स्वर संधि के भेद :—एकर तीने रूप भोजपुरी में पावल जाला :— (अ) दीर्घ (आ) गुण आ (इ) अयादि।

(अ) दीर्घ संधि

जव ह्रस्व भा दीर्घ अ, इ, के वाद ह्रस्व भा दीर्घ अ, इ आवे त (अ) दूनो मिलि के आ, ई हो जाला, जइसे—

उदाहरन		संधि	नियम
परम+अरथ	=	परमारथ	अ+अ=आ
राम+आधार	=	रामाधार	अ+आ=आ
भदरा+आह	=	भदराह	आ+आ=आ
घुंघुरा+आह	=	घुघुराह	आ+आ=आ
मही+इन्दर	=	महीन्दर	ई+इ=ई
गिरि+इन्दर	=	गिरीन्दर	ई+ई=ई

(आ) गुण संधि

जव ह्रस्व भा दीर्घ अ कार के आगे ह्रस्व भा दीर्घ इ कार रहे त दूनो मिलि के 'ए' आ ह्रस्व भा दीर्घ उ कार रहे त दूनो मिलि के 'ओ' हो जाला, जइसे—

उदाहरन		संधि	नियम
देव+इन्दर	=	देवेन्दर	अ+इ=ए
राम+ईसर	=	रामेसर	अ+ई=ए
सुर+इन्दर	=	सुरेन्दर	अ+इ=ए
महा+ईसर	=	महेसर	आ+ई=ए

टिप्पणी—ऊपर के संधिवाला शब्द भोजपुरी के आपन ना हवे स वाकी इन्हनी के प्रयोग भोजपुरी में वा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाहरन		संधि	नियम
रमा + इन्दर	=	रमेन्दर	आ + इ = ए
महा + उदय	=	महोदय	आ + उ = ओ
पर + उपकार	=	परोपकार	अ + उ = ओ
भाग + उदय	=	भागोदय	अ + उ = ओ

(इ) अयादि संधि

जब ए, ऐ, ओ, औ के आगे कवनो स्वर वर्ण आवे त ए के अय; ऐ के बदला आय, ओ के बदला अव आ औ के बदला आव हो जाला, जइसे—

उदाहरन		संधि	नियम
ने + अन	=	नयन	ए + अ = अय
नै + अक	=	नायक	ऐ + अ = आय
पो + अन	=	पवन	ओ + अ = अव
पौ + अक	=	पावक	औ + अ = आव

(ख) व्यजन संधि

व्यंजन वर्ण के साथे कवनो व्यंजन भा स्वर वर्ण के मिलला से जवन विकार पैदा होखे, ओकरा के व्यंजन संधि कहल जाला, जइसे—

जगत् + ईश = जगदीश ।

१. जब म् के बाद क से लेके म के बीच के कवनो वर्ण होखे त 'म्' के लोप होके अनुस्वार भा जवन वर्ण होखे ओकरे अनुनासिक वर्ण हो जाला, जइसे—

उदाहरन		संधि
सम् + गम	=	संगम, सङ्गम ।
सम् + कलप	=	संकलप
सम् + तोख	=	संतोख

टिप्पणी—ऊपर के संधि सम शब्द भोजपुरी के ना हवे स बाकी इन्हनी के प्रयोग साहित्यिक भोजपुरी में चलत वा ।

उदाहरन	संधि
सम् + परक =	संपरक
सम् + पूरन =	संपूरन
सम् + धि =	संधि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) जब 'म्' के आगे य, ह, स वगैरह में से कवनो वर्ण होखे त 'म्' अनुस्वार में बदल जाला, जइसे—

सम् + यम = संयम
सम् + योग = संयोग
सम् + हार = संहार
सम् + सार = संसार

(३) जब त् के आगे कवनो स्वर आवे त 'त' के जगह 'द' हो जाला, जइसे—

जगत् + ईश = जगदीश
सत् + उपाय = सदुपाय

(४) 'व' आ 'ह' के मेल से 'भ' हो जाला, जइसे—

सव + ही = सभे, सव + ही = सभ (ई के लोप), कव + ही = कभी, अव + ही = अभी, तव + ही = तभी ।

(५) संधि के कारन वर्ण में वृद्धि पावल जाला, जइसे—

कम + असल = कमस्सल, दर + असल = दरस्सल ।

(६) पहिला पद भा खण्ड के अंतिम 'अ' दीर्घ हो जाला, जइसे—

विश्व + मित्र = विश्वामित्र, दीन + नाथ = दीनानाथ, मूसल + धार = मूसलाधार ।

(ग) विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वर भा व्यंजन के मिलला से जवन विकार पैदा होखे ओकरा के विसर्ग संधि कहल जाला, जइसे—

१. विसर्ग के लोप
निः + सबद = निसबद
निः + सोच = निसोच

२. जब 'अ' के बाद विसर्ग होखे आ विसर्ग के बाद कवनो वर्ण के तीसरा अक्षर (ग, ज, ड, द, ब) होखे त 'अ' 'ओ' हो जाला आ विसर्ग के लोप हो जाला, जइसे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाहरन संधि	नियम
मन: + ज = मनोज	न: + ज = नो + ज
यश: + दा = यशोदा	श: + द = शो + द
तप: + वन = तपोवन।	प: + व = पो + व

३. जब 'अ' के बाद विसर्ग होखे आ विसर्ग के बाद र चाहे ह होखे त 'अ' 'ओ' में बदल जाला आ विसर्ग के लोप हो जाला, जइसे—

उदाहरन संधि	नियम
मन + रथ = मनोरथ	न: + र = नो
मन: + हर = मनोहर	न: + ह = नो

४ जब 'इ' के बाद विसर्ग होखे आ विसर्ग के बाद 'र' होखे त इ=ई हो जाला आ विसर्ग के लोप हो जाला, जइसे—

उदाहरन		संधि	नियम
नि: + रोग	=	नीरोग	नि: + र = नीर
नि: + रस	=	नीरस	नि: + र = नीर

५. विसर्ग के पहिले इ, उ होखे आ विसर्ग के बाद कवनो वर्ग के तीसरा आ चउथा अक्षर होखे त विसर्ग 'र' रेफ में बदल जाला, जइसे—

उदाहरन संधि	नियम
नि: + धन = निर्धन (निरधन)	नि: + ध = निर्ध
नि: + बल = निर्बल (निरबल)	नि: + ब = निर्ब
दु: + गुण = दुर्गुण (दुरगुन)	दु + गु = दुर्गु

६. कतो-कतो संधि के बाद आधा 'र' ना होके पूरा 'र' हो जाला—

नि: + आधार = निराधार

नि: + मल = निरमल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ ७

संज्ञा

परिभाषा—संज्ञा के माने नाँव होला। जवना शब्द से कवनो जीव, वस्तु, ठवर, भाव वगैरह के नाँव के वोध होखे ओकरा के संज्ञा कहल जाला। थोरे शब्द में कवनो वस्तु[1] के नाँव के संज्ञा कहल जाला, जइसे—अजय, वसंती, पटना, गया, सोना, मेला, वर्ग, साँप, पहाड़, आम, लड़ाई, चोरी, गरमी वगैरह।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होला—१. व्यक्तिवाचक
२. जातिवाचक
३. समूहवाचक
४. द्रव्यवाचक
५. भाव वाचक

१. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जवना संज्ञा से खाली एके प्रानी, जगह, वस्तु वगैरह के वोध होखे ओकरा के व्यक्तिवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे—गंगा वड़की नदी ह। जमशेदपुर कल-कारखाना के नगर ह। अभय तेज लइका वा। एह वाक्यन में गंगा-जमशेदपुर, अभय से एगो खास नाँव के वोध होला। एह से ई सभ व्यक्तिवाचक संज्ञा ह।

२. जातिवाचक संज्ञा

जवना संज्ञा से जाति भर के वोध होखे ओकरा के जाति वाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे—लइका, किताव, मनई, फेंड़, गाइ, घोड़ा वगैरह।

---

१. वस्तु—सृष्टि के कवनो चीज चाहे प्रकृत होखे भा कल्पित, जड़ होखे भा चेतन, साकार होखे भा निराकार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. समूहवाचक संज्ञा

जवना संज्ञा से प्रानी भा पदार्थ के समूह के वोध होखे ओकरा के समूह-वाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे—भीड़, सभा, परिवार, संघ, वर्ग, झुण्ड, सेना वगैरह।

४. द्रव्यवाचक सज्ञा

जवना संज्ञा से कवनो दरब भा नापे आ तउलेवाला वस्तु के नाँव के वोध होखे ओकरा के द्रव्यवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे—सोना, चानी, गहूँ, चाउर, घीव, तेल वगैरह।

५. भाववाचक सज्ञा

जवना संज्ञा से कवनो वस्तु में ओकर धरम, गुन, सोभाव, दसा, सुख वगैरह के भाव मालूम पड़े ओकरा के भाववाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे—वचपन, लमाई, चोरी, मिठास, चढ़ाई, सजावट, भलाई, भोलापन, चिकनाहट वगैरह।

टिप्पणी—मुख्य रूप से संज्ञा के तीने भेद वा—व्यक्ति वाचक, जाति वाचक आ भाववाचक। समूहवाचक आ द्रव्यवाचक संज्ञा—सही माने में जाति-वाचक संज्ञा के उपभेद वा। इन्हनी के जातिवाचक संज्ञे माने के चाहीं। सोना, चानी, गहूँ, तेल भा परिवार, सभा, सेना, वगैरह से ओकरा खास जाति के वोध होता।

हिन्दी में अंग्रेजी के ढर्रा प संज्ञा के पाँच भेद मानल गइल वा आ ई सभे के दिमाग में वइठ गइल वा, एही से ऊपर पाँचो भेद के विवेचन कइल गइल वा।

संज्ञा के रूप

भोजपुरी में आपन खासियत ई वा कि संज्ञा आ विशेषण के शब्दन के कइएक रूप पावल जाला। प्रेम, खीसि आ उदासीनता के जाहिर करे में एकर प्रयोग होला, जइसे—अगर केहू के नोकर के नाँव लछुमन वा त प्रेम भा दुलार जाहिर करे खातिर ऊ लछुमन भा लछुमनजी कही। अनसुना कइला प लछुमनवा कही आ ढेर दिक भइला प आगे कुछु विशेषणो जोड़ि के हाँक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारी। भोजपुरी में रूप रचना के साधारन, गुरु आ गुरुतर तीन रूप मिलेला, जइसे—

साधारन	अहीर	नाऊ	पोथी	तेली
गुरु	अहिरा	नउआ	पोथिया	तेलिया
गुरुतर	अहिरवा	नउअवा	पोथियवा	तेलियवा

अधिकतर संज्ञा शब्दन में खाली साधारन गुरु रूप मिलेला। गुरुतर रूप ना मिले, जइसे—लोटा—लोटवा, मीठ—मीठा, आँखि—अँखिया, कंठा—कंठवा, पांड़े—पँड़ेया—पँड़इया वगैरह।

भाववाचक सज्ञा वनावे के नियम

भाववाचक संज्ञा तीन तरह से वनेला—

(क) जातिवाचक संज्ञा से—चोर से चोरी, लइका से लइकपन, कहाँर से कहँरिया वगैरह।

(ख) क्रिया से—दउड़ना से दउड़, चढ़ल से चढ़ाई, सजावल से सजावट, वहल से वहाव।

(ग) विशेषण से—गरम से गरमी, मीठ से मिठास, भल से भलाई, चीकन से चिकनाहट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ ८

सर्वनाम

परिभाषा—सर्वनाम माने सभ के नाँव, यानी सभ केहू आ सभ कुछ के नाँव के बदला आवेवाला शब्द जवन पर्यायवाची ना होखे—सर्वनाम कहाला। दोसरा शब्द में **संज्ञा (नाँव) के बदला में आवेवाला विकारी शब्द**[1] के सर्वनाम कहल जाला। सर्वनाम के शब्दन में संज्ञा के सँगे आगे भा पीछे (पूर्वापर) संबंध होला। एके संज्ञा के बेरि-बेरि दोहरावे के ना पड़े एह से सर्वनाम के प्रयोग कइल जाला, जइसे—हम, तूं, ऊ, रउरा, केहू, कवन वगैरह। राम कहले कि हम आवत बानी। बाकी ऊ ना अइले।

सर्वनाम के भेद—खास तरह से सर्वनाम के नीचे लिखल सात भेद होला—

१. पुरुषवाचक २. निश्चयवाचक ३. अनिश्चयवाचक ४. निजवाचक ५. संबंधवाचक ६. प्रश्नवाचक ७. आदर सूचक।

एकरा अलावा भोजपुरी में (अ) यौगिक सर्वनाम आ (आ) सार्वनामिक विशेषण आ (इ) सार्वनामिक क्रिया विशेषणो पावल जाला।

१. पुरुषवाचक—(क) कहेवाला (ख) सुनेवाला आ (ग) जेकरा बारे में कहल जाय—एह तीनों के ओर संकेत करेवाला सर्वनाम 'पुरुषवाचक' सर्वनाम कहाला, जइसे हम, तूं, ऊ वगैरह। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होला (अ) उत्तम पुरुष (आ) मध्यम पुरुष आ (इ) अन्य पुरुष।

पुरुष सम्बन्ध	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम	हमनी, हमनीका, हमनीसभ
सम्बन्ध	हमार, मोर	हमनी के, हमनीसभ के
मध्यम पुरुष	तू तूं	तोहनी तूं तोहन
सम्बन्ध	तोर तोहार	तोहनी के तोहनीसभ के तोहनीलोग के
अन्य पुरुष	ऊ	ऊ सभ, ऊ लोग
सम्बन्ध	उनकर, हुन्हुकर	उन्हनी लोगन के उन्हनी सभके

---

१ विकारी शब्द—जेकर रूप लिंग, वचन, कारक विभक्ति के कारन बदले ऊ विकारी शब्द कहाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. **निश्चयवाचक सर्वनाम**—जवना सर्वनाम से कवनो निश्चित वस्तु के बोध होखे ओकरा के निश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाला। ई दू तरह के होला—(क) निकटवर्ती निश्चयवाचक आ (ख) दूरवर्ती निश्चयवाचक। 'ई', 'हई' के प्रयोग निकटवर्ती वस्तु खातिर होला आ 'ऊ', 'हऊ' के प्रयोग दूरवर्ती वस्तु खातिर होला।

(क) निकटवर्ती सर्वनाम के रूप

शुद्ध (मूल)—	एकवचन	बहुवचन
	ई, हई (अनादर सूचक)	इन्हिका, हिन्हनीका
		इन्हनक, हिन्हनक
		इन्हन, इन्हनी, हिन्हन
		इन्हनी लोग/लोगन
		हिन्हनी लोग/लोगनि
	इहाँका (आदर सूचक)	इहाँसभ, इहाँ सभन
		इहाँ सभनी

एकरा, हेकरा (अनादर सूचक)—एकरा सभके, हेकरा सभके

सम्वन्ध विशेषण—बिगदल—इन्हिकर, हिन्हिकर

" " (शुद्धमूल)—एकर, हेहर, इन्हिकर, हिन्हिकर।

कवो-कवो स्त्रीलिंग में एकरि, हेकरि, इन्हिकर, हिन्हिकरि वगैरह प्रयोग होला, जइसे—एकरि/हेकरि वानि बिगदि गइल विया।

भोजपुरी सर्वनाम आपन निश्चित अर्थ वोध करे खातिर क्रिया प असर डालेला, जइसे—(अ) ई/हई कव अइली हा? (अपना से उमिरगर मेहरारू खातिर)

(आ) ई/हई कव अइलेहा? (अपना से वड़ पुरुष खातिर)

(इ) ई/हई कव आइलहा? (अपना से छोट पुरुष खातिर)

(ई) इहाँका इहाँ सभ कव अइलीं हां? (आदर के अर्थ में अपना से उमरिगर मरद आ, मेहरारू खातिर)।

शुद्ध वहुवचन के उदाहरन

(i) इन्हन/इन्हनी/हिन्हनी/हिन्हन/हिन्हनी लोग/लोगिन भा लोगनी कव आइल हा? (पुरुष खातिर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ii) इन्हन/इन्हनि/हिन्हन/हिन्हनी लोग/लोगनि/लोगन
कव अइलीं हां ? (वड़-वूढ़ मेहरारू खातिर)

(iii) इन्हन का/इन्हनी का/हिन्हन का/हिन्हनी का
कव अइले/अइली हा स ? (छोट मरद आ मेहरारू खातिर)

(iv) इहाँ सभन/इहाँ सभ/सभनी कव अइलीं हां ? (वड़-वूढ़ मरद-मेहरारू खातिर)

बिगदल एकवचन के उदाहरन

(i) इन्हिका/हिन्हिका से काम ना चली। (वरावरी वाला मेहरारू मरद खातिर)

(ii) ए/एह/हि से काम ना चली। (छोट खातिर, निर्जीव पदार्थ खातिर हिन्दी 'इस' के अर्थ में)।

(iii) इहाँ से काम ना चली। (वड़-वूढ़ मरद-मेहरारू खातिर)

एही तरह से वहुवचनो में प्रयोग होई।

'ई' आ 'हई' के प्रयोग मरद-मेहरारू दूनो खातिर होला।

(ख) दूरवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम के रूप

	एकवचन	बहुवचन
शुद्ध मूल	ऊ, हऊ, उन्हि हुन्हि	उन्हन, उन्हनी, हुन्हन हुन्हनी लोग/लोगन लोगनी/उन्हनका/उन्हनीका हुन्हनीका/हुन्हनका

उहाँका (आदर सूचक)—उहाँसभ/सभन/सभनी

बिगदल—उन्हुका, ओहके—उन्हन, ओहनके

सम्वन्ध विशेषण शुद्ध—ओकर, होकर, उन्हुकर, हुन्हुकर

सम्वन्ध विशेषण विगदल—ओकरा, होकरा, उन्हुकरा, हुन्हुकरा

कबो-कवो ओकरि, होकरि, उन्हकरि, हुन्हुकरि के प्रयोग स्त्रीलिंग विशेषण के रूप में होला, जइसे—ओकरि/होकरि भइँस बिआइल बिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से कवनो अनिश्चित (दोविधा, सन्देह वगैरह) भा अज्ञात व्यक्ति आ वस्तु के बोध होखे ओकरा के अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाला।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के रूप

सजीव	एकवचन	बहुवचन
शुद्ध	केहू, केऊ, केहु कोई, कवनो।	केहू, केऊ, कवनो लोग।
विगदल	ऊपरे लेखा	ऊपरे लेखा

निर्जीव		
शुद्ध	कुछु, किछु, किछुओ कुछुओ, कुछ	×
बिगदल	ऊपरे लेखा	ऊपरे लेखा

कवो-कवो अनिश्चयवाचक सर्वनाम विशेषण के तरह व्यवहार होला, जइसे—खरहा कवनो वगइचा में भाग गइल।

'सभ' के व्यवहार अनिश्चयवाचक सर्वनाम के वहुवचन में होला, जइसे—सभ/सभे गइल/सभ मेहरारू अइली स। जोर देवे खातिर विगदल वहवचन में 'सभे' भा सभन के प्रयोग होला, जइसे—रवाँ सभे/सभन के इहे वतकही वा।

४. निजवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से संज्ञा भा सर्वनाम के निज (खुद) के वोध होखे ओकरा के निजवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे—अपन, आपन, अपना, अपने, खुद, खुदे वगैरह। बिना कवनो रूप वदलले ई सभ पुरुषवाचक सर्वनाम के सङे प्रयोग कइल जाला, जइसे—

एकवचन	वहुवचन
हम अपने गइलीं।	हमनी सभ अपने गइलीं।
तू अपने गइल।	तू लोग/तोहनी का अपने गइल।
ऊ अपने गइल।	ऊ लोग अपने गइल।
	उहाँका अपने गइलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अपना' आ 'आपन' के दूनों लिंग में प्रयोग विशेषण के तरह होला, जइसे—आपन बेटा; आपन बेटी। कहीं-कहीं 'आपनि' लइकी के प्रयोगो चलेला। एकर शुद्ध रूप 'आपन' आ बिगदल रूप 'अपना' होला, जइसे—अपना बबुई से कहि द कि ढेर मुँह मत चलावसु।

'खुद' फारसी शब्द ह जवना के प्रयोग निजवाचक सर्वनाम के रूप में चलेला। एकर शुद्ध रूप 'खुद' आ बिगदल रूप 'खुदे' (खुदही) होला। कर्त्ता प जोर देवे खातिर 'खुद' के प्रयोग होला. जइसे—

खुद रामे आम तूरत रहन।

खुद तूंही आम तूरत रह।

हम खुदे आइबि।

ऊ खुदे आई।

ऊपर के उदाहरन से जाहिर बा कि उद्देश्य (कर्त्ता) के पहिले 'खुद' आ विधेय (क्रिया) के पहिले खुदे होला।

५. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जवन सर्वनाम कवनो संज्ञा से सम्बन्ध बतलावे ओकरा के सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहल जाला। ई दूगो छोट-छोट उपवाक्यन के जोड़ेला, जइसे—जे काम करी से दाम पाई। एह में 'से' सम्बन्धवाचक सर्वनाम बा।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के रूप

	एकवचन	बहुवचन
शुद्ध	जे, जवन, जौन, जिन्हि, से, ते, तवन, तौन, तिन्हि	जे, जवन, जौन, जिन्हि, जिन्हन, जिन्हनी लोग/सभ, से, तवन, तौन, तिन्हन, तिन्हि लोग/सभ
बिगदल :	जे, जवना, जौना, जेह जिन्हि, ते, तवना, तौना, तेह, तिन्हि, तिनि	ऊपर लेखा "

सम्बन्धवाचक विशेषण शुद्ध—जेकर, जेहकर, जिन्हिकर, तेकर, तेहकर, तिन्हिकर, सेकर/सेहकरा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बन्धवाचक विशेषण बिगदल—जेकरा, जेहकरा, जिन्हिकरा, तेकरा, तेहकरा, तिन्हिकरा, सेकरा, सेहकरा।

सबंधवाचक सर्वनाम के उदाहरन

शुद्ध एकवचन—(क) जे/जवन/जौन/जइसन करी से/तवन/तौन तइसन पाई।

(ख) जिन्हि जइसन करिहें तिन्हि तइसन पइहें।

(ग) जवनि जइसन करी तवनि तइसन पाई (मेहरारू)।

शुद्ध बहुवचन—(क) जे/जवन/जौन लोग भा सब जाई से/ति/तवन/तौन लोग भा सभ पिटाई।

बिगदल एकवचन—(क) जे/जवना/जौन/जिकरा के बोलाव से/ति/तवना/तौना/तिकरा के खिआव।

(ख) जेह/जिन्हि/जेहकरा/जिन्हिकरा के बोलाव तेह/तिन्हि/तेहकरा/तिन्हिकरा के खिआव। (उमिरगर मरद-मेहरारू खातिर)।

(ग) जवनी के बोलाव तवनी के खिआव। (मेहरारू खातिर)।

बिगदल बहुवचन—(क) जे/जवना/जौन लोग भा सभ के बोलाव/तवना/सेकरा/तौन लोग भा सभ के खिआव।

(ख) जेह/जिन्हन/जिन्हनी लोग भा सभ के बोलाव सेह/सि/तिन्हन/तिन्हनी लोग भा सभ के खिआव।

(ग) जवनिनि के बोलाव तवनिनि के खिआव। (मेहरारू खातिर)।

६. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से सवाल (प्रश्न) कइला के बोध होखे ओकरा के प्रश्नवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे ऊ का चल गइले ? ई के गलती कइल हा ? एह वाक्य में 'का' आ 'के' प्रश्नवाचक सर्वनाम बा।

प्रश्नवाचक सर्वनाम के रूप

एह सर्वनाम के सजीव आ निर्जीव दू रूप पावल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	एकवचन	बहुवचन
शुद्ध—	के, केवन, कवन/ कौन	के, केवन, कौन, कवन लोग/लोगन/ लोगनी
बिगदल—	के, केह, किन्हि, केवना/ कौना, कवना	किन्हन, किन्हनी लोग/ लोगनी

संबंध विशेषण शुद्ध—केकर, केहकर, किन्हकर।

संबंध विशेषण बिगदल—केकरा, केहकरा, किन्हिकर।

टिप्पणी—शुद्ध एकवचन आ बहुवचन के रूप 'केवनि' आ 'कवनि' आ संबंध में केकरि आ किन्हिकरि रूप खाली स्त्रीलिंग में प्रयोग होला।

निर्जीव

	एकवचन	बहुवचन
शुद्ध	का	×
बिगदल	के, केह, केथी, काहें	×

सम्बन्ध—काहें के, केथी के। केथु, केथुकर।

टिप्पणी—भोजपुरी लोक गीतन में के, किये, काहें, केथी रूप पावल जाला।

सजीव के उदाहरन

शुद्ध एकवचन—(क) के/कवन/कौन/कवन खाता (मरद) ?

(ख) केवनि/कवनि खातिया (मेहरारू) ?

शुद्ध बहुवचन—(क) के/केवन/कौन/कवन लोग/लोगन/लोगनी खाता ? (मरद)।

(ख) केवनि/कवनि खातारी स (मेहरारू)/सँ/सनि ?

बिगदल एकवचन—हम कवना/केवना/कौना/केह के मरलीं हां ?

बिगदल बहुवचन—हम के/केवन/कौन/कवन/किन्हिन/किन्हनी लोग/लोगन/लोगनी के मरलीं हां ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिप्पणी—के/किवन/कवन/कौन के विशेषणो के तरह प्रयोग होला, जइसे—के/केवन/कवन/कौन मनई ? के/केवना/कवन/कौन मेहरारू ? बाकी कबहूँ 'केवनि', 'कवनि' के स्त्रीलिंग में प्रयोग होला।

निर्जीव—

शुद्ध एकवचन—उदाहरन—ई का ह जी ?

विगदल— ,, के/किह/कोह/केथी से मरले हा ?

७. आदरसूचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से आदर के वोध होखे ओकरा के आदर सूचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे—रउरा आइवि नू ?

आदर सूचक सर्वनाम में रउरा, रउरां, रउआ, रवां, रवों, अपने. अपना, आपसे, उहांका, इहांका वगैरह के प्रयोग होला।

आदरसूचक सर्वनाम के उदाहरन

(क) रउरा/रउरां/रउआ रवां का कहत वानी ?

(ख) हम अपना/अपने/आप से का कहत वानी ?

(ग) रवां/रवों असहीं कहवि ?

स्त्रीलिंग आ पुल्लिग में आदरसूचक सर्वनाम के एके रूप चलेला। ई मध्यम पुरुप—पुरुपवाचक में व्यवहार होला, जइसे राउर वात के उठाई ? रउरां/रउवां का कहत वानी ?

उहांका, इहांका आदर सूचक सर्वनाम के रूप में व्यवहार होला बाकी इहो अन्य पुरुप—पुरुप वाचक सर्वनामे ह जवना से निकटवर्ती आ दूरवर्ती के वोध होला।

(अ) यौगिक भा मिश्र सर्वनाम

भोजपुरी में यौगिक सर्वनाम के प्रयोग चलेला, जइसे—सभ केहू, जे केहू, सभ कोई, सभ कुछ, जो कोई वगैरह।

पुरुपवाचक सर्वनाम के सङे सभ के प्रयोग होला, जइसे—ऊ सभ, हम सभ, ई सभ, रउरा सभे/सभ/रवां सभ/सभे/तूं सभ वगैरह।

(आ) सार्वनामिक विशेषण

जोर देवे खातिर जव कुछ सर्वनाम में हे, हो, हू, ए, ओ के मिलावल जाला त ऊ शब्द विशेषण के अर्थ देवे लागेला, जइसे—इहे, इहो, उहे, उहो,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौने, जवने, जवनो, तौंने, तौनो, जेहे, जेहो, सेहे, सेहो, तवने, तवनो, जेहू, सेहू वगैरह ।

(क्ष) रीतिवाचक भा गुणवाचक सर्वनाम

अइसन, एइसन, तइसन, जइसन, ओइसन, कइसन, वगैरह गुणवाचक भा रीतिवाचक सर्वनाम के प्रयोग भोजपुरी में होला ।

(त्र) परिमाण भा संख्यावाचक सर्वनाम

(क) अतहत, एतहत, कतहत, हतहत, हेतहत, ओतहत, होतहत, जतहत, जेतहत, ततहत, त्तेतहतके, तहत वगैरह ।

(ख) अतेक, एतेक, हतेक, हेतेक, ओतेक, होतेक, जतेक, जेतेक, ततेक, तेतेक, कतेक, केतेक वगैरह ।

(ग) अतना, एतना, हतना, हेतना, ओतना, होतना, जतना, जेतना, ततना, तेतना, कतना, केतना वगैरह ।

सार्वनामिक क्रियाविशेषण

(क) रीतिवाचक—अइसे, ओइसे, जइसे, तइसे, तेइसे, कइसे वगैरह ।

(ख) कालवाचक—एहवेरा, हेवेरा. एहजुन, हेजुन, ओहवेरा, हेवेरा, ओहजुंन, होजुन, जेहवेरा, जेहजुन, तेहवेरा, केहवेरा वगैरह ।

(ग) स्थानवाचक - इहवाँ, हिहवाँ, उहँवाँ, हुहवाँ, जहवाँ, तहवाँ, कहवाँ, इहाँ, हिहाँ, उँहाँ, हुँहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, एहिजाँ, ओहिजा, ओइजाँ, होहिजाँ, एठन, एठिन, ओठन, ओठिन, जेठन, जेठिन, तेठन, तेठिन, केठन, केठिन, केठे, एहीठइयाँ, ओहीठईंया वगैरह ।

(घ) दिशावाचक - एने, हेने, ओने, होने, जेने, केने, तेने वगैरह । एकरा अलावा एहर, ओहर, होहर, जेहर, तेहर, केहर के प्रयोग पावल जाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ ९

विशेषण

परिभाषा—कवनो संज्ञा भा सर्वनाम के विशेषता वतावे वाला विकारी शव्दन के विशेषण कहल जाला। जवना संज्ञा भा सर्वनाम के विशेषता वतावल जाला ओकरा के 'विशेष्य' कहल जाला। विशेषण लागि गइला प विशेष्य के अर्थ सीमित हो जाला यानी विना विशेषण के विशेष्य (संज्ञा) से जतना वस्तु के वोध होला, ऊ विशेषण लागि गइला प कम हो जाला, जइसे करिआ लइका। एहिजा करिआ शव्द लइका के विशेषता वतावता। एह से 'लइका' शव्द विशेष्य आ करिआ शव्द विशेषण भइल वाकी लइका शव्द जतना व्यापक वा ओतना 'करिआ लइका' शव्द नइखे। लइका कहला से त गोर करिआ, साँवर वगैरह सभ रंग के लइका के वोध होता। 'करिआ' विशेषण लागि गइला प खाली करिए लइका के वोध होता वाकी रंग के लइकन के ना। एह से संज्ञा (विशेष्य) के अर्थ विस्तार सीमित करेवाला शव्द के विशेषण कहल जाला।

वाक्य में विशेषण के प्रयोग दू तरह से होला—एगो त ऊ उद्देश्य पक्ष में संज्ञा के साथ लागेला आ दोसरे विधेय पक्ष में क्रिया के सङे। उद्देश्य पक्ष में संज्ञा के सङे लागेवाला विशेषण के उद्देश्य विशेषण कहल जाला। उद्देश्य विशेषण संज्ञा के पहिले आवेला, जइसे पाकल आम टपकल। मथुरही भइँस ढेर दूध देलसि। विधेय पक्ष में क्रिया के सङे लागि गइला प ओह विशेषण के 'विधेय विशेषण' कहल जाला, जइसे आम त मीठ पवलीं। राम गते-गते लिखतारे। विधेय विशेषण क्रिया के पहिले आवेला।

विशेषण से प्राणीवाचक संज्ञा आ अ—प्राणीवाचक संज्ञा के लिंग के जानकारी होला, जइसे वड़का वावूजी, वड़का भइया आ वड़की माई, वड़की भउजी, वड़की वाल्टी, वड़का वाल्टा, वड़का पटिहाट, वड़की खाटी।

ई जरूरी नइखे कि सभ विशेषण से संज्ञा के लिंग के जानकारी होखवे करो। वहुत से विशेषण के रूप दूनो लिंग में ना वदले, जइसे—सुन्नर वेटा, सुन्नर वेटी। सूध वएल, सूध गाइ। चल्हांक लइका, चल्हांक लइकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशेषण के तीन अवस्था पावल जाला—(क) मूलावस्था भा सामान्यावस्था (ख) उत्तरावस्था (ग) उत्तमावस्था।

(क) मूलावस्था भा सामान्यावस्था से मामूली भा साधारन रूप के बोध होला. जइसे—राम चल्हांक ह।

(ख) उत्तरावस्था से दू के बीच अधिक भा कम के बोध होला, जइसे—राम से मोहन अधिक चल्हांक ह। मोहन से राम कम चल्हांक ह।

(ग) उत्तमावस्था से दू आ दू से अधिक वस्तु में कवनो एगो सभ से अधिक भा सभ से कम अवस्था के बोध होला, जइसे—राम सभ लइकन से अधिक चल्हांक ह। मोहन हमरा दूनो लइकन में कमजोर वा।

विशेषण शब्द के तीन रूप होला—(क) साधारन (ख) गुरु (ग) गुरुतर।

साधारन	गुरु	गुरुतर
माझिल	मझिलका	मझिलकवा
छोट	छोटका	छोटकवा
नीमन	नीमनका	नीमनकवा

गुरु रूप 'अका' आ गुरुतर रूप 'अकवा' के मेल से वनेला।

उत्तरावस्था में तुलनात्मक भाव जादा, वढ़िके, अधिक, कम वगैरह शब्द तुलनात्मक विशेषण के पहिले लगाके परगट कइल जाला, जइसे—

वसंती मीरा से जादा खिसिआह ह!

सोकना वएल कइला वएल से वढ़ि के पनिगर ह।

तूं हमरा से अधिका जानेल।

अभय अजय से कम तेज ह।

उत्तरावस्था में कवो-कवो तुलनात्मक भाव ओनइस, बीस के प्रयोग से मालूम होला, जइसे—कमला आशा से लमाई में वीस विया।

आशा कमला से उमिर में ओनइस विया।

उत्तरावस्था में तुलनात्मक संज्ञा के वाद में 'से' भा 'में' लगाके तुलनात्मक भाव परगट कइल जाला, जइसे—हई मेहरारू ओकरा से गोर विया; ई लइकी ओकरा से साँवर विया; भोजपुर के गाँवन में हमार गाँव मेहीन ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तमावस्था के परगट करे खातिर उत्तरावस्था के शब्द के पहिले 'सभ में', 'सभ से' भा 'सभ में बढ़िके' लगाके बनावल जाला, जइसे—

(क) ऊ अपना घर भर में सभसे जादा पढ़ल हवे।

(ख) ई लइका सभ में नीक बा।

(ग) ई लउरि सभ से बढ़ियां बिया।

(घ) हमार गाँव सभ गाँवन में बढ़ि के लठिधर ह।

विशेषण में खास प्रभाव बोध करे खातिर 'ओ' लगावल जाला, जइसे—ई सेव खटो बा आ मीठो बा।

विशेषण के पाँच भेद कइल जाला—

(१) गुणवाचक (२) संख्यावाचक (३) परिमाणवाचक (४) सार्वनामिक विशेषण (५) व्यक्तिवाचक विशेषण।

(१) गुणवाचक विशेषण—गुणवाचक विशेषण ऊ ह जवना से संज्ञा भा सर्वनाम के गुण, रूप, रंग, अवस्था, दशा वगैरह के बोध होला, जइसे—चतुर बालक; लाल घोड़ा; बेमार मनई; छोटकी बिटिया; नया किताब; सूध गाइ वगैरह।

एकर नीचे लिखल छव गो भेद कइल जा सकत बा—

(क) कालसूचक—नया, पुरान वगैरह।

(ख) आकारसूचक—चवकोर, गोल वगैरह।

(ग) रंगसूचक—लाल, पीअर, करिआ वगैरह।

(घ) दशासूचक—पातर, मोट, भारी वगैरह।

(ङ) गुणसूचक—आधा, बाउर वगैरह।

(च) स्थानसूचक—ऊँच-नीच।

(२) संख्यावाचक विशेषण—ऊ ह जवना से संज्ञा भा सर्वनाम के संख्या यानी गिनती भा अनिश्चित भा निश्चित संख्या के बोध होखे, जइसे—दूनो, तीनू, चारू, दसो वगैरह। एकर मुख्य रूप से दू गो भेद होला—(क) निश्चित संख्यावाचक (ख) अनिश्चित संख्यावाचक।

(क) निश्चित संख्यावाचक

निश्चित (पक्का) भाव जतावे खातिर संख्या में 'ओ' भा ऊ जोड़ि के बनावल जाला, जइसे दूनो, तीनू, चारू, नवो, बारहो वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निश्चित संख्यावाचक के भेद

(अ) पूर्णांकवोधक—एक, दूइ, तीनि, चार वगैरह।

(आ) अपूर्णांकवोधक—पाव, आधा, डेढ़, अढ़ाई, अँगूठा, ढँगुचा, पहुँचा वगैरह।

(इ क्रमवोधक—पहिला, दूसरा, तीसरा वगैरह।

(ई) आवृत्तिवोधक—दूगुना, तिगुना, चउगुना।

(उ) समुदायवोधक – दूनो, तीनो, चारो, नहला, दहला, पंजा, चउका, सत्ता।

(ऊ) प्रत्येकवोधक—हर रोज, दू-दू, एक-एक।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक

अनिश्चित भाव परगट करे खातिर संख्या में 'अन', 'आनि' भा 'अन्हि' जोड़ि के वनावल जाला, जइसे—हजारन, सैंकड़न, बीसनि, बीसन्हि, तीसनि, तीसन्हि, एकाध, तीनि-चार, दस-बीस, आठ-दस वगैरह।

(३) परिमाणवाचक विशेषण

जवना विशेपण से कवनो नाप, तउल के वोध होखे ओकरा के परिमाण वोधक विशेपण कहल जाला, जइसे—थोरिका दूध, सभ भाव, कुल्हि घीव, पूरा परिवार, सभ राज-पाट वगैरह।

खास वात

एह विशेपण के प्रयोग जव एकवचन संज्ञा के सङे होला तव इन्हनी से अनिश्चित परिमाण के वोध होला, वहुवचन संज्ञा के साथे इन्हनीका अनिश्चित संख्यावाचक वन जाले स, जइसे—

परिमाणवाचक	अनिश्चित संख्यावाचक
सभ भात	सव लोग
वहुत घीव	वहुत मनई
थोरकी चाउर	कुल्हि गाइ

परिमाणवाचक विशेपणों के दू भेद होला—निश्चित आ अनिश्चित।

(अ) **निश्चित परिमाणवाचक**—जवन संख्यावाचक विशेषण के साथे परिमाणवाचक संज्ञा के प्रयोग कइला प वनेला, जइसे—दू मन चाउर, एक किलो सोना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) अनिश्चित परिमाणवाचक—थोरकी चाउर, ढेर बहुत सोना, तनिका पानी वगैरह।

(४) सार्वनामिक विशेषण

जवन सर्वनाम अपना संज्ञा के साथ आके ओकर विशेषता बतावे ओकरा के सार्वनामिक विशेषण कहल जाला, जइसे—ई गाइ हमार ह। अइसन बात रउआ कहत बानी ?

एकर दू भेद होला—(क) मूल आ (ख) यौगिक

(क) मूल सार्वनामिक विशेषण

ऊ घर हमार ह। ई घोड़ा तोहार ह। एहिजा 'ऊ' आ 'ई' मूल सार्वनामिक विशेषण बा। ई कवनो दोसरा शब्द के योग से नइखे बनल।

(ख) यौगिक सार्वनामिक विशेषण

जइसन करनी ओइसन भरनी। जतना आमद ओतना खरच। एहिजा जइसन, ओइसन, जतना, ओतना यौगिक सार्वनामिक विशेषण बा। ई सभ दू शब्दन के योग से बनल बा।

(५) व्यक्तिवाचक विशेषण

व्यक्तिवाचक विशेषण में व्यक्तिवाचक शब्दन से विशेषण बनेला, जइसे—भागलपुरी चादर, बनारसी साड़ी, मिर्जापुरी लाठी, नागपुरी संतरा, काश्मीरी सेव, काश्मीरी मरिचा, भोजपुरिया पहलवान वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वचन

परिभाषा—वचन से संज्ञा भा सर्वनाम के संख्या के वोध होला। ई दू तरह के होला—(क) एकवचन आ (ख) वहुवचन।

एकवचन

जवना संज्ञा भा सर्वनाम से एके संख्या के वोध्र होखे ओकरा के एकवचन कहल जाला, जइसे—लइका आवता। वएल के सानी गोति द। तूं खा तार। ऊ खा तारे। फेड़ प आम फरल वा।

बहुवचन

जवना संज्ञा भा सर्वनाम से एक से अधिक संख्या के वोध होखे ओकरा के वहुवचन कहल जाला, जइसे—लइका सभ आवतारे। बएलन के सानी गोंति द। तू लोग खा तार। ऊ सभ लोग खा तारे। फेड़न प आम फरल वा।

एकवचन से बहुवचन वनावे के कुछ नियम

१. न, अन, इन, उन, अन्ह, आन्हि, न्ह, अनि वगैरह प्रत्यय के सहायता से एकवचन से वहुवचन वनेला, जइसे—

प्रत्यय	एकवचन	बहुवचन
न	लइका	लइकन
	वएल	वएलन
	लोटा	लोटन
	कलसा	कलसन
	कहाँर	कहाँरन
	जोलहा	जोलहन
	गगरा	गगरन
इन	नदी	नदिन
	धोती	धोतिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्यय	एकवचन	बहुवचन
इन	लड़की	लड़किन
	खुरु्पी	खुरुपिन
	काँटी	काँटिन
	काँड़ी	काँड़िन
	खँजड़ी	खँजड़िन
	मिठाई	मिठाइन
	चिट्ठी	चिट्ठिन
अन	किताब	किताबन
	कबूतर	कबूतरन
	खरहा	खरहन
	पिलुआ	पिलुअन
	डब्बा	डब्बन
	मेवा	मेवन
उन	साधू	साधुन
	बालू	बालुन
	आलू	आलुन
अन्ह, अन्हि, न्ह, नि, अनि	घर	घरन्ह, घरन
	चमार	चमारन, चमारन्ह, चमारन्हि, चमारनि
	गाँव	गाँवन, गाँवन्ह, गाँवन्हि गाँवनि
	गाइ	गाइन्ह, गाइन्हि
	दिआ	दिअन्ह, दिअन्हि, दिअन, दिअनि
	बाग	बागन, बागन्ह, बागनि
	नाद	नादन, नादन्ह, नादनि
	लोढ़ा	लोढ़न्ह, लोढ़नि

भोजपुरी में एकवचन से बहुवचन बनावे खातिर सभ, लोग, गन वगैरह शब्दन के जोड़ल जाला, जइसे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकवचन	बहुवचन
लइका	लइका लोग, लइकन सभ, सभ लइका
वकील	वकील लोग, वकील सभ
विद्यार्थी	विद्यार्थी लोग/सभ विद्यार्थी गन/वर्ग
रउरा	रउरा सभ, रउरा सभन, रउरा सभन्ह, रउरा सभनी, रउरा लोग, रउरा लोगनी
तेली	तेली लोग/सभ
देवता	देवता लोग'सभ/देवता लोगनी
रोटी	सभ रोटी, रोटी सभ

३. 'सभ' शब्द के पहिलहूँ जोड़ि के वहुवचन वनावल जाला, जइसे—सभ भात खा जइह। सभ रोटी खतम हो गइल। सभ दही ओरा गइल। सभ सोना विका गइल। सभ कलम खराव वा। सब दिन एक लेखा ना रहे।

४. अधिकतर भोजपुरी शब्दन के एकवचन आ वहुवचन में एके लेखा रूप चलेला, जइसे—राउर चारो चिट्ठी मिलली स। दूगो आउर रोटी दीं। सभ कूकुर काशी जइहें त हाँड़ी के ढूँढ़ी? दसगो आम द। घीव वाइस रोपेआ किलं. विकाता। चिरईं आकास में उड़तारी स वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ ११

लिंग

परिभाषा—लिंग के मतलब होला चिन्ह भा पहचान। लिंग संज्ञा के ओह चिन्ह के कहल जाला जवना से ओकरा (नर भा मादा) जाति के बोध होला। ई पहचान तीन तरह से कइल जाला—

१. शब्द के अर्थ के अनुसार।

२. शब्द के रूप के अनुसार।

३ शब्द के व्यवहार के अनुसार।

लिंग के भेद—भोजपुरी में दुइयेगो लिंग वा (क) पुल्लिग आ (ख) स्त्रीलिंग। अर्थ के अनुसार नरजाति के वोध करेवाला संज्ञा पुल्लिग आ मादा जाति के वोध करेवाला संज्ञा स्त्रीलिंग होला।

अधिकतर प्राणीवाचक शब्द के प्रयोग अर्थ के अनुसार आ अप्राणीवाचक शब्द के प्रयोग रूप आ व्यवहार के अनुसार पुल्लिग भा स्त्रीलिंग में होला।

प्राणीवाचक संज्ञा शब्दन के अधिकतर जोड़ा होला, एहसे अर्थ प ध्यान देला से उन्हनी के लिंग-निर्णय में कठिनाई ना होखे। पहचान एकदम आसान वा—(१) जवना प्राणीवाचक नाँव से नर के वोध होखे ऊ पुल्लिग ह, जइसे—वावूजी, भइया, ववुआ, घोड़ा, वएल, वकरा वगैरह।

(२) जवना प्राणीवाचक नाँव से मादा के वोध होखे ऊ स्त्रीलिंग ह, जइसे—भाई, वहिन, भउजी, ववुनी, घोड़ी, गाइ, वकरी वगैरह।

(३) मनई के अलावा कुछ अइसन प्राणीवाचक शब्द वाड़े स जवना से नर-मादा दूनो के वोध होला वाकी प्रयोग के अनुसार एके लिंग के व्यवहार होला यानी खाली पुल्लिगे भा खाली स्त्रीलिंगे में, जइसे—

पुल्लिग—कउवा, उरुआ, उड़िस, ढील, झींगुर, चीलर, माँटा वगैरह।

स्त्रीलिंग—चिरई, कोइलर, रूखी, तितली, चील्ह, माछी, मछरी वगैरह।

एहीतरी प्राणी के समुदायवाचक नाँवों प्रयोग के अनुसार पुल्लिग भा स्त्रीलिंग होला, जइसे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुल्लिग—जमाव, मेला, जखेड़ा, दल, झुण्ड वगैरह।
स्त्रीलिंग—भीड़ि, जमाति, टोली वगैरह।

प्राणीवाचक शब्दन के लिंग निर्णय के तरीका—

भोजपुरी में प्राणीवाचक शब्द के लिंग-निर्णय के तीन गो तरीका वा—

१. क्रिया से—	लइका जाता।	पु०
	लइकी जातिया।	स्त्री०
२. विशेषण से—	वड़का लइका।	पु०
	वड़की लइकी।	स्त्री०
३. प्रत्यय से	चाचा (आ)।	पु०
	चाची (ई)।	स्त्री०

प्राणीवाचक पुल्लिग शब्दन के स्त्रीलिंग वनावे के तरीका

पुल्लिग से स्त्रीलिंग वनावत खा पुल्लिग शब्द के अन्त में ई, इन, आइन, आनी प्रत्यय लगावल जाला, जइसे—

'ई' प्रत्यय लगवला से पुल्लिग से स्त्रीलिंग

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
काका	से	काकी	
चाचा	"	चाची	
वेटा	"	वेटी	
मामा	"	मामी	
नाना	"	नानी	
घोड़ा	"	घोड़ी	
वकरा	"	वकरी	वगैरह

'इन' प्रत्यय लगवला से पुल्लिग से स्त्रीलिंग

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
डोम	से	डोमिन	
चमार	"	चमइन	
हत्यार	"	हत्यारिन	
दुसाध	"	दुसाधिन	
सोनार	"	सोनारिन	वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

‘आइन’ प्रत्यय लगवला से पुल्लिग से स्त्रीलिंग

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
तिवारी	से	तिवराइन	
ओझा	"	ओझाइन	
दूबे	"	दुवाइन	
मिसिर	"	मिसिराइन	
लाला	"	ललाइन	
मलाह	"	मलाहिन	
बनिया	"	बनिआइन	वगैरह ।

‘आनी’ लगवला से पुल्लिग से स्त्रीलिंग

पुल्लिग		स्त्रीलिंग
देवर	से	देवरानी
जेठ	"	जेठानी
सेठ	"	सेठानी
नोकर	"	नोकरानी
मेहतर	"	मेहतरानी

अप्राणीवाचक शब्दन के लिंग–निर्णय के तरीका

प्रयोग के अनुसार—नीचे लिखल अप्राणीवाचक शब्द पुल्लिग होले सन :—

(क) ग्रह के नाँव—सुरुज, चनरमा, मंगर, सुकवा, सनिचरा, राहु, केतु वगैरह । (पु०)

अपवाद—धरती, पृथ्वी, जोन्ही वगैरह स्त्रीलिंग होला ।

(ख) जल, थल वगैरह के नाँव—
देस, नगर, द्वीप, पहाड़, समुन्दर, आसमान, पताल, पोखरा वगैरह (पु०) ।

अपवाद—नदी, चोटी, घाटी वगैरह स्त्रीलिंग ।

(ग) देस के नाँव—भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, चीन, जापान, पाकिस्तान वगैरह (पु०) ।

(घ) परबत के नाँव—हिमालय, विन्ध्याचल, दलमा (पु०) ।

(ङ) समुन्दर के नाँव—हिन्दमहासागर, प्रशान्तमहासागर, अरबसागर, लालसागर वगैरह (पु०) ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(च) समय के विभाग के नाँव—वरिस, महीना, हप्ता, दिन, पहर, पख, पखवारा, पल, मिनट, छन, सुवह, सेकण्ड, वगैरह (पु०)।

अपवाद—खरउरिया, तिझरिया, करनिनिया, साँझि वगैरह स्त्री०)।

(छ) धातु के नाँव—सोना, पीतर, लोहा, तामा, काँसा, टीन, फूल वगैरह (पु०)।

(ज) अनाज के नाँव—जव, चाउर, वजड़ा, मटर, वूँट, तेलहन, जनेरा, गहूँ वगैरह (पु०)।

अपवाद—मसुरी (मसुरी छोटी-छोटी विया), खेसारी, अँकरी (पसरल विया); (तीसी फुलाइल विया) स्त्री०।

(झ) वहेवाला (तरल) भोजन के नाँव—घीव, तेल, पानी, दही, माठा, सरवत, सिरिका, दूध वगैरह (पु०)।

(ञ) वएल गाड़ी के अंग के नाँव—वरन, पाट, करुआर, समई, जोता, पहिया, मोहड़ा, धूरा, फड़, जोका, तेतुरा, वगैरह (पु०)।

अपवाद—ढोलकी, आँवनि, कीली (स्त्री०)।

(ट) शरीर के अंग के नाँव कान, मुँह, दाँत, ओठ, गोड़, हाथ, महमण्ड, कपार, गाल, तारू, नोह, रोवाँ, नाक, गाट, जाँच, खाल, चाम, नस, काँख, पंखा, ठेहुन, छाती, फीली, हाड़, वाता, वार, दाढ़ी, पेट, गरदन, मलपट वगैरह (पु०)।

अपवाद—पीठि, मोंछ, वाँहि, जीनि, आँखि, केहुनी वगैरह स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग होला।

प्रयोग के अनुसार नीचे लिखल शब्द स्त्रीलिंग होला—

(क) नक्षत्र के नाँव—हथिया, रोहनी, सेवाती वगैरह (स्त्री०)।

अपवाद—अदरा, असरेसा, मघा, पुरवा, पुनरवस, चित्रा वगैरह (पु०)।

(ख) नदी के नाम—गंगा, जमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, रावी, झेलम, गंडक वगैरह (स्त्री०)।

अपवाद—सोन, व्रह्मपुत्र वगैरह (पु०)।

(ग) मसाला के नाँव—इलायची, दालचीनी वगैरह (स्त्री०)।

अपवाद—जीरा, नून, तेजपात, मरिचा वगैरह (पु०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(छ) भोजन के नाँव—पूड़ी, रोटी, कचउड़ी वगैरह (स्त्री०)।
अपवाद—भात, दही, पराठा, हलुआ, पेंड़ा वगैरह (पु०)।

२ अप्राणीवाचक शब्दन के पहचान

अप्राणीवाचक शब्दन के लिंग के पहचान ओकरा साथे विशेषण भा क्रिया के प्रयोग कइला से होला :—

पुल्लिंग

(क) अकारान्त शब्द जवन प्रयोग से पुल्लिंग होलन स :—घर, दुआर, मचान, परात (बड़का परात द), फेड़ (झँगटहवा फेड़ मोजराइल बा), बाँस (बाँस पाकल बा), छत (छत चूअता), आम (आम पाकल बा), अमरूध (बड़े-बड़े अमरूध बा), गाँज (गाँज बड़ बा), खोंप (खोंप बढ़िया बा), राह (ई राह कहाँ जाता ?), कूट (बड़का कूट), मेंह (मेंह हिलता), खेत (खेत सुखाता), हर (हर चलता), राजपुर (बड़का राजपुर,—एह नाँव के गाँव भोजपुर में बा)।

एही तरी अउर अकारान्त शब्द पुल्लिंग होलन स :—जुआठ, पीपर, बूँट, बबूर, फार, लूक, गरू, जमीन, आङन, लोर, असकत, अबटन, कचरकूट, कदम, अवजार, कपास, कपूर, कफन, कमाल, खँखार, खेलवाड़, खेल, जमघट, जेल, झोंक, झूठ, जोश, ठाट, ढोल, टूँड़, दहेज, दरबार, दुलार, देहात, पकवान, बात, बिरह, लालच, सेवार, किताब, कागज, कलम, कलछुल, बाकस, जोंक, उड़िस, गोजर, मोर वगैरह।

अपवाद (जवन प्रयोग में स्त्रीलिंग होला)—

हरिसि (हरिसि नीमन बिया), सड़क (सड़क कहाँ जातिया), सरकार (सरकार अकुताइल बिया), साइकिल (साइकिल खराब बिया), रेल (रेल आवतिया), कमीज (कमीज फाटल बिया)।

(ख) आकारान्त शब्द जवन प्रयोग से पुल्लिंग होलन स :—

हवा (हवा बहता), पछुआ (पछुआ बहता), हाथा (बड़का हाथा आवता), दखिनहा (चलता), उतरहा (चलता), दिअरखा (बड़का दिअरखा), घोड़मुहाँ (घोड़मुहाँ बढ़िया बा), खपड़ा (चुअता), नरिया (नरिया पाकल बा), रहरेठा (झोंकाता), सिंहनपुरा (बड़का सिंहनपुरा/छोटका सिंहनपुरा—एह नाँव के गाँव भोजपुर में बा।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहीतरी अउर नीचे लिखल अकारान्त शब्द प्रयोग से पुल्लिग होलन स :—

केला, ढाठा, भूसा, राहता, गड़हा, लरहा, खावा, करहा, बगइचा, हेंगा, खूँटा, बिआ, पैना, गोदा, महुआ, बहेरा, अँवरा, लोटा, छनवटा, वाल्टा, पहिआ, जोता, ढकना, भाला, पचखा, लेवा, डोरा, बरछा, गमछा, माजा, जामा, इशारा, कटोरा, खेलवना, घपला, चिरुआ, छाता, टीका, गहना, समिआना, तरीका, धनिया (मसाला), बनिया वगैरह।

अपवाद यानी आकारान्त शब्द जवन प्रयोग से स्त्रीलिंग होलन स :—

पुरवइया (पुरवइया झकझोरले बिया), खटिया (छोटकी खटिया, बड़की खटिया), जमुनिया (पाकल बिया), रहतिया (ई रहतिया कहाँ जाई ?), पकड़िया (बड़की पकड़िया तर होइहें), थरिया (छोटकी थरिया भुला गइलि) वगैरह।

(ग) प्रयोग के अनुसार ह्रस्व आ दीर्घ इकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होलन स :—

वालू (वालू धीकल वा), रखाँतु (लागल वा), गहूँ (गहूँ दँवाता), आलू (खराब वा), कल्हू (चलता), चीझु (चीज) (कवनो चीझु चमकता), राहु (राहु चढ़ल वाड़े)।

एहीतरी अउर शब्द—खड़ाऊँ, हिन्दू, तम्बू, नीबू, मधु, लट्टू, लहू वगैरह।

स्त्रीलिंग

प्रयोग के अनुसार ह्रस्व आ दीर्घ इकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होले सन :—राति (राति हो गइलि), नदी (नदी बढ़िआइल बिया), उतरही (ललकरले बिया), फुहेरी (बड़ सुन्नर फुहेरी चलतिया) खाटी (बड़की खाटी टूटि गइलि), चउकी (टुटही चउकी), धरनि (बीच वाली धरनि), गली (गली तंग बिया), गड़ही (भरतिया), वाल्टी (छोटकी वाल्टी), भरवली (छोटकी भरवली, बड़की भरवली—एह नाँव के गाँव भोजपुर में बा)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयोग के अनुसार एहीतरी अउर ह्रस्व भा दीर्घ इकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होलन स :—

दँवरी, लरही, लकड़ी, डाढ़ि, टाँड़ि, सेमि, वइरि, गूलरि, कोइनि, विरवाई, छिपुली, लोटकी, सिआही, माटी, वरी, कीली, आँवनि, गगरी, गँड़ासी, खुरुपी, डोरि, अलमारी, अङ्वछी, अङुरी, गमछी, आन्ही, मसुरी, जोन्ही, धरती, पृथ्वी, रोटी, टोपी, उदासी, थइली, राति, भीति, वेमारी, दालि, दूवि, चिट्ठी, लाठी वगैरह।

अपवाद—प्रयोग के अनुसार जवन ह्रस्व भा दीर्घ इकारान्त शब्द पुल्लिग होलन स :—

पतई (पतई झरता), जलकोवी (सुखाइल वा), वालि (वालि टूटता), कोवी (कोवी छोट वा), रमतरोई (जुआता), सुथनी (छिलाता), पानी (खराव वा), समई (वैलगाड़ी के अंग—समई टेढ़ वा), मोटि (चलता), पाँकी (महँकता), कोरई (सरल वा), फीली (दुखाता), चानी (चमकता), कुटी (कटाता), रहनि (उनुकर रहनि विगदल वा), भभूति (मलाता), सूदि (दिआता)।

एहीतरी अउर शब्द :—

सरदी, गल्ती, आरि, छूरी, आमदनी, नासपाती, पुलुई वगैरह।

(ख) प्रयोग के अनुसार अन्त में 'इया' लागल शब्द स्त्रीलिंग होलन स :—

पुरवइया (वहतिया), खटिया (वड़की खटिया), रहतिया (कहाँ गइल विया), सतपुतिया (झोंपाइल विया), महुइया (चूअतिया), थरिया (छोटकी थरिया), डेहरिया (खुलल विया)।

एहीतरी अउर शब्द स्त्रीलिंग होलन स :—

नगरिया, वछिया[1], विछुकुतिया[1], खरउरिया, डिविया, धनिया[1] (मेहरारू), कनिया[1] वगैरह।

अपवाद—दुपहरिया (भइल वा), धनिया (सरल वा), किरिया (परल वा) वगैरह।

---

१. प्राणीवाचक शब्द हवे सन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिंग-कोश

पुंल्लिग

अड़चन, अपील, अफवाह, अफीम, अमावट, अलमारी, अइँठन, अउकात, अवलाद, अचानक, अंगूर, अनार, अरमान, अदरख, आँच, आँव, आँत, अँचार, आदत, आफत, आय, आवाज, आह, आटा, इंच, इजाजत, इन्तिहान, इमारत, इनार, इनकार, इन्तजाम, इजलास, ईंट, उछल-कूद, उठ-वइठ, उड़ान, उधेड़ बून, उपज, उमंग, उमेद, उमिर, उलझन, उलट-पलट, उमस, उड़िस, ओट, ओठ, ओल, ओठँघन, कटार, कड़क, कतरन, कवुरगाह, करतूत, करवट, करामात, कसम, कसर, कसरत, कहावत, काँख, कारनिस, कएड़, कंठ, कान्ह, कान, कठवत, कटहर, कन, करुवार, करार, तकरार, दरकार, ललकार, पुकार, दुआर, खोभार, कारिख, किताव, किफायत, किरिन, किसमिस, कीमत, कुसल, कपास, कँहरल, कलह, करनी, किसमत, केंचुल, कोसिस, कोख, कोड़ि, कोदो, कोंहड़, कोरई, खटपट, खवर, खाद, खान, खाल, खरवूजा, खाझा, खर्ह, खरहा, खटमल, खन्ता, खीर, खोराक, खेत, खुसामद, खोंच, खोज, खोल, खोइला, खोंप, गंध, गन्धक, गजल, गठन, गठिया, गरज, गरदन, गल्ती, गहना, गजरा, गड़ास, गरमी, गाँठ, गाजारा, गिरह, गुंजाइस, गुफा, गोद, गति, गोवर, गिलास, गुलाब, गेना, गेंग, गूर, गूर्ही, गूङ, घाटा, घास, घिन, घुड़वउर, घुमाव, घूस, घटाव, घाव, घात, घूघ, घाट, घाम, घोंट, घूर, घून, चोन्हर, चटक, चपेट, चमक, चमचम, चहल-पहल, चाट, चाह, चाल, चिढ़, चूक, चउखट, चकमक, चोकर, चक्कर, चप्पल, चरखा, चाल-चलन, चिउरा, चिराक, चीलर, चएन, चसमा, चोखा, चोंच, चोप, चोट, छड़, छत, छमाछम, छलाँग, छाँह, छानवीन, छाप, छाल, छुआछूत, छमा, छोट, छल, छोर, छोह, छीपा, छुतिहर, छोह, जगह, जवाव, जमात, जरूरत, जलन, जहर, जाँघ, जाँच, जात-पात, जान, जयदात, जिद, जिरह, जिल्द, जीत, जूठन, जेव, जोंक, जाल, जोस, जलपान, जोंका, जमोटि, जुलाव, जवाव, जुझार, जेल, झंझट, झपट, झलक, झालर, झाँझ, झालर, झिझक, झील, झाड़ू, झूठ, झोंक, झोल, झालर, झाल, टप, टमटम, टाँग, टालमटोल, टीस, टेक, टेण्ट, टेर, टोक, ट्राम, टीका, टूँड़, टिकट, टेवुल, ठंढ, ठंढक, ठेस, ठोकर, ठाट, ठहर, ठेहुन, ठूँठ, ठोकच, ठीक, ठेहा, ठठेरा, डपट, डाँट, डाह्, डींग, डीठ, डोंड़, डाँठ, डमरू, डोम, डोमकच, ढाल, ढोलक, ढकन, तकदीर, तकरार, तकलीफ, तवीयत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तमीज, तरंग, तरकीव, तरुवार, तउल, तलास, तसरीफ, तसवीर, तह, ताकत, तरकीब, तारीख, तारीफ, तालीम, तासीर, तुक, तोप, तिजारत, तरबूजा, तास, तवीज, तितर, तीर, तेतुरा, तोन, थकावट, थाप, थाह, छपर, थूक, थोक, दतुअन, दर, दराज, दलदल, दवा, दहाड़, दाव, दिक्कत, दिअर, दुआ, दोकान, दोत्रिधा, दउड़-धूप, दया, दउर, दंगल, दखल, दरबार, दहेज, दाँत, दाग, दारू, दुलार, देहात, दिया, दगा, दूर, दूरवीन, देखभाल, देन, देर, देह, देखरेख, दउर दफा, दउलत, दाग, धड़कन, धरोहर, धाक, धातु, धार, धारा, धिक्कार, धून, धूप, धूम-धाम, धूर, धोबी, नकल, नाक, नकेल, नजर, नजाकत, नाथ, नफरत, नेमाज, नस, नसीहत, नाप, नालिस, निगाह, निछावर, नीयत, नइहर, नोह, नोंक, झोंक, नेव, नउवत, नरियर, नसा, निसान, नीबू, नास्ता, नीम, नेनुआ, नगर, नवावी, नग, नमर, नाग, पीक, पताल, पत्तल, परदा, पीठ, पीव, पीर, पुकार, पुचकार, पुलिस, पिनसिन, पेचिस, पेंसिल, पएदाइस, पएदवार, पएमाइस, पोर, पोल, पोसाक, पिआस, पिस्ता, पेचकस, पेसाव, परिहथ, परवर, पाको, परात, पाट, पंखा, पाँखि, पम्प, पकवान, पछतावा, पहाड़, पाकी, पएना, पनिसरा, पलस्तर, पापड़, पीपर, पिलुआ, पनिघट, पानी, फगुनहट, फजिहत, फटकार, फटफट, फतह, फरमाइस, फरिआद, फसल, फाँक, फाड़न, फाल, फिकिर, फोस, फुहार, फूँक, फूट, फूल, फएसन, फउज, फागुन, फाटक, फिराक, फुँफकार, फोटो, फजिर, फुलवरा, फर, फुलवना, वाजार, वन्दूक, वकवास, वगल, वगावत, वचत, वटोर, बतक, वदउलत, वरसात, वरफ, वहस, वहार, वागडोर, बात, वरखा, वारूद, वूनी, वोतल, वुनियाद, वुलवुल, वूझ, वेंट, वूँट, वइठका, बोलचाल, वउछार, वाजी, वेना, वन्धक, वम, विगाड़, विगुल, वेंत, विछवना, बोखार, वेलना, वोझा, वलि, वरो, वरन, वइठक, वन्दोवस्त, वुलाक, विलार, भगदड़, भड़क, भनक, भभूति, भरमार, भाँग, भाँवर, भाफ, भीख, भीड़, भूल, भेंट, भहूं, भाग, भंगर, भजन, भार, भूकम्प, भोज, भतुआ, भोग, भूभुर, भसका, भोर, भकोल, भालू, भाला, भभीठ, मंजन, मंसा, मखमल, मचान, मजाल, मती, मंडप, मछड़, मजाक, मटर, मनमोटाँव, मकान, मालिस, माला, माली, मचान, मजाल, मजलिस, मनी, मदत, मरम्मत, मुलायम, मसाल, मसीन, मसजिद, मसलन्द, महक, महफिल, माँग, मात, माप, मार, मरकीन, मलमल, मजाक, मटर, मठ, मतलव, मंदिल, मधु, माचिस, मवाद, मंडप, मिलकियत, मिठास, मरिचा, मिसाल, मेहनत, नीटिंग, मीना, मेल, मुँगदर, मील, माँड़,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मएदान, मुँड़ेरा, मुठभेड़, मरउअत, मुलायम, मुलाकात, मुजरिम, मुलुक, मुसीवत, मुहब्वत, मोहर, मेज, मेहराव, मइल, मतलव, मोच, मोहड़ा, मोर, मोन्हा, मुलाकात, मोका, मोल, रंगत, रंज, रकम, रंग, रगड़, रट, रफ्तार, रसम, रसद, रहट, राख, रवनक, रहनि, रुमाल, रेसम, रचना, रवड़, रगड़, रेवाज, रेंड़मेवा, रहरेठा, राखांतु, रोपेआ, रूख, लकीर, लगान, लचक, लज्जत, लत, लतार, लपेट, लपक, ललक, लाग, लागत, लात, ललकार, लगन, लार, लाट, लाह, लियाकत, लूट, लोट, लालच, लंगूर, लँगोट, लगान, लोर, लउका, लोढ़ा, लट्टू, लोल, लोच, लचक, लालची, लीला, लिलार, लमछर, वोकालत, वोजह, वोटर, सतरंज, सिकार, सकल, सरन, सराव, सर्त, सान, सामत, सोहरत, संगत, संघ, संतान, सजधज, सजाइ, सड़क, सनक, सरम, सहूलियत, साँझि, साँस, साख, साध, सिगरेट, सिफारिस, सींघि, सीख, सुधि, सुवह, सुलह, सूँढ़, सूजन, सूझ, सूरत, सेन्हि, सावूत, सवूर, सितार, सफर, सवख, सोहाग, सुख, संवंध, सँघार, संसार, समाचार, समाज, सुधार, सुन्नर, सेज, सँउफ, सभा, सूत, सुजान, सिरिफल, साग, सीटी, सरदी, समान, सलाह, सोनार, सेवक, सोल्ह, हठ, हजामत, हड़ताल, हड़वड़, हद, हरकत, हर, हलचल, हाथ, हार, हालत, हिरासत, हींग, हुकूमत, हुज्जत, हकीकत, हिचक, हाँक, हाट, हवा, हानि, हरदी, हूक, हक, हलुआ, हिम्मत, हरे, हिसाव, हिआव, हेहर, हीक, हीलि, होक।

स्त्रीलिंग

नदी, चिरईं, कोइलर, रूखी, तितिली, चील्हि, माछी, भीड़ि, जमाति, टोली, इलाइची, चिरउँजी, दालचीनी, हरदी, पुरवइया, खटिया, थरिया, वाल्टी, उतरही, फुहेरी, खाटी, चउकी, धरनि, लरही, गली, रासि, भरवली, देवरी, लरही, लकड़ी, डाढ़ि, टाँड़ि, सेमि, वइरि, गूलरि, कोइनि, विरवाई, छिपुली, लोटकी, माटी, वरी, कीली, आवनि, गगरी, गड़ाँसी, खुरुपी, डोरि, अलमारी, अँगवछी, अँगुरी, गमछी, आन्ही, मसुरी, जोन्ही, धरती, रोटी, टोपी, उदासी, थइली, राति, भीति, बेमारी, दालि, दूबि, चिट्ठी, लाठी, सतपुतिया, छवरि, रासि, गड़ही, टाँगि, ढोलकी, फिली, हाँड़ी, लिट्टी, डेहरिया, एकारी, खुँखुड़ी, छुरी, चरनि, केहुनी, दलानि, चिट्ठी, कहनी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोसि, चल्हांकी, तइआरी, पटरी, दुनिया, मेहरारू, ललटेन, मोटरी, रेल, रेडियो, कॉपी, तउली, मछरी, ऊखि, ओखरि, वनउरी, कोठी; चाभुकि, जलेवी, भन्सारि, तरजुई, पाँखि, तिलंगी, बुढ़ारी, सूदि, आँखि, इमिली, कमीज, कस्तूरी, कुदारी, चदरि, घासि, चिलमि, छीटि, जरि, सोरि, जिनगी, जीभि, ट्रेन, डाढ़ि, दोवाति, देवालि, खरउरिया, नाड़ी, नीनि, नाइ, पिस्तउलि, नीवि, पीठि, पुड़िया, पुलुईं, वरिआति, वाँहि, वाढ़ि, वानि, भेंड़ि, लहरि, लीखि, किरिया, साँझि, डिबिया, विलारि, बीड़ी।

⊙

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रिया

मीना पिल्ला पकड़त विया । राम पढ़त वाड़े ।

रानी नाचत वाड़ी । ऊ खत लिखतारे ।

सूगा उड़ता । हम ठहरत वानी ।

ऊपर के वाक्यन में पकड़ल, नाचल, उड़ल, पढ़ल, लिखल आ टहरल क्रिया ह । एह शब्दन से काम कइला भा भइला के वोध होता । एहसे जवना शब्द से कवनो काम के होखल भा कइल परगट होखे ओकरा के क्रिया कहल जाला ।

धातु

मूल क्रिया वाचक शब्द के धातु कहल जाला । एह मूल शब्द (धातु) में प्रत्यय जोड़िके क्रिया के तरह-तरह के (विविध) रूप बनेला जवना के क्रिया-पद कहल जाला, जइसे ऊ वोलसु । हम वोलीं । तूं वोल । ई सभ रूप 'वोल' धातु से बनल क्रिया पद ह ।

धातु के अंत में 'ल', 'वल', 'इल' वगैरह जोड़ला से क्रिया के साधारन रूप बनेला, जइसे पढ़+ल = पढ़ल, रो+वल = रोवल, गा+वल = गावल, खा+इल = खाइल वगैरह ।

क्रिया के भेद

खास-खास क्रिया के दू भेद होला—(क) सकर्मक (ख) अकर्मक ।

(क) सकर्मक—सकर्मक के अर्थ होला 'कर्म' के साथ, जवना क्रिया में, क्रिया के फल कर्त्ता प ना पड़ि के कवनो दोसर वस्तु प पड़े ओकरा के सकर्मक क्रिया कहल जाला । सकर्मक क्रिया से मालूम पड़ेवाला व्यापार (काम) त कर्त्ता करेला वाकी ओकर फल कर्त्ता से निकलि के कवनो दोसर वस्तु प पड़ेला, ओकरे के कर्म कहल जाला, जइसे केदार किताव पढ़त वाड़े । एहिजा 'पढ़त वाड़े' क्रिया से मालूम होखेवाला काम त कइल जाता केदार से जे कर्त्ता वाड़न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकी एह काम के फल पड़ता किताब प। पढ़ल जाता किताब। एह से 'किताब' एहिजा कर्म बा आ 'पढ़त बाड़े' सकर्मक क्रिया।

कुछु सकर्मक किया एके कर्म लेले आ कुछु दूगो। जवन सकर्मक क्रिया दूगो कर्म संगे लेले ओकरा के **'द्विकर्मक'** कहल जाला, जइसे अजय विजय के मिठाई देले। एह वाक्य में दीहल क्रिया के संगे दूगो कर्म बा—विजय आ मिठाई।

(ख) **अकर्मक क्रिया**—अकर्मक के अर्थ होला बिना कर्म के। जवना क्रिया के कर्म के जरूरत ना होखे ओकरा के 'अकर्मक क्रिया' कहल जाला। अकर्मक क्रिया से मालूम होखेवाला काम आ ओकर फल कर्त्ता प पड़ेला। अभय रोवतारे। एहिजा 'रोवतारे' क्रिया के काम आ ओकर फल 'अभय' कर्त्ता प पड़ता, एहसे 'रोवतारे' अकर्मक क्रिया भइल।

उभय विधि क्रिया

कुछु क्रिया प्रयोग भेद से अकर्मक आ सकर्मक दूनो होली स। इन्हनीं के उभय भेद कहल जाला। भरल, भूलल, घिसल, लजाइल, अइँठल, बदलल, ललचावल, घबड़ाइल वगैरह अइसने क्रिया हुई स, जइसे—ओतना द जतना में पेट भरो (अकर्मक)। पहिले तूं आपन पेट त भर (सकर्मक)। हम भुलातानी (अकर्मक)। हम तहार नाँव भुलातानी (सकर्मक)। ऊ बदलि गइले (अकर्मक)। गहुम से चाउर ना बदलाई (सकर्मक)।

व्युत्पत्ति से धातु भेद

व्युत्पत्ति के अनुसार धातु के दू भेद होला—(क) मूल आ (ख) योगिक। जवन धातु कवनो दोसर शब्द के मेल से ना बनल होखे ओकरा के मूल धातु कहल जाला, जइसे कर (कइल), काँप (काँपल), कूद (कूदल) टाँक (टाँकल, टूट (टूटल), धँस (धँसल), बो (बोवल), सुन (सुनल), हार (हारल) वगैरह।

ऊपर के उदाहरन में कर, काँप, कूद, टाँक, टूट, धँस, बो, सुन, हार वगैरह मूल धातु ह आ कोष्टक में लिखल कइल, काँपल, कूदल, टाँकल, टूटल, धँसल, बोवल, सुनल, हारल वगैरह **यौगिक** धातु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यौगिक धातु के प्रकार

यौगिक धातु चार तरह के होला—(क) प्रेरणार्थक (ख) नाम धातु (ग) संयुक्त धातु (घ) अनुकरणात्मक।

(क) प्रेरणार्थक धातु—प्रेरणार्थक धातु के प्रयोग उहाँ होला जहवाँ कर्त्ता कवनो दोसर कर्त्ता के प्रेरणा से क्रिया करे। जेकरा के काम में ले आइल जाउ भा जेकरा से काम करवावल जाउ ओकरा के प्रयोज्य कर्त्ता भा प्रेरित कर्त्ता कहल जाला। जेकरा प्रेरणा से काम कइल जाला ओकरा के प्रयोजक कर्त्ता भा प्रेरक कर्त्ता कहल जाला, जइसे बाप बेटा के पोथी पढ़ावता। बाप बेटा से खत पढ़वावता। एहिजा पढ़ावता आ 'पढ़वावता' 'पढ़' मूल धातु के 'पढ़ा' आ 'पढ़वा' प्रेरणार्थक रूप से बनल प्रेरणार्थक क्रिया बा। 'बाप' प्रयोजक भा प्रेरक कर्त्ता बा आ 'बेटा' प्रयोज्य भा प्रेरित कर्त्ता।

(ख) नाम धातु—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ अव्यय शब्दन के नाम कहल जाला। एहसे एह शब्दन में (मूल धातु के छोड़ि के) प्रत्यय जोड़ि के जवन धातु बनावल जाला ओकरा के नाम धातु कहल जाला। नाम धातु बनावे खातिर संज्ञा भा विशेषण के अंत में 'आ' प्रत्यय जोड़ल जाला आ तब वल, इल वगैरह जोड़ि के क्रिया के रूप बनावल जाला। नाम धातु बनावे में अधिकतर अन्तिम दीर्घ स्वर के ह्रस्व क दीहल जाला, जइसे जीभ से जिभिआवल, आग से अगियावल, गाँठ से गँठिआवल, बात से बतिआवल, भाँग से भँगुआइल, बिलम से बिलमावल, ठेहुन से ठेहुनिआवल, हाथ से हथिआवल, दाँत से दँतिआवल, लात से लतिआवल, पीठि से पिठिआवल, काम से कमाइल वगैरह।

(ग) संयुक्त धातु (क्रिया)—दू भा दू से अधिक धातु के मेल से बनल क्रिया के संयुक्त धातु (क्रिया) कहल जाला। 'संयुक्त क्रिया' जवना धातु के मेल से बनेले ऊ धातु आपन-आपन अर्थ छोड़िके एक में मिल जाले स आ कवनो खास अर्थ परगट करेले स, जइसे कहि दीहल, पढ़ि सकल, मार दीहल, जाए लागल, लिख दीहल वगैरह।

(घ) अनुकरणात्मक धातु—झंकार, गूँज वगैरह के आवाज कइएक रूप आ प्रतीक से बनेला, जइसे टपक—टपकल, कड़क—कड़कल, कटकट—कटकटाल, पटपट—पटपटावल, खटखट—खटखटावल, खनखन—खनखनावल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तड़तड़—तड़तड़ावल, कनमन—कनमनाइल, टनटन—टनटनाइल, परपर—परपराइल, सर-सर—सरसराइल, धड़-धड़—धड़धड़ावल, हड़वड़—हड़वड़ावल, टन-मन—टनमनाइल वगैरह।

सहायक क्रिया

'हा', 'रहल', 'रहली', 'ह', 'वानी', 'वाड़', 'वाट', 'बा', 'वि' 'तानी' वगैरह के प्रयोग सहायक क्रिया के रूप में होला। ई मुख्य क्रिया के सहायक होला, एह से एकरा के सहायक क्रिया कहल जाला, जइसे ई हमार पुस्तक ह। तूं का करत वाड़ ? ऊ कहाँ जात वा ? हम खातानी। तूं का कहत वाट ? तूं का कहल हा ? ई कहवाँ रहल हा ? हम खात वानी। हम जाइवि। हम कहत रहलीं वगैरह।

टिप्पणी—भोजपुरी में विना विभक्ति के एक वर्ण के क्रिया 'ल' आ 'द' वा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाच्य

क्रिया के ओह रूप के वाच्य कहल जाला जवना से वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव के प्रधानता साफ-साफ मालूम होखे, जइसे—

मजदूर चइली फारता।	चइली फारल जातिया।
सीता फूल लोढ़तारी।	फूल लोढ़ल जाता।
तूं खत लिखव।	खत लिखल जाई।
ऊ किताव ले आवसु।	किताव ले आइल जाउ।

वाँया ओर के वाक्यन में क्रिया के जरिये उन्हनी के कर्त्ता के वारे में कहल गइल वा, वाकी दाहिना ओर के वाक्यन में क्रिया अपना कर्म के वारे में कुछ कहतिया। वाँया ओर के क्रिया कर्तृवाच्य आ दाहिना ओर के क्रिया कर्मवाच्य वाड़ी स। दूनो तरह के क्रिया अर्थ में एक लेखा वाड़ी स, वाकी उन्हनी के रूप में फरक वा जवना से जनाता कि कर्तृवाच्य में कर्त्ता के आ कर्मवाच्य में कर्म के प्रधानता रहेला। अकर्मक क्रिया में कर्मवाच्य ना रहे काहे कि उन्हनी में कर्म ना होखे।

कर्तृवाच्य क्रिया के कर्म, कर्मवाच्य में उद्देश्य हो के कर्त्ता कारक में आवेला। कर्मवाच्य में, मुख्य कर्त्ता के परगट करे के होखे त करण कारक में रखल जाला, जइसे—

वढ़ई केवाड़ी वनावता (कर्तृवाच्य)।
वढ़ई से केवाड़ी वनावल जातिया (कर्मवाच्य)।
लइका आम ना खाई (कर्तृवाच्य)।
लइका से आम खाइल जाई (कर्मवाच्य)।

कर्मवाच्य के प्रयोग

कर्मवाच्य नीचे लिखल अर्थ में आवेला।

(क) जब क्रिया के कर्त्ता अज्ञात होखे भा ओकरा के परगट करे के जरूरत ना पड़े त कर्मवाच्य के प्रयोग होला, जइसे चोर पकड़ल गइल। अव पुलिस बोलावल जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) दबदबा भा मान-मरजादा जनावे खातिर, जइसे—आजु हुकुम सुनावल जाई। तहरा के धिरावल जाता। एह ममिला के जाँच कइल जाय।

(ग) द्विकर्मक क्रिया के कर्मवाच्य में मुख्य कर्म उद्देश्य होला आ गौण (अप्रधान) कर्म जस-के-तस रहेला, जइसे—

कर्त्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सेठजी भिखारिन के दान देत बाड़े।	भिखारिन के दान दिआत बा।
गुरूजी लइकन के हिसाव बतावत बाड़े।	लइकन के हिसाव बतावल जाता।
मुन्ना अव बइठत बा।	मुन्ना से अव बइठल जाला।

ऊपर के वाक्यन में दूगो कर्म बा—

(१) भिखारिन—दान।

(२) लइकन—हिसाव।

(३) मुन्ना—वइठत/वइठल।

एह में काला शब्द, मुख्य कर्म, कर्मवाच्य में उद्देश्य हो गइल बा।

वाच्य के भेद

वाच्य तीन तरह के होला—

(क) कर्त्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य

(क) कर्त्तृवाच्य—क्रिया के ओह रूप के कहल जाला जवना से जनाय कि क्रिया के उद्देश्य ओकर कर्त्ता बा, जइसे—लइका दउरता। लइकी खत बाँचत बिया।

(ख) कर्मवाच्य—क्रिया के ओह रूप के कहल जाला जवना से जनाय कि क्रिया के उद्देश्य ओकर क ' बा, जइसे—मिरजई सियल जातिया। तहरा से ई बोझा ना उठी।

(ख) भाववाच्य—क्रिया के ओह रूप के भाववाच्य कहल जाला जवना से जनाय कि क्रिया के उद्देश्य ओकर कर्त्ता भा कर्म नइखे वलुक ओकर खाली भाव बा यानी भाव के प्रधानता होखे, जइसे—ओहिजा कइसे बइठल जाई ? पधारल जाउ। विराजल जाउ। गरमी के मारे सूतल नइखे जात।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविकारी शब्द : अव्यय

अविकारी शब्द के परिभाषा—जवना शब्द के रूप, दोसर शब्द के मेल (वचन, क्रिया वगैरह) से ना बदले, ऊ अविकारी शब्द होला। अविकारी शब्द अधिकतर अव्यय होला। क्रियाविशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चयबोधक आ विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द के भेद यानी अव्यय हवे स।

क्रिया के विशेषता, समुच्चय, सम्बन्ध आ विस्मय के अर्थ बतावे खातिर अव्यय के व्यवहार होला। एह में पहिला कोटि के अव्यय क्रिया के विशेषण होला जवन मूल रूप से संज्ञा, क्रिया भा विशेषण होला। ई क्रियाविशेषण एह से होला कि एकरा से काल, स्थान, दिशा आ रीति के सूचना मिलेला। कवो-कवो अव्यय स्वीकार (सहमति) आ निषेध (मनाही) के परगट करे खातिरो बनेला।

समुच्चयबोधक अव्यय—एक शब्द के दोसरा शब्द से भा एक वाक्य के दोसरा वाक्य से जोड़ेला, जइसे—हम आ तूं पटना चलेके। मोहन घूमि के आइल आ किताब लेके पढ़े बइठल।

विस्मयादिबोधक अव्यय—हृदय के भाव के बतावे खातिर निकलेला, जइसे—आहि हो दादा, ई का भइल ! हे राम, दुख हर !

एकरा अलावा अव्यय के नीचे लिखल प्रकार होला—

कालवाचक—अव, तव, जव, कव, आजु, काल्हु, तुरन्त, वार-वार, अठवे, कव्वो, तव्वे, जव्वे वगैरह।

स्थानवाचक—इहाँ, उहाँ, जहाँ, तहाँ, अनते, निअर, नगीच, भीतर, बाहर वगैरह।

दिशावाचक—एगे, हेने. ओने, होने, ओहर, एहर, केने वगैरह।

रीतिवाचक—अइसे, हइसे, जइसे, तइसे, गते-गते वगैरह।

प्रकारवाचक—अचानक, विरथा, सहज, लगातार, एकाएक वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिमाणवाचक—अउरी, कुल्हि, वेसी, वेस, ठीक, सँउसे, तनिकी, इचिकी, थोरकी, अतना, जतना, ततना, हतनी, कतनी वगैरह।

स्वीकार आ निषेध (मनाही)—हँ, जरूर, आछा, निहिचे, वेसक, ना, मत, नाहीं, ने वगैरह।

अभिप्रायसूचक (कहे के मतलव)—यानी, याने, विलकुल, खास क के वगैरह।

सम्वन्धवोधक अव्यय

वाक्य में आइल एगो शब्द, ओही वाक्य में आइल दोसरा शब्द से सम्वन्ध वतलावे त ओह अव्यय शब्द के सम्बन्ध सूचक कहल जाला, जइसे—दसरथ राम के विना ना जी सकिहें। कमल मदन के पाछा वा। ददन कमल के आगा वा। ई पंखा हमरा कपार के ऊपर वा।

ऊपर के वाक्य में आइल 'विना', 'पाछा', 'आगा' आ 'ऊपर' सम्वन्धवोधक शब्द वाड़े स। ई कवनो संज्ञा के वाद आ के ओकर सम्बन्ध वाक्य के दोसर शब्द के साथ वतलावतारे स।

पहिला वाक्य में	'विना'	दशरथ राम के	सम्वन्ध वतावत वा।
दूसरा वाक्य में	'पाछा'	कमल आ मदन के	,, ,,
तीसरा वाक्य में	'आगा'	ददन आ कमल के	,, ,,
चउथा वाक्य में	'ऊपर'	पंखा आ कपार के	,, ,,

एह से कहल जा सकत वा कि जवन शब्द (अव्यय) कवनो संज्ञा भा सर्वनाम के वाद आ के ओकर सम्वन्ध वाक्य के दोसर कवनो शब्द के साथ वतलावे त ओकरा के सम्वन्धवोधक कहल जाला।

सम्वन्धवोधक अव्यय के भेद

(क) साधारन (सामान्य) वाक्य संयोजक (Co-ordinating)—दू भा दू से अधिक साधारन वाक्य के जोड़ेला।

(ख) आश्रित वाक्य संयोजक (Sub-ordinating)—कवनो मुख्य वाक्य प निर्भर छोट-छोट वाक्यन के जोड़ेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) साधारन (सामान्य) वाक्य संयोजक के भेद

(अ) समुच्चयबोधक (Cumulative)

(आ) विरोधसूचक (प्रतिरोधक Adversative)

(इ) विभाजक (Disjunctive)

(ई) निश्चयसूचक (अनुधारणात्मक Conclusives)

(अ) समुच्चयबोधक--आ, अउरी, फेनु वगैरह। समुच्चय बोधक संयोजक हवे स। इन्हनी से दू से अधिक शब्द भा वाक्य के जोड़ल जाला भा इकट्ठा कइल जाला, जइसे—अव ललन आ ददन अइहें। तव सोहन अउरी मोहन जइहें। तव ललन आ फेनु ददन खइहें।

(आ) विरोधसूचक (प्रतिषेधक)—दू गो साधारन वाक्य के भाव के विरोधी होत, उन्हनी के जोड़ेला। भोजपुरी में अइसन शब्द 'वाकी' (वाकिर), 'मगर' वगैरह वाड़े स, जइसे—ससुरजी धनी त हईं बाकी केहू के एको अधेला दीहीं ना। ऊ ह त सहखर्ची मगर मोका प।

(ई) विभाजक—भा, ना, चाहे, का, कि वगैरह के प्रयोग—दू शब्द भा वाक्य के हिगरावे भा अलग करे के अर्थ में होला। दोसरा तरह से नीचे के उदाहरन में देखल जाय त ई सभ हिगरावे (विभाजन) आ मिलावे (भा जोड़े) दूनो के काम करतारे स। ई दूनो विरोधी वात वा वाकी सन्मवय बा, जइसे—

(१) मदन भा ददन खइहें।
(२) ना मदन जइहें ना सोहन।
(३) तूं जइब कि खेल करब ?
(४) तूं चाहे ऊ, केहू जाउ।
(५) का मरद, का मेहरारू सभ के एके हाल वा।

१. पहिला वाक्य में 'भा' मदन आ ददन शब्द के अलग करता आ 'खइहें' क्रिया से जोड़तो वा।

२. दूसरा वाक्य में 'ना' मदन आ सोहन के अलग करता आ 'जइहें' क्रिया से जोड़तो वा।

३. तीसरा वाक्य में 'कि' दू गो साधारन वाक्य 'तूं जइब' आ 'खेल करब' के अलग करता आ एह दूनो वाक्यन के जोड़तो वा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. चउथा वाक्य में 'चाहे' तूं आ ऊ के अलग करता आ 'जाउ' क्रिया से जोड़तो वा ।

५. पाँचवा वाक्य में 'का' प्रश्नवाचक मरद आ मेहरारू के अलग करता आ 'वा' क्रिया से जोड़तो वा ।

(ई) निश्चयसूचक (अनुधारणात्मक)—त निश्चयसूचक भाव के जतावत दू गो वाक्यन के जोड़ेला, जइसे—ऊ ना अइले त हमरा जाए के परी । तुं ना खइब त हमरा मारे के परी ।

(ख) आश्रित वाक्य संयोजक (Sub-ordinating)—जे, जेकि, जेमें, जेहमें, जो, काहें कि, जान कि, वगैरह के प्रयोग आश्रित वाक्यन के जोड़े भा मिलावे में कइल जाला, जइसे—

१. राम वतवले जे/जेकि उनुका घरे चोरी हो गइल ।

२. ऊ पइसा देले जेमें/जेहमें हम टिकठ कटालीं ।

३. जो हम सूतीं त पूछिह ।

४. सिनेमा से उठि के चल अइलीं काहेकि निमन ना लागल ।

५. ऊ अइसे चिचिआत रहे जानकि ओकर घेंटी केहू दवावत होखे ।

(ग) विस्मयादिबोधक (मनोभाववाचक) अव्यय—एकरा से खुशी, शोक, कलेस वगैरह के भाव जाहिर होला । अइसन अव्यय शव्दन से वाक्य के कवनो दोसर शव्दन से सम्वन्ध ना होखे, जइसे—राम-राम, छी–छी, चावस ! वगैरह ।

विस्मयादिवोधक के भेद :

१. सम्मति (इच्छा Assertives) सूचक—हँ ! जी ! जी हाँ !

२. असम्मति (अनिच्छा Negative) सूचक—ना ! एकदम ना ! ना त !

३. अनुमोदनसूचक (Appreciatives)—खुशी, स्वीकृति, समर्थन वतावे खातिर एकर प्रयोग होला, जइसे—वाह ! ओहो ! खूब ! बहुत खूब ! चावस ! सावास !

४. घृणा/तिरस्कार सूचक (Interjection of Disgust)—छि छि ! आक्थू ! थू थू ! थूई थूई ! दुर् ! दुर् दुर् । राम राम ! वगैरह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. भय भा कलेस सूचक—आ ! आह ! हाइ ! बापरे बाप ! माई रे माई ! वगैरह ।

६. विस्मयसूचक (Interjection of Surprise)—विस्मय सूचक से अचरज भा अचम्भा के भाव जाहिर होला, जइसे—आँ ! एँ ! ए बाबा ! ओ बाबा ! बाप रे बाप ! हरी-हरी ! राम-राम !

७. करुनासूचक (Interjection of pity)—करुना सूचक (भा बोधक) से दया, रहम भा ममता के भाव परगट होला, जइसे—आहि रे ! हाइ रे ! बाबू हो ! करेज हो ! आँखि हो ! मालिक हो ! वगैरह ।

८. आह्वान भा सम्बोधन सूचक (Vocatives) चाल पारे खातिर, नेवते भा ललकारे खातिर जवना शब्दन के परगट कइल जाला उहे आह्वान भा सम्बोधन सूचक ह, जइसे—लो रे ! (दही), अतु–अतु–अतु ! (कुकुर बोलावे खातिर), कुत-कुत-कुत-कुत ! (कुकुर के पिल्ला के बोलावे खातिर), हे ह हा ! हे ह ह ! (साँढ़ बोलावे खातिर), अ र् र् र् र् ठो ! (भइँसा बोलावे खातिर), अ र् र् र् र् छी ! (बोका बोलावे खातिर), आहित–आहित ! (भइँस बोलावे खातिर) वगैरह ।

९. अनुकारसूचक (Onomatopoetics)—अनुकार सूचक अव्यय शब्दन से ओकरा के बोले वाला भा होखे वाला संज्ञा भा ओकर सोभाव जाहिर होला, जइसे—कर्–कर, बर्–बर् (मरद चाहे मेहरारू), कू उ ऊ (कोइलर), काँव-काँव (कउवा), खाँव-खाँव (बानर), सन-सन (हवा), झन-झन (राति), टिम-टिम (टिमकी बाजतिया, दीआ जरता), धप्-धप् (ऊजर धोती), गड़गड़ाता (बादर) भक-भक (इंजन, ललटेनि) वगैरह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ १५

अविकारी शब्द : क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण के परिभाषा—क्रिया के विशेषता परगट करेवाला शब्दन के क्रियाविशेषण कहल जाला, जइसे ऊ गते-गते अवतारे। कइसे? कवना तरे? 'गते-गते'। एहिजा गते-गते शब्द 'आवतारे' क्रिया के विशेषता परगट करता। एहसे 'गते-गते' क्रियाविशेषण भइल।

क्रियाविशेषण के भेद—क्रियाविशेषण के तीन तरह से भाग (वर्गीकरण कइल जाला—

१. रूप के आधार से।

२. प्रयोग के आधार से।

३. अर्थ के आधार से।

१. रूप के आधार से—शब्द के बनावट के मोताबिक जवन शब्द क्रियाविशेषण होखे। रूप के आधार से एकर तीन भेद होला—(क) मूल क्रियाविशेषण (ख) यौगिक क्रिया विशेषण (ग) स्थानीय क्रियाविशेषण।

(क) मूल क्रियाविशेषण–जवन क्रियाविशेषण कवनो प्रत्यय भा शब्द के मिलला से ना बनल होखे ओकरा के मूल क्रियाविशेषण कहल जाला, जइसे—अचानक, ठीक, झट वगैरह।

(ख) यौगिक क्रियाविशेषण—जवन क्रियाविशेषण दोसर शब्द के योग से बनल होखे ओकरा के यौगिक क्रियाविशेषण कहल जाला, जइसे तड़-तड़, दिन-भर, चुपके से, धड़ाधड़ वगैरह। यौगिक क्रियाविशेषण—संज्ञा, सर्वनाम, धातु वगैरह में प्रत्यय, विभक्ति भा शब्द जोड़ला से बनेला, जइसे—

'सवेर' संज्ञा से सवेरे, 'इ' सर्वनाम से इहाँ भा इहँवा, 'पहिला' विशेषण से पहिले, 'मार' धातु से मारे, 'अब' अव्यय से अबहीं वगैरह।

(ग) स्थानीय क्रियाविशेषण—बेगर आपन रूप बदलले जवन शब्द क्रियाविशेषण के समान प्रयोग होखे ओकरा के स्थानीय क्रियाविशेषण कहल जाला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संज्ञा—तू का आपन कपार पढ़ब। एकर मतलब तहरा खाक बुझाई।

सर्वनाम—तूं एने अइल। हम ओने गइलीं। रउरा हमरा के का बोलाइबि ?

विशेषण—ई लइकी बढ़िया सीएले। रीता सुन्नर लिखेली।

कृदंत—लोग सूतल रहल, हम जागल रहलीं। रउरा सूति के उठलीं।

अधिकतर यौगिक क्रियाविशेषण दू भा दू से अधिक शब्दन के सयोग से बनेला। अइसन यौगिक क्रियाविशेषण के संयुक्त क्रियाविशेषण कहल जाला। ई एहतरे बनेला—

(क) अव्यय आ दोसर शब्द के मेल से—रात भर, हर दिन, भर पेट, मनेमने अनजाने, कतहूँ ना कतहूँ वगैरह।

(ख) दोहरवला (द्विरुक्ति) से—

अ. संज्ञा दोहरवला से—घर-घर, दिन-दिन, राते-रात, हाथो-हाथ, देही-देही, बाते-बाते, बाग के बाग वगैरह।

आ. विशेषण के दोहरवला से—धीरे-धीरे, खुसी-खुसी, पूरा-पूरा, गते-गते, रसे-रसे, धीमे-धीमे वगैरह।

इ. कृदंत विशेषण के दोहरवला से—रोवत-रोवत, कहत-कहत, रखल-रखल, धइल-धइल, सँचल-सँचल, चलत-चलत वगैरह।

ई. क्रियाविशेषण के दोहरवला से—आगे-आगे, जहाँ-जहाँ, पाछा-पाछा वगैरह।

उ. अनुकरणवाचक आवाज के नकल कइल शब्दन के योग से—फट-फट, चट-चट, तड़-तड़, गट-गट, धड़ाधड़, दनादन वगैरह।

ऊ. अलग-अलग संज्ञा के मेल से—रात-दिन, सुबह-शाम, साँझ-सबेरे, देस-बिदेस, लोक-परलोक वगैरह।

ए. अलग-अलग क्रियाविशेषण के मेल से—इहाँ-उहाँ, जहाँ-तहाँ, आगे-पाछे वगैरह।

ऐ. विशेषण आ संज्ञा के मेल से—एक सङे, हर घड़ी, एकबेर, लगातार वगैरह।

ओ. विशेषण आ पूर्वकालिक कृदत के मेल से—खास कके, एक-एक कके, बहुते कके वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. प्रयोग के आधार से (व्यवहार कइला से)—क्रियाविशेषण तीन तरह के होला—

(क) साधारन (ख) सयोजक (ग) अनुवद्ध।

(क) साधारन क्रियाविशेषण—कवनो वाक्य में स्वतंत्र रूप से प्रयोग होला, जइसे—जल्दी अइह। ऊ कहवाँ गइल? ऊ बहुते रोवत वा। धीरे चल।

(ख) संयोजक क्रियाविशेषण—जेकर उपवाक्य से संवंध होखे, जइसे जहँवा रउरा गइल रहीं ओहिजे हमार घर वा। हम कहत वानीं ओसहीं कह।

(ग) अनुबद्ध क्रियाविशेषण—निश्चय के वोध करे खातिर कवनो शब्द के सङे आवेवाला क्रियाविशेपण के अनुवद्ध क्रियाविशेषण कहल जाला। ई वाक्य के छोट जोड़ (मेल) करेला। जइसे हमरा पासे कलम त वा। लइका पढ़ले भर वा।

३. अर्थ के आधार से (शब्द के माने भा मतलब के अनुसार) किया।विशेपण के चार भेद होला—

(क) स्थानवाचक (ख) कालवाचक (ग) परिमाणवाचक (घ) रीतिवाचक।

(क) स्थानवाचक—क्रियाविशेपण—जगह (कहवाँ भा केनेके उत्तर) के वोध होला। ई दू तरह के होला :—

(१) स्थिति (हालत) बोध के, जइसे—आगा, पाछा, ऊपर, तर, इहवाँ, उहवाँ, सोझा वगैरह।

(२) दिशावाचक—एने, ओने, होने, केने, जेने, तेने, आर-पार, वाएँ, दाएँ, चारो ओर वगैरह।

(ख) कालवाचक क्रियात्रिशेषण—एकरा से समय के वोध होला। ई तीन तरह के होला—

(१) समयवाचक—आजु-काल्हु, अव, तुरंत, कव, तव, जव, सवेरे, फेनु, आखिर वगैरह।

(२) अवधिवाचक—दिनभर, लगातार, कवोकवो वगैरह।

(३) एके शब्द के वेर-वेर दोहरवला से (पौन: पुन्य वाचक)—वेर-वेर, फेनु-फेनु, घरी-घरी, घरे-घरे, ठीक-ठीक, थोड़ा-थोड़ा, गते-गते वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—एकरा से अनगिनत संख्या भा कवनो चीजु के मात्रा के बोध होला। एकर पाँच भेद होला।

(अ) अधिकता (ढेर के) सूचक—बहुत, खूब, सभ, निपट, जादा वगैरह।

(आ) न्यूनता (कम के) सूचक—तनिकी, इचिकी, थोरकी, लगभग वगैरह।

(इ) पर्याय (अन्त) सूचक—हद, बस, काफी वगैरह।

(ई) तुलनावाचक—कम, अधिक, अतना, कतना, बढ़ि के, बीस वा, ओनइस वा।

(उ) क्रम भा श्रेणीवाचक—तनी-तनी, बारी-बारी, पारा-पारी, थोरे-थोरे वगैरह।

(घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण के प्रयोग से—(१) प्रकार (२) स्वीकार (सहमति) (३) निश्चय (४) अनिश्चय (५) कारन (६) अवधारण (पक्का, निश्चय) (७) निषेध (मनाही) वगैरह के भाव के बोध होला।

(१) प्रकार—आहिस्ते, कइसे, अइसे, जइसे।

(२) स्वीकार (सहमति)—जी, हँ, ठीक, बेसक वगैरह।

(३) निश्चय—जरूर, दर-अस्सल, हूबहू, एकदम वगैरह।

(४) अनिश्चय—शायद, यथाशक्ति, हो सकेला, उभेद वा वगैरह।

(५) कारन—काहें, एहसे वगैरह।

(६) अवधारण—(पक्का, निश्चय) तक, भर, त वगैरह।

(७) निषेध (मनाही)—ना, मत, जनि, उहूँ वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ १६

काल

परिभाषा—क्रिया के जवना रूप से समय के वोध होखे ओकरा के काल कहल जाला।

काल के भेद

काल के खास तीन भेद होला—(क) भूत काल (ख) वर्त्तमान काल (ग) भविष्यत् काल।

भूत काल के क्रिया से वीतल समय के वोध होला। जइसे—हम खइलीं। तू पढ़ल। उन्हनी का वइठल रहलेस।

वर्त्तमान काल के क्रिया से चालू समय के वोध होला, जइसे हम लिखत वानी। ऊ पढ़त वाड़े।

भविष्यत काल के क्रिया से आवेवाला समय के वोध होला, जइसे—हम लिखवि। ऊ पढ़िहें।

(क) भूतकाल के भेद

भूतकाल के छव गो भेद होला—१. सामान्य भूत २. आसन्न भूत ३. पूर्ण भूत ४. अपूर्ण भूत ५. संदिग्ध भूत ६. हेतु-हेतु मद्भूत।

१. सामान्य भूत—जवन काम भूतकाल में एक वेर हो गइल, ओकरा के सामान्य भूत कहल जाला, जइसे—हम भोजन कइलीं। ऊ एगो गाड़ी खरीदले। तूं खत लिखल। मोहन परसाल आइल रहले।

२. आसन्न भूत—से काम तुरन्त खतम हो गइला के बोध होला, जइसे—ऊ कलकत्ता गइले हा/गइल वाड़े। मीना इम्तिहान पास कइलसिहा/कइले विया। तूं किताव पढ़ल हा/पढ़ले वाड़।

३. पूर्ण भूत—से बोध होला कि कवनो काम बहुत पहिले खतम हो गइल रहे, जइसे—ऊ कुछु कहले रहले। हम सोचले रहलीं। विपुल खत लिखले रहले। ऊ लेख लिख लेले रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. **अपूर्णभूत**—से बोध होला कि कवनो काम भूत काल में होत रहल ह बाकी खतम ना भइल रहे, जइसे—ऊ रोवत रहे। ऊ लिखत रही। हम लिखत रहलीं।

५. **संदिग्धभूत**—से भूतकाल में काम होखे में संदेह के बोध होला। अइसन क्रिया से पता ना चले कि काम पूरा भइल कि ना, जइसे—ऊ आइल होई। तूं पढ़ले होइबू। ऊ देखले होइहें।

६. **हेतु-हेतुमद्‌भूत**—से बोध होला कि भूत काल में काम पूरा होखे प रहे बाकी कवनो वजह से पूरा ना हो सकल, जइसे—हम पढ़ितीं त जरूरे पास होइतीं। हरी आइत, त हम जइतीं।

(ख) वर्त्तमान काल के भेद

१. सामान्य वर्त्तमान

२. तात्कालिक वर्त्तमान

३. संदिग्ध वर्त्तमान

१. **सामान्य वर्त्तमान** काल से पता चलेला कि कवनो काम चालू समय में होत बा। आदत, अभ्यास, चिरन्तन सत्य वगैरह खातिरो सामान्य वर्त्तमान काल के प्रयोग कइल जाला, जइसे—ऊ आवत बा। तूं खेलत बाड़। हम लिखत बानी। सुरुज दिन में आ चनरमा राति में उगेलन।

२. **तात्कालिक वर्त्तमान** काल से बोध होला कि कवनो काम चालू समय में जारी बा, बाकी ऊ पूरा नइखे भइल, जइसे—ऊ पढ़ रहल बा। मोहन खेल रहल बा। हम खा रहल बानी। ऊ दउर रहल बा।

३. **संदिग्ध वर्त्तमान** काल से काम (क्रिया) होखे में संदेह मालूम होला, जइसे—ऊ पढ़त होई। सीता पढ़त होइहें। हम लिखत रहबि।

(ग) भविष्यत कालके भेद

१. सामान्य भविष्यत

२. संभाव्य भविष्यत

१. **सामान्य भविष्यत** काल से पता चलेला कि कवनो काम आवेवाला समय में एक बेरि होई, जइसे ऊ घर जाई। तूं पढ़े जइबू। हम लिखबि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. संभाव्य भविष्यत काल से कवनो काम के आवेवाला समय में होखे के संभावना (उमेद) के बोध होला, जइसे—उमेद वा आजु वरखा बरिसी। हो सकेला गोपाल खेलसु। ऊ बइठसु। हमरा खातिर ई कलंक के बात होई।

क्रिया के रूप से खाली समय के अवस्थे के बोध ना होखे बलुक निश्चय, सन्देह, सम्भावना, आज्ञा, संकेत वगैरहो के बोध होला—

निश्चयार्थक क्रिया

भूतकाल

सामान्यभूत—तूं लिखल। ऊ चलल।
पूर्णभूत—तूं लिखले रहल। ऊ चलल रहे।
अपूर्णभूत—तूं लिखत रहल। ऊ चलत रहे।

वर्त्तमान काल

सायान्य वर्त्तमान—तूं लिखत वाड़। ऊ चलत वा।
पूर्ण वर्त्तमान—तूं लिखले वाड़। ऊ चलल वा।

भविष्यत काल

सामान्य भविष्यत—तूं लिखव। तूं चलव। ऊ लिखिहें। हम लिखवि। हम चलवि।

संभावनार्थ क्रिया

संभाव्य भूत—तूं लिखले होइव। ऊ चलल होई।
संभाव्य वर्त्तमान—तूं लिखत होइव। ऊ चलत होई।
संभाव्य भविष्यत—उमेद वा, हम काल्हु पटना जाईं। ऊ चलो। हो सकेला, आजु वूनी आई।

आज्ञार्थ क्रिया

वर्त्तमान काल—प्रत्यक्ष विधि—तूं लिख। ऊ लिखो। तूं चल। का हम पढ़ीं? हँ, पढ़। बड़ के आदर कर।

भविष्यत काल—परोक्ष विधि—तूं लिखित। तूं चलित। ऊ लिखिते। ऊ चलिते। हम लिखितीं। हम चलितीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकेतार्थ क्रिया

भूतकाल—तूं चलित। हम चलितीं। ऊ चलित।
(सामान्य संकेतार्थ)
अपूर्ण संकेतार्थ—तूं आवत रहित।
पूर्ण संकेतार्थ—तूं चलल होइत।

संदेहार्थ क्रिया

संदिग्ध वर्त्तमान—तूं पढ़त होइब। ऊ चलत होई।
संदिग्ध भूत—तूं पढ़ल होखव। ऊ चलल होई।

काल के प्रयोग में कुछ क्षेत्रीय विशिष्टता रहेला। आगे कुछ के नमूना दिआ रहल वा।

भोजपुर

भूतकाल

१. सामान्य भूतकाल—राम वइठल। ऊ आइल। हम पढ़लीं। श्याम कलकत्ता गइल।

२. आसन्न भूतकाल—हम अवे भोजन कइलीं हा/कइले वानी। ऊ वाजार से आइल हा/वा। तूं हमरा से ई बात कहल हा।

३. पूर्ण भूतकाल—श्याम आइल रहले/रहे। हम परसाल इम्तिहान देले रहलीं। वावूजी से हमरा भेंट भइल रहे।

४. अपूर्ण भूतकाल – ऊ खात रहल हा। हम किताव पढ़त रहलीं।

५. सन्दिग्ध भूतकाल—हम किताव पढ़ले होइवि। श्यामलाल आइल होई। हम लिखले होइवि/होखवि।

६. हेतु-हेतुमदभूतकाल—धन रहित त हम जरूर पढ़ितीं। अगर इम्तिहान देतीं त जरूर पास होतीं। ऊ जाइत त खाएक पाइत।

वर्त्तमान काल

१. सामान्य वर्त्तमान काल—राम खात वा। हम पढ़त वानी। तूं लिखतार। सूरुज दिन में आ चनरमा रात में उगेलन।

२. संदिग्ध वर्त्तमान काल—राम खात होई। हम पढ़त रहवि। तूं लिखत रहव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपावली

वइठल ('बैठ' धातु)

१. सामान्य भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम वइठलीं।	हमनी का वइठलीं जा।
मध्यम पुरुष	तूं वइठल।	तोहनी का/लोग/सभ तूं सभ वइठल जा।
अन्य पुरुष	ऊ वइठल।	ऊ लोग/उन्हनी का/सभ वइठल।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम वइठलीं।	हमनी का/हमनी सभ वइठलीं जा।
म०	तूं वइठलू।	तोहनी का/तोहनी लोग वइठलू।
अ०	ऊ वइठलि।	ऊ लोग वइठल। उन्हनीं का वइठली स।

२. आसन्न भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम वइठल वानी।	हमनी का वइठल वानी जा।
म०	तू वइठल वाड़।	तू लोग वइठल वाड़। तोहनी का वइठल वाड़।
अ०	ऊ वइठल वा।	उन्हनी का वइठल वाड़ेस। ऊ लोग वइठल वा।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम वइठल वानी।	हमनी का वइठल वानी जा।
म०	तूं वइठल वाड़।	तोहनी का वइठल वाड़ू स।
अ०	ऊ वइठल वाड़ी।	उन्हनी का वइठल वाड़ी स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. पूर्ण भूत

कर्त्ता पुल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठल रहलीं।	हमनी का बइठल रहलीं जा।
म०	तूं बइठल रहल।	तोहनी का बइठल रहल स।
अ०	ऊ बइठल रहल।	उन्हनी का बइठल रहले स। (छोट खातिर)
		ऊ लोग बइठल रहल। (वड़ा खातिर)

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम वइठल रहीं।	हमनी का बइठल रहलीं जा।
म०	तूं बइठल रहलू।	तोहनी का बइठल रहलू स।
अ०	ऊ बइठल रहले।	उन्हनी का बइठल रहली स। (छोट खातिर)
		ऊ लोग वइठल रही। (वड़ा खातिर)

४. संदिग्ध भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल होइवि।	हमनी का बइठल होइवि जा।
म०	तूं बइठल होइव।	तोहनी का वठइल होइव।
अ०	ऊ बइठल होई	उन्हनी का बइठल होइहें स। (छोट खातिर)
		ऊ लोग वइठल होई। (वड़ा खातिर)

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठल होइवि।	हमनी का बइठल होइवि जा।
म०	तूं वइठल होइवू।	तोहनी का बइठल होइवू स। तं लोग वइठल होइवू।
अ०	ऊ बइठल होई।	उन्हनी का बइठल होइहें स। (छोट खातिर)
		उन्हनी लोग वइठल होई। (वड़ा खातिर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. हेतु-हेतुमद्‌भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	वहुवचन
उ०	हम वइठितीं ।	हमनीका वइठितीं जा ।
म०	तूं वइठित ।	तोहनीका वइठित जा ।
अ०	ऊ वइठिते ।	ऊ लोग वइठिते ।
		उन्हनीका वइठिते स ।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	वहुवचन
उ०	हम वइठितीं ।	हमनीका वइठितीं जा ।
म०	तं वइठितू ।	तोहनीका वइठितू जा ।
अ०	ऊ वइठित ।	उन्हनीका वइठिती स ।
		ऊ लोग वइठित ।

६. अपूर्णभूत पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	वहुवचन
उ०	हम वइठत रहलीं ।	हमनीका वइठत रहलीं जा ।
म०	तूं वइठत रहल ।	तोहनीका वइठत रहल स ।
		तू लोग वइठत रहल ।
अ०	ऊ वइठत रहल ।	ऊ लोग वइठत रहल ।
		उन्हनीका वइठत रहले स ।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	वहुवचन
उ०	हम वइठत रहलीं ।	हमनीका वइठत रहलीं जा ।
म०	तूं वइठत रहलू ।	तोहनीका वइठत रहलू ।
		तू लोग वइठत रहलू ।
अ०	ऊ वइठत रहलि ।	उन्हनीका वइठत रहली स ।
	ऊ वइठत रहे ।	ऊ लोगनि वइठत रहली ।

टिप्पनी—'स' वहुवचन के प्रतीक वा जवन मध्यम आ अन्य पुरुष पुंल्लिग आ स्त्रीलिंग में अनादरवोधक में लागत बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. सामान्य वर्त्तमान

पुंल्लिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठत बानीं ।	हमनीका बइठत बानीं ।
		हमनीका बइठतानी जा ।
म०	तूं बइठत बाड़ ।	तू लोग बइठत बाड़ ।
		तोहनीका बइठत बाड़ स ।
अ०	ऊ बइठत बा ।	ऊ लोग बइठत बा ।
		उन्हनीका बइठत बाड़े स ।

स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठत बानीं ।	हमनीका बइठत बानीं ।
		हमनीका बइठत बानी जा ।
म०	तूं बइठत बाड़ू ।	तूं लोग बइठत बाड़ू ।
		तोहनीका बइठत बाड़ू स ।
अ०	ऊ बइठत बाड़ी ।	ऊ लोग बइठत बाड़ी ।
		उन्हनीका बइठत बाड़ी स ।

२. संदिग्ध वर्त्तमान

पुंल्लिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठत होइब ।	हमनीका बइठत होइबि जा ।
म०	तूं बइठत होइब ।	तूं लोग बइठत होइब ।
		तोहनीका बइठत होइब जा ।
अ०	ऊ बइठत होई	ऊ लोग बइठत होई ।
		उन्हनीका बइठत होइहें स ।

स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठत होइबि ।	हमनीका बइठत होइबि जा ।
म०	तूं बइठत होइबू ।	तू लोग बइठत होइबू ।
अ०	ऊ बइठत होई ।	उन्हनीका बइठत होइहें स ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. सम्भाव्य भविष्यत

पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठितीं ।	हमनीका बइठितीं जा ।
म०	तूं बइठिव (संभाव्य)	तूं लोग बइठित/बइठित जा ।
अ०	ऊ बइठो/बइठसु ।	ऊ लोग बइठो/बइठसु । उन्हनींका बइठ स ।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठवि ।	हमनीका बइठवि जा/हमनीका बइठवि जा ।
म०	तूं बइठ ।	तूं लोग बइठ/बइठ जा ।
अ०	ऊ बइठसु ।	ऊ लोग बइठसु ।

२. सामान्य भविष्यत

पुंल्लिग

उ०	हम बइठवि ।	हमनीका बइठवि जा ।
म०	तूं बइठव ।	तूं लोग बइठव/जा ।
अ०	ऊ बइठी ।	ऊ लोग बइठी ।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठवि ।	हमनीका बइठवि जा ।
म०	तूं बइठवू ।	तूं लोग बइठवू/जा ।
अ०	ऊ बइठी ।	ऊ लोग बइठी ।

विधि

सादर विधि :—बइठीं ।

प्रार्थना विधि :—बइठवि । बइठीं ।

परोक्ष विधि :—बइठितीं ।

टिप्पनी—'जा' बहुवचन के बोधक वा जवन उत्तम पुरुष पुंल्लिग आ स्त्रीलिंग में लागल बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिर्जापुर

भूतकाल

(१) सामान्य भूतकाल—राम बइठल। राम बइठेन (आदर प्रकट करने के लिये) ऊ आयल। ऊ आयेन (आदरार्थ)। हम पढ़े। श्याम कलकत्ते गयल। श्याम कलकत्ते गयेन (आदरार्थ)।

(२) आसन्न भूतकाल—हम अबे भोजन करे ह। ऊ बाजार से आयल ह। तू हम से (मुझ से) ई बात कहलँ ह।

(३) पूर्ण भूतकाल—श्याम आयल रहल। हम पर साल (गतवर्ष) परीक्षा दिये रहे। पिताजी से हमार भेंट भइल रहल।

(४) अपूर्ण भूतकाल—ऊ खात रहल। हम पुस्तक पढ़त रहें।

(५) सन्दिग्ध भूतकाल—हम लिखे होब। श्याम लाल आयल रहल होई।

(६) हेतुहेतुमद् भूतकाल--धन रहल होत त हम अवश्य पढ़ित। यदि परीक्षा दिये होतैं त अवश्य उत्तीर्ण भयल रहतैं। ऊ गयल रहत त खाना पावत।

वर्त्तमान काल

(१) सामान्य वर्त्तमान काल—राम खात बा। हम पढ़त हई। तू लिखत हयँ। सूर्य दिन में आउर (और) चन्द्रमा रात में उगलेन।

(२) सन्दिग्ध वर्त्तमान काल—राम खात होई। हम पढ़त होब। तू लिखत होबै।

भविष्यत काल

(१) सामान्य भविष्यत काल—हम करब। तू लड़बै। उ बइठी।

(२) सम्भाव्य भविष्यत काल—हम बइठीं। तू बइठ। ओन बइठेन। तू खा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपावली

बैठना ('बैठ' धातु)

१. सामान्य भूत

कर्त्ता पुल्लिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	हम वइठे।	हम वइठे।
मध्यम पु०	तू वइठ।	तू वइठ।
अन्य पु०	ऊ वइठल।	ओन बइठेन।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम वइठे।	हम वइठे।
म०	तू वइठली (तू वइठलू)।	तू वइठलू (वइठली)।
अ०	ऊ वइठल।	ओन वइठलिन।

२. आसन्न भूत

कर्त्ता पुल्लिंग

उ०	हम वइठल हई।	हमहने बइठल हई।
म०	तू बइठल हये।	तोनहने बइठल हये।
अ०	उ बइठल हौ।	ओन/ओनहने बइठल हयेन।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम वइठल हई।	हमहने वइठल हई।
म०	तू बइठल हऊ।	तोनहने बइठल हई।
अ०	उ वइठल हौ।	ओनहने वइठल हइन।

३. पूर्णभूत

कर्त्ता पुल्लिंग

उ०	हम बइठल रहे।	हमहने वइठल रहे।
म०	तू वइठल रहलै।	तोनहने वइठल रहलै।
अ०	ऊ वइठल रहल।	ओनहने वइठल रहेन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णभूत स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठल रहे।	हमहने बइठल रहे।
म०	तू बइठल रहलू।	तोनहनि बइठल रहली।
अ०	ऊ बइठल रहल।	ओनहने बइठल रहलिन।

४. सन्दिग्ध भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम बइठल होब।	हमहने बइठल होब।
म०	तू बइठल होबँ।	तोनहने बइठल होबँ।
अ०	ऊ बइठल होई।	ओनहने बइठल होइहैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठल होब।	हमहने बइठल होब।
म०	तू बइठल होबू।	तोनहने बइठल होबू।
अ०	ऊ बइठल होई।	ओनहने बइठल होइहैं।

५. हेतुहेतुमद्भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

उत्तम पुरुष	हम बइठित।	हमहने बइठित।
मध्यम पुरुष	तू बइठतँ।	तोनहने बइठतँ।
अन्य पुरुष	ऊ बइठत।	ओनहने बइठतेन।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठित।	हमहने बइठित।
म०	तू बइठतू।	तोनहने बइठिती (बइठती)।
अ०	ऊ बइठत।	ओनहने बइठितिन।

६. अपूर्णभूत

पुंल्लिग

उ०	हम बइठत रहे।	हमहने बइठत रहे।
म०	तू बइठत रहलै।	तोनहने बइठत रहले।
अ०	ऊ बइठत रहल।	ओनहने बइठत रहेन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत रहे ।	हमहने बइठत रहे ।
म०	तू बइठत रहलू ।	तोनहने बइठत रहली ।
अ०	ऊ बइठत रहल ।	ओनहने बइठत रहिन ।

सामान्य वर्त्तमान

कर्त्ता पुल्लिंग

उ०	हम बइठत हई ।	हमहने बइठत हई ।
म०	तू बइठत हयँ ।	तोनहने बइठत हये ।
अ०	ऊ बइठत हौ ।	ओनहने बइठत हयेन ।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत हई ।	हमहने बइठत हई ।
म०	तू बइठत हऊ ।	तोनहने बइठत हये ।
अ०	ऊ बइठत हौ ।	ओनहने बइठत हयेन ।

संदिग्ध वर्त्तमान

कर्त्ता पुल्लिंग

उ०	हम बइठत होब ।	हमहने बइठत होब ।
म०	तू बइठत होबँ ।	तोनहने बइठत होबे ।
अ०	ऊ बइठत होई ।	ओनहने बइठत होइहैं ।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत होब ।	हमहने बइठत होब ।
म०	तू बइठत होबू ।	तोनहने बइठत होबी ।
अ०	ऊ बइठत होई ।	ओनहने बइठत होइहैं ।

सम्भाव्य भविष्यत

उ०	हम बइठीं ।	हमहने बइठीं ।
म०	तू बइठ ।	तोनहने बइठ ।
अ०	ऊ बइठैं ।	ओनहने बइठैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होना ('हो' धातु)

उ०	हम होब।	हमहने होब।
म०	तू होवे।	तोनहने होब।
अ०	ऊ होई।	ओनहने होंय।

सामान्य भविष्यत
बैठना ('बैठ' धातु)

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम वइठव।	हमहने वइठव।
म०	तू वइठवै।	तोनहने वइठवे।
अ०	ऊ बइठी।	ओनहने बइठिहैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम वइठव।	हमहने वइठब।
म०	तू वइठवू।	तोनहने बइठवी।
अ०	ऊ बइठी।	ओनहने वइठिहैं।

विधि

आदर विधि—वइठीं।

प्रार्थना विधि—वइठव।

परोक्ष विधि—बइठीं।

वाराणसी

भूतकाल

१. सामान्य भूतकाल—राम बयठल। ऊ आयल। हम पढ़ली। श्याम कलकत्ता गयल।

२. आसन्न भूतकाल—हम अवहियैं भोजन कइली है। वह बाजार से आयल है। तूं हमसे ई बात कहला है।

३. पूर्ण भूतकाल—श्याम आयल रहा। हम पिछले साल परीक्षा दिहले रहली। पिताजी से हमार भेंट भयल रहा।

४. अपूर्ण भूतकाल—ऊ खात रहल। हम किताब पढ़त रहलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. सन्दिग्ध भूतकाल हम लिखले होव। श्यामलाल आय रहल होई।

६. हेतुहेतुमद् भूतकाल—धन रहत तो हम जरूर पढ़ित। जौ तौ हम परीक्षा दिहले होइत तो जरूर पास होइ जाइत। ऊ आवत तो खायक पाइ जात।

वर्त्तमान काल

१. सामान्य वर्त्तमान काल—राम खात बाय। हम पढ़ाथई। तूं लिखत बाट। सूरज दिन में अउर चाँद रात में उवाला।

२. सन्दिग्ध वर्त्तमान काल—राम खात होई। हम पढ़त रहल होव। तूं लिखत रहल होवा।

भविष्यत काल

१. सामान्य भविष्यत—हम करब। ऊ बइठी।

२. सम्भाव्य भविष्यत—हम बइठी। ऊ सब बइठलै। तूं सब बइठला। तूं खाव।

रूपावली

बैठना ('बैठ' धातु)

सामान्य भूत

कर्त्ता पुल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	हम बइठली।	हम सब बइठलीं।
मध्यम	तूं बइठला।	तूं सब बइठि गइला।
अन्य	ऊ बइठल।	ऊ सब बइठलैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठली।	हम सब बइठलीं।
म०	तूं बइठलू।	तूं सब बइठलू।
अ०	ऊ बइठलि।	ऊ सब बइठि गइलीं।

आसन्न भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल हई।	हम सब बइठल हईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
क०	तूं सब बइठल बाय।	तूं सब बइठल बाटा।
अ०	ऊ बइठल बाय।	ऊ सब बइठल हैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

अ०	हम बइठल हई।	हम सब बइठल हईं।
उ०	तूं बइठलि हौ।	तूं लोग बइठलि हौ।
म०	ऊ बइठलि बाय।	ऊ सब बइठलि हैं।

पूर्ण भूत

कर्त्ता पुल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठलि रहली।	हम सब बइठल रहलीं।
म०	तूं बइठल रहला।	तूं सब बइठल रहलां।
अ०	ऊ बइठल रहल।	ऊ लोग बइठल रहलैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठी रहली।	हम बइठल रहली।
म०	तूं बइठी रहलिऊ।	तूं लोग बइठी रहलू।
अ०	ऊ बइठल रहली।	ऊ सब बइठी रहली।

सन्दिग्ध भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बयठल होब।	हमरे लोग बइठल रहा होब।
म०	तूं बइठल होबा।	तूं सब बइठल होबा।
उ०	ऊ बइठल रहा होई।	ऊ लोग बइठल होइहैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठल होब।	हम सब बइठल रही होब।
म०	तूं बइठल रही होबू।	तं सब बइठल होबू।
अ०	ऊ बइठलि होई।	ऊ सब बइठल होइहैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हेतुहेतुमद्भूत

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठित ।	हम सब बइठित ।
म०	तूं बइठता ।	तूं लोग बइठतौ ।
अ०	ऊ बइठत ।	ऊ सब बइठतैं ।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठित ।	हम लोग बइठित ।
म०	तूं बइठतिऊ ।	तूं सब बइठतिऊ ।
अ०	ऊ बइठति ।	ऊ लोग बइठती ।

अपूर्णभूत

पुंल्लिग

उ०	हम बइठत रहली ।	हम बइठत रहेन ।
म०	तूं बइठत रहला ।	तूं बइठत रह्यो ।
अ०	ऊ बइठत रहल ।	ऊ सब बइठत रहलैं ।

स्त्रीलिंग

उ०	हमहूँ बइठत रहली ।	हम सब बइठत रहली ।
म०	तूं बइठति रहल्यू ।	तूं सब बइठत रहल्यू ।
अ०	ऊ बइठति रहलि ।	ऊ लोग बइठति रहलीं ।

सामान्य वर्त्तमान

पुंल्लिग

उ०	हम बइठत बाटी ।	हम बइठत रहली ।
म०	तूं बइठत बाटा ।	तूं बइठत बाटा ।
अ०	ऊ बइठत बाय ।	ऊ लोग बइठत हैं ।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत हईं ।	हम बइठत हई ।
म०	तूं बइठति बाट्यू ।	तूं लोग बइठत बाट्यू ।
अ०	ऊ बइठैली ।	ऊ सब बइठति हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्दिग्ध वर्त्तमान

पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठत होब।	हम सब बइठत रहा होब।
म०	तूं बइठत रहल होबा।	तूं लोग बइठत रहल होबा।
अ०	ऊ बइठत होई।	ऊ लोग बइठत रहल होइहैं।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठति होब।	हम सब बइठति रहलि होवै।
म०	तूं बइठति होब्यू।	तूं लोग बइठति होब्यू।
अ०	ऊ बइठति होई।	ऊ लोग बइठति होइहैं।

सम्भाव्य भविष्यत

उ०	हम बइठीं।	हम बइठि जाई।
म०	तूं बइठि गइला।	तूं बइठि जाव।
अ०	ऊ सब बइठि गइलै।	ऊ सब बइठि जाँय।

होना ('हो' धातु)

उ०	हम होई।	हम होब/होई।
म०	तूं होवा/होय।	तूं होखा।
अ०	वह होवे/होये।	ऊ सब होइ जायें।

सामान्य भविष्यत

पुंल्लिग

उ०	हम बइठबि।	हम सब बइठव।
म०	तूं बइठवो।	तूं सब बइठौ।
अ०	ऊ बइठी।	ऊ लोग बइठिहैं।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठवै।	हम लोग बइठव।
म०	तूं बइठवू।	तूं सब बइठि जाव।
अ०	ऊ बइठी।	ऊ सब बइठि हैं।

विधि

आदर विधि—बइठा जाय।

प्रार्थना विधि—बइठल जाय।

परोक्ष विधि—बइठा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बस्ती जिला (उ० प्र०)

भूतकाल

१. सामान्य भूतकाल—राम बइठल। ऊ आइल। हम पढ़लीं। श्याम कलकत्ता चला गइल।

२. आसन्न भूतकाल—हम अब्बै भोजन कइली है। ऊ बजार से आइल है। तूं हम से ई बात कहलौ है।

३. पूर्ण भूतकाल—श्याम आइल रहा। हम पर साल इम्तहान देहले रहली। पिताजी से भेट भइल रहल।

४. अपूर्ण भूतकाल—ऊ खात रहल। हम किताब पढ़त रहली।

५. सन्दिग्ध भूतकाल—हम लिखे रहल होव। श्यामलाल आइल होई।

६. हेतुहेतुमद् भूतकाल—धन रहे से हम जरूर पढ़ती। जौतो परीक्षा हम दिहले होइत तो पास जरूर होइ जाती।

वर्त्तमान काल

१. सामान्य वर्त्तमानकाल—राम खात वाय। हम पढ़ाताटी। तू लिखा ताटी। सूरज दिन में अउर चन्द्रमा रात में उवैलै।

७. सन्दिग्ध भूतकाल—राम खात होई। हम पढ़त रहल होवैं।

भविष्यत काल

१. सामान्य भविष्यत—हम करबैं। तू लड़बो। ऊ वइठी।

२. सामान्य भविष्यतकाल—हम बइठि जाई। तू वइठ गइलौ।

रूपावली

बैठना ('बैठ' धातु)

१. सामान्य भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठि गइली।	हम सब बइठि गइली।
म०	तूं वइठलौ।	तूं सब बइठलौ।
अ०	ऊ बइठल।	ऊ लोग बइठि गइलैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्त्ता स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठलीं।	हम सब बइठलीं।
म०	तूं बइठल्यू।	तँ बइठले।
अ०	ऊ बइठलि।	ऊ सब बइठि गइलीं।

२. आसन्न भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल हईं।	हम सब बइठल हईं।
म०	तूं बइठल हौ।	तूं लोग बइठल वाटा।
अ०	ऊ बइठल वाय।	ऊ लोग बइठल हैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठल हईं।	ऊ बइठलि बाय
म०	तूं बइठलि हउ।	तूं लोग बइठलि हौ।
अ०	ऊ बइठलि वाय।	ऊ सब बइठलि हैं।

३. पूर्णभूत.

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल रहली।	हम सब बइठल रहलीं।
म०	तूं बइठल रहला।	तूं लोग बइठल रहलौ।
अ०	ऊ बइठल रहल।	ऊ लोग बइठल रहलैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठल रहली।	हम सब बइठल रहलीं।
म०	तूं बइठल रहल्यू।	तूं सब बइठल रहल्यू।
अ०	ऊ बइठल रहलि।	ऊ सब बइठल रहलीं।

४. सन्दिग्ध भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल हईं।	हम बइठल रहल होवैं।
म०	तूं बइठल रहल होवा।	तूं सब बइठल रहल होवौ।
अ०	ऊ बइठल रहल होई।	ऊ लोग बइठल रहल होइहैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठलि रहल होवैं।	हम सब बइठल रहल होवैं।
म०	तू बइठलि रहलि होव्यू।	तूं सब बइठलि होव्यू।
अ०	ऊ बइठलि होई।	ऊ सब बइठलि होइहैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. हेतुहेतुमद् भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठती।	हम सब बइठित।
म०	तूं बइठता।	तूं लोग बइठतौ।
अ०	ऊ बइठत।	ऊ लोग बइठतैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठतीं।	हम सब बइठित।
म०	तूं बइठतू।	तूं सब बइठत्यू
अ०	ऊ बइठति।	ऊ सब बइठतीं।

६. अपूर्ण भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम बइठत रहली।	हम सब बइठत रहलीं।
म०	तूं बइठत रहला।	तूं सब बइठत रहलौ।
अ०	ऊ बइठत रहल।	ऊ लोग बइठत रहलैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत रहली।	हम सब बइठल रहलीं।
म०	तूं बइठत रहल्यू।	तूं सब बइठत रहल्यू।
अ०	ऊ बइठति।	ऊ सब बइठत रहलीं।

३. सामान्य वर्त्तमान

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम बइठत हई।	हम सब बइटत हई।
म०	तूं बइठत वाटा।	तू सब बइठत हौ।
अ०	ऊ बइठत वाय।	ऊ सब बइठत वाटैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत रहलीं।	हम सब बइठत वाटीं।
म०	तूं बइठत रहल्यू।	तं सब बइठत वाट्यू।
अ०	ऊ बइठत रहलि।	ऊ सब बइठति बाटी।

४. सन्दिग्ध वर्त्तमान

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम बइठत रहल होव।	हम बइठत रहल होवैं।
म०	तू बइठत रहल होवा।	तूं सब बइठत रहल होवा।
अ०	ऊ बइठत रहल होई।	ऊ सब बइठत रहल होइहैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्त्ता स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठति रहलि होब।	हम सब बइठति रहलि होवैं।
म०	तूं बइठति होब्यू।	तूं सब बइठति रहलि होब्यू।
अ०	ऊ बइठति होई।	ऊ सब बइठति होइहैं।

सम्भाव्य भविष्यत

उ०	हम बइठी।	हम बइठली।
म०	तूं बइठला।	तू सब बइठौं।
अ०	ऊ बइठलें।	ऊ लोग बइठि गइलैं।

होना ('हो' धातु)

उ०	हम होई।	हम सब होव।
म०	तूं होव।	तूं सब होव।
अ०	ऊ होय।	ऊ सब होय।

सामान्य भविष्यत

पुल्लिंग

उ०	हम बइठब।	हम सब बइठवै।
म०	तूं बइठबू।	तूं सब बइठब्यू।
अ०	ऊ बइठी।	ऊ सब बइठिहैं।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठब।	हम सब बइठवै।
म०	तूं बइठबू।	तूं बइठब्यू।
अ०	ऊ बइठी।	ऊ सब बइठि हैं।

विधि

आदर विधि—बइठौ।

प्रार्थना विधि—बइठल जाय।

परोक्ष विधि—बइठि जाब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजमगढ़ (उ० प्र०)

भूतकाल

१. सामान्य भूतकाल—राम वइठल/ऊ आयल/हम पढ़लीं/श्याम कलकत्ता गयल।

२. आसन्न भूतकाल—हम अब्बे भोजन कइली ह/ऊ वाजार से आइल ह/तूं हम से ई वात कहलू ह।

३. पूर्ण भूतकाल—श्याम आयल रहे। हम पर साल परीक्षा देले रहलीं। पिताजी से हम भेंटाइल रहलीं।

४. अपूर्ण भूतकाल—ऊ खात रहे। हम पुस्तक पढ़त रहलीं।

५. सन्दिग्ध भूतकाल—हम लिखले होइव। श्यामलाल आइल होई।

६. हेतुहेतुमद् भूतकाल—धन रहले प हम जरूर पढ़ती। अगर परीक्षा देले होती त जरूर पास होतीं। ऊ जात त खाना पावत।

वर्त्तमान काल

१. सामान्य वर्त्तमान काल—राम खात वा। हम पढ़त हई। तू लिखत हवा। सूर्य दिन में आ चन्द्रमा रात में उगेला।

२. सन्दिग्ध वर्त्तमान काल—राम खात होई। हम पढ़त होइव।

भविष्यत काल

१. सामान्य भविष्यत् काल—हम करव। तू लड़वा। ऊ वइठी। तू खइला।

२. सम्भाव्य भविष्यत काल—हम वइठी। तू वइठला। ऊ कुल वइठल। तू खइला।

रूपावली

'वइठल' धातु

सामान्य भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम वइठली।	हमलोग वइठली।
म०	तू वइठला।	तोहन वइठला।
अ०	ऊ वइठल।	ऊ कुल वइठल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्त्ता स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठली।	हमहन बइठली।
म०	तू बइठलू।	तोहन बइठलू।
अ०	ऊ बइठलि।	ऊ कुल बइठली।

आसन्न भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल हई।	ऊ कुल बइठल हई।
म०	तू बइठल हऊँ।	तोहन बइठल हऊँ।
अ०	ऊ बइठलि ह।	ऊ कुल बइठल हई।

पूर्ण भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल रहली।	हमहन बइठल रहली।
म०	तू बइठल रहला।	तोहन बइठल रहला।
अ०	ऊ बइठल रहे।	ऊ कुल बइठल रहल।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठलि रहली।	हमहन बइठलि रहली।
म०	तू बइठल रहलू।	तोहन बइठल रहलू।
अ०	ऊ बइठलि रहली।	ऊ कुल बइठल रहली।

सन्दिग्ध भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठल होइब।	हमहन बइठल होब।
म०	तू बइठल होवा।	तोहन बइठल होवा।
अ०	ऊ बइठल होई।	ऊ कुल बइठल होइहैं।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठल होइब।	हमहन बइठल होब।
म०	तूं बइठल होवू।	तोहन बइठल होवू।
अ०	ऊ बइठलि होई।	ऊ कुल बइठलि होइहैं।

हेतुहेतुमद् भूत

कर्त्ता पुल्लिग

उ०	हम बइठती।	हमहन बइठती।
म०	तू बइठता।	तोहन बइठता।
अ०	ऊ बइठत।	ऊ कुल बइठत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्त्ता स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठती ।	हमहन बइठती ।
म०	तू बइठतू ।	तोहन बइठतू ।
अ०	ऊ बइठत ।	ऊ कुल बइठत ।

अपूर्ण भूत

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम बइठत रहली ।	हमहन बइठत रहली ।
म०	तू बइठत रहला ।	तोनहन बइठत रहला ।
अ०	ऊ बइठत रहे ।	ऊ कुल बइठत रहल ।

कर्त्ता स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत रहली ।	हमहन बइठत रहली ।
म०	तू बइठत रहलू ।	तोहन बइठत रहलू ।
अ०	ऊ बइठत रहलि ।	ऊ कुल बइठत रहली ।

सामान्य वर्त्तमान

कर्त्ता पुंल्लिग

उ०	हम बइठत हईं ।	हमहन बइठत हईं ।
म०	तू बइठत हउआ ।	तोहन बइठत हउआ ।
अ०	ऊ बइठत हव ।	ऊ कुल बइठत हउआ ।

सामान्य वर्त्तमान

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठत हई ।	हमहन बइठत हई ।
म०	तूं बइठति हऊँ ।	तोहन बइठति हऊँ ।
अ०	ऊ बइठति ह ।	ऊ कुल बइठत हई ।

सन्दिग्ध वर्त्तमान

पुंल्लिग

उ०	हम बइठत होइब ।	हमहन बइठत होब ।
म०	तू बइठत होइबा ।	तोहन बइठत होइबा ।
अ०	ऊ बइठत होई ।	ऊ कुल बइठत होइहैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	हम बइठति होइब ।	हमहन बइठति होइबि ।
म०	तूं बइठति होइबू ।	तोहन बइठत होबू ।
अ०	उ बइठति होइहें ।	ऊ कुल बइठत होइहें ।

सम्भाव्य भविष्यत

पुंल्लिग

उ०	हम बइठी ।	हमहन बइठी ।
म०	तू बइठला ।	तोहन बइठला ।
अ०	ऊ बइठल ।	ऊ कुल बइठल ।

'होखल' (होना) क्रिया

स्त्रीलिंग

उ०	हम होई ।	हम सब होब ।
म०	तू होइवा ।	तोहन होइवा ।
अ०	ऊ होइहें ।	ऊ कुल होइहें ।

सामान्य भविष्यत

पुंल्लिग

उ०	हम बइंठब ।	हमहन बइठंब ।
म०	तू बइठवा ।	तोहन बइठवा ।
अ०	ऊ बइठिहें ।	ऊ कुल बइठिहें ।

स्त्रीलिंग

उ०	हम बइठवि ।	हमहन बइठवि ।
म०	तूं बइठवू ।	तोहन बइठवू ।
अ०	ऊ बइठिहें ।	ऊ कुल बइठिहें ।

विधि

आदर विधि बइठीं ।

प्रार्थना विधि--बइठवा ।

परोक्ष विधि—बइठिहा ।

टिप्पणी—आदर सूचक खातिर लोग के प्रयोग मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुष पुंल्लिग में होला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ १७

कारक

परिभाषा—संज्ञा भा सर्वनाम के जवना रूप से ओकर सम्बन्ध वाक्य में क्रिया भा कवनो दोसर शब्द के साथ मालूम पड़े, ओकरा के कारक कहल जाला, जइसे—माई पटना से आइलि। तू अपना बेटा के भेज।

कारक के भेद—भोजपुरी में आठ कारक बा—१. कर्त्ता, २. कर्म, ३. करण, ४. सम्प्रदान, ५. अपादान, ६. सम्बन्ध, ७. अधिकरण आ ८. सम्बोधन।

१. कर्त्ता कारक—भोजपुरी में कर्त्ता कारक के कवनो साफ चिह्न नइखे। अइसे एकर चिह्न शून्य मानल जाला। जवना शब्द से काम करे वाला के बोध होला ओकरा के कर्त्ता कारक कहल जाला, जइसे—राम किताब लिखले। लइका सभ पहाड़ा इयाद क लेले स। एह वाक्यन में 'राम' आ 'लइका सभ' कर्त्ता कारक बा।

२. कर्म कारक—(के, क आ शून्य) जवना शब्द प क्रिया के फल आ कर्त्ता के काम के असर पड़ेला ओकरा के कर्म कारक कहल जाला, जइसे—अभय दाल रोटी खइले। तू अपना बेटा के समुझाव। ऊ अपना बेटी क भेजसु।

ऊपर के वाक्यन में 'खाइल' क्रिया के फल 'दाल-रोटी' प; 'समुझावल' क्रिया के फल 'बेटा' प आ 'भेजल' क्रिया के फल 'बेटी' प पड़ता आ इन्हनी के कर्त्ता अभय, तू आ ऊ के काम जाहिर होता, जइसे—'दाल-रोटी', 'बेटा के' आ 'बेटी क' में कर्म कारक बा।

कतहूँ-कतहूँ कर्म के 'के' चिह्न साफ ना लउके, जइसे—ऊपर के पहिला वाक्य के देखल जा सकेला।

३. करण कारक—(से, ले, ए, अन, अन्हि) जेकरा सहायता से कर्म पूरा होखे ओकरा के करण कारक कहल जाला, जइसे—घोड़ा से बोझा ढोआइल। हमरा ले किताब ना किनाई। हम पिआसे मू गइलीं। ऊ भूखे मर जाई। लातन मारि के देहि सोझ क देबि।

ऊपर के वाक्यन में घोड़ा से, हमरा ले, पिआसे, भूखे, लातन में करण कारक के चिह्न देखल जा सकत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. सम्प्रदान कारक—(के, खातिर, निमित्त, बदे, वास्ते, लागि, ला) जेकरा खातिर काम कइल जाय ओकरा के सम्प्रदान कारक कहल जाला, जइसे—तहरा बदे जान दे देइबि। हमरा खातिर भोजन परोसवाव। अनिल वास्ते रोटी ले आव। देवता निमित्त अङ्उङ निकालि द। पूजा ला फूल लाव। हमरा लागि कुछ द।

बनारस आ गाजीपुर वगैरह में 'बदे' के प्रयोग चलेला। चम्पारन आ मुजफ्फरपुर में 'ला' आ 'लागि' के प्रयोग चलेला। सरभंगी सम्प्रदाय के कवि लोग 'ला', 'लागि' के प्रयोग कइले वाड़े।

५. अपादान कारक—(से, ले) जहाँ से कवनो पदार्थ के वियोग भइल मालूम पड़े ओकरा के अपादान कारक कहल जाला, जइसे—फेड़ से बानर कूद गइल। फूल से तितली उड़ि गइलि। हाथी ले हउदा उतारि द। फेड़ से पतई गिरता।

६ सम्बन्ध कारक—(क, के, कर, र, का, सँती, सन्तिर, जवना शब्द से कवनो वस्तु के सम्बन्ध जानल जाला, ओकरा के सम्वन्ध कारक कहल जाला, जइसे—हमार कलम भुला गइल। राम क बेटी आ गइलि (गाजीपुर)। परमेसर के भाई बी० ए० पास क गइल। ई राम के लइकी के किताब ह। उनुका सङ जाइबि। तहार सँती हम खेलबि।

सन्तिर भा सँती से संबन्ध कारक के साथ सम्प्रदान कारक के मेल बइठत बा, जइसे—हमार सँती तूं महावीरजी के पूजा कर।

७. अधिकरण कारक—(में, पर, के, एँ, तर, प, त) जे क्रिया के आधार होखे ओकरा के अधिकरण कारक जहल जाला, जइसे—घर में चूहा डण्ड करत बा। माथ प मुरेठा बान्हि लीं। ऊ बगइचा गइल बाड़े। फूल प भँवरा मड़राता। खाटी तर साँप बइठत बा। बील में हाथ मत डाल।

ऊपर के तीसरा वाक्य में 'में' चिन्ह लुप्त बा। एकर मतलब बा कि ऊ बगइचा में गइले।

८. सम्बोधन कारक—(हे, ए, अरे, हो, रे) केहू के पुकरला भा सचेत कइला के सम्बोधन कारक कहल जाला, जइसे—हे रामजी ! हमार दुख हरीं ! अरे बुचिया ··· सुनत बाड़े रे ? ए माई, डर लागता। सुनत बाड़ हो ? तूं का कहत बाड़ हो ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ १८

समास

परिभाषा

अपना-अपना विभक्ति के छोड़ि के एक से अधिक पद के आपस में मिलि के संक्षेप हो गइला के समास कहल जाला। समास के बाद जवन एगो खास शब्द वनि जाला ओकरा के 'समस्त शब्द' कहल जाला। आपस में मिले वाला पहिला शब्द के पहिला खण्ड 'पूर्व पद' मानल जाला आ अन्त वाला 'उत्तर पद' मनाला।

कवो-कवो दूनों पद प्रधान होला, जइसे—लोटा-डोरि = लोटा आ डोरि। लोटा-डोरि ले आव, अइसन बोलला प ले आइल क्रिया के सङे दूनो के अटूट सम्वन्ध वा। एह से अइसन सामासिक शब्द के उभय पद प्रधान कहल जाला। कवो-कवो सामासिक शब्दन के ना पूर्व पद प्रधान होखे आ ना उत्तर पद वलुक कवनो दोसर अर्थ वनि जाला जइसे नीलकंठ = शिवजी। एह में ना नील प्रधान वा आ ना कंठ वलुक नील कंठ वाला शिवजी प्रधान बानीं।

विग्रह :

समास के अर्थ वतवला के विग्रह कहल जाला युानी सामासिक शब्द के अलग-अलग कइला के तरीका के।

समास के भेद :

१. अव्ययीभाव समास

२ तत्पुरुष समास

३. द्वन्द्व समास

४. बहुव्रीहि समास

५. कर्मधारय समास

६. द्विगु समास

७. नञ समास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. अव्ययीभाव समास :—पूर्व पदार्थ प्रधान

शब्द	विग्रह
हर रोज	रोजे रोजे।
जोर भर	पूरा ताकत भर।
राता राती	रात भर में।
भोरे भोरे	सवेरे सवेरे।
वेकाम	विना काम के।
वेलाग	विना लाग के।
भर पेट	पेट भर।
हाथो हाथ	एक हाथ से दोसरा हाथ।
दिन भर	पूरा दिन।

अव्ययीभाव समास हो गइला प जवन शब्द बनि जाला ऊ अव्यय होला। एह समास के पूर्वपद यानी पहिला पद अकसरहाँ अव्यय होला आ उत्तर पद यानी बाद वाला पद संज्ञा होला। ऊपर लिखल शब्दन में लिंग, वचन, पुरुष वगैरह के कारन कवनो परिवर्त्तन ना होखे।

२. तत्पुरुष समास—उत्तर पदार्थ प्रधान। एह समास में बाद वाला पद के अर्थ प्रधान होला। एह में कारक के चिह्न छिपल रहेलन स। एह से कारकन के नाम प एह समास के नाम धइल जा सकत बा।

१. कर्म तत्पुरुष—कठफोरवा = काठ के फोरे वाला।
जलखई = जल के सङ्ग खाइल।

शब्द	विग्रह
वँसफोर	वाँस के फोरे वाला।
हँड़फोर	हाँड़ी के फोरे वाला।
लकड़सुँघवा	लकड़ी के सुँघावे वाला।
माखनचोर	माखन के चोरावे वाला।
तेलचट्टा	तेल के चाटे वाला।
चिड़ीमार	चिड़िया के मारे वाला।
मुँहदेखल	मुँह के देखि के।

२. करण तत्पुरुष—

विजुली मारल	विजुली से मारल।
मुँह माँगल	मुँह से माँगल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्द	विग्रह
हाथ उठाई	हाथ से उठावल।
लठमार	लाठी से मारल।

३. सम्प्रदान तत्पुरुष—

रेल भाड़ा	रेल खातिर भाड़ा।
हथकड़ी	हाथ खातिर कड़ी।
रसोइयाघर	रसोई खातिर घर।
मालगोदाम	माल वास्ते गोदाम।
डाकमसूल	डाक के मसूल।
जेवघड़ी	जेव के घड़ी।
राह खर्च	राह खातिर खर्च।
जेव खर्च	जेव खातिर खर्च।

४. अपादान तत्पुरुष—

आकासवानी	आकास के वानी।
धनहीन	धन से हीन।
देस निकास	देस से निकास।

५. सम्बन्ध तत्पुरुष—

ठाकुरवाड़ी	ठाकुर के वाड़ी।
वाछीमार	वाछी के मारे वाला।
गाइमार	गाइ मारे वाला।
राजकुँवर	राजा के लइका।
लोकनायक	(संसार) लोक के नायक।
वएलगाड़ी	वएल के गाड़ी।
दीनानाथ	दीन (गरीब) के नाथ (मालिक)।
राजभवन	राजा के भवन।
जहाजघाट	जहाज के घाट।
पुलवाघाट	पुल के घाट।
किताव महल	किताव के महल।
कासी नरेस	कासी के नरेस।

६. अधिकरण तत्पुरुष—

दान बीर	दान में बीर।
बनवास	बन में वास।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गिरिहीबास	घर में बास ।
आपवीती	अपना प बीतल
पाकिट भरल	पाकिट में भरल ।

ऊपर के सभ कारक प्रधान समासन में ओह कारक के खास चिह्न हट गइल बा एकरा के ध्यान से देखल जा सकत बा ।

३. द्वन्द्व समास—एह में सब पद प्रधान होला ।

माई-बाप = माई आ बाप ।
बाप-भाई = बाप आ भाई ।
लोटा-डोर = लोटा आ डोर ।
ऊँच-नीच = ऊँच आ नीच ।
गोरू-बछरू = गोरू आ बछरू ।
सास-पतोह = सास आ पतोह ।
ससुर-दमाद = ससुर आ दमाद ।
नून-तेल-लकड़ी = नून आ तेल आ लकड़ी ।
हाथी-घोड़ा-पालकी = हाथी आ घोड़ा आ पालकी ।
आगे-पीछे = आगे आ पीछे ।
हाटे-बाटे = हाटे आ बाटे ।
दूधे-भाते = दूधे आ भाते ।
घरे-दुआरे = घरे आ दुआरे ।
धर-पकड़ = धर आ पकड़ ।
जीव-जन्तु = जीव आ जन्तु ।
भूल-चूक = भूल आ चूक ।
चोरी-चमारी = चोरी आ चमारी ।
राजा-परजा = राजा आ परजा ।
चिउरा-दही = चिउरा आ दही वगैरह ।
कड़ा-कड़ी—झगड़ा ।
खड़ा-खड़ी—तुरन्त ।
खेदा-खेदी—पीछा ।
गारा-गारी—झगड़ा ।
छोवा-छीनी—झगड़ा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जूता-जूती—लड़ाई।
टाना-टानी—तनातनी।
ठोका-ठोकी लड़ाई।
धावा-धूपी—जल्दी।
धारा-धरी—लड़ाई।
मारा-मारी—लड़ाई।

४. बहुब्रीहि समास—एह में कवनो पद प्रधान ना होला बलुक बाहर से आके एगो दोसरे अर्थ निकसेला, जइसे—

लम्बोदर—लामा होखे पेट जेकर ऊ याने गणेश जी।
नील-कंठ—नीला होखे कंठ जेकर ऊ याने शंकर जी।
लाल-पगड़ी — लाल होखे पगड़ी जेकर याने पुलिस।
घंट-फोरवा—घंट जे फोरत होखे ऊ याने महाब्राह्मण।

५. कर्मधारय समास—जवना समास के पूरा पद से विशेष्य (संज्ञा) विशेषण भा उपमान-उपमेय के बोध होखे ओकरा के कर्मधारय समास कहल जाला।

कर्मधारय समास में अधिकतर पहिला पद विशेषण आ दूसर पद विशेष्य (संज्ञा) होला। जेकरा से कवनो वस्तु के उपमा दीहल जाय ऊ उपमान कहाला आ जेकर उपमा दीहल जाला ओकरा के उपमेय कहल जाला, जइसे चनरमुखी = चनरमा लेखा मुख वाली। नीलगाय = नीला रंग के गाय। महाजन = बड़ आदमी।

कर्मधारय समास के भेद—

कर्मधारय समास दू तरह के होला—(क) विशेषतावाचक कर्मधारय।
(ख) उपमानवाचक कर्मधारय।

(क) विशेषता वाचक कर्मधारय समास से विशेष्य (संज्ञा)-विशेषण के भाव मालूम पड़ेला, जइसे—

पीताम्बर = पीअर कपड़ा।
महाशय = महान आशय वाला।
महाबीर = बहुत बड़ बीर।
परमेश्वर = परम बा जे ईश्वर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) उपमानवाचक कर्मधारय—समास से उपमान-उपमेय के भाव मालूम पड़ेला, जइसे—

घनश्याम—बादर लेखा करिया।
चनरमुखी—चनरमा लेखा मुँह वाली।
कमलनयन—कमल के फूल लेखा मुँह वाला।
कठबाप—काठ अइसन करेजा वाला बाप।

तत्पुरुष आ कर्मधारय में फरक ई बा कि तत्पुरुष के अलग-अलग पद में विभक्ति लगावल जा सकत बा बाकी कर्मधारय के पद में एके विभक्ति रहेला।

६. द्विगु समास—जवना समास के पहिला पद संख्या वाचक विशेषण होखे, ओकरा के द्विगु समास कहल जाला, जइसे—

चउरास्ता = चार राह के समूह।
त्रिलोक = तीन लोक के समाहार।
त्रिभुवन = तीन भुवन के समाहार।
नवरतन = नव रतन के समूह।
दूमुहानी = दू मुँह के मिलन।

७. नञ समास—जेकर पहिला पद नकारात्मक भाव सूचित करे ओकरा के नञ समास कहल जाला, जइसे—

अधरम
अजान, अनजान
अकाज
अकारथ
अबोध
अनभल

भोजपुरी में सामासिक शब्दन के भरमार बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ १९

वाक्य विचार

कवनो पूरा अर्थ बोध करावे वाला शब्द-समूह के वाक्य कहल जाला। दोसरा तरह से कहल जा सकत वा कि वाक्य ओइसन शब्द भा सिलसिलेवार शब्द-समूह ह जवना के सुनला भा पढ़ला से पूरा अर्थ समझ में आवेला, जइसे—वसंती पढ़तारी। ललन जातारे।

वाक्य के अंग—ऊपर के वाक्य में वसंती आ ललन उद्देश्य वा। उद्देश्य के मतलव होला जेकरा वारे में कुछ कहल जाय।

ऊपर के वाक्य में पढ़तारी आ जातारे विधेय वा। वसंती का करतारी ? त उत्तर होई पढ़तारी। एह से उद्देश्य के वारे में जवन कुछ कहल जाय ओकरा के विधेय कहल जाला।

एह तरह से वाक्य के दूगो अंग भइल—उद्देश्य आ विधेय।

वाक्य में कर्त्ता भा उद्देश्य पहिले आ क्रिया भा विधेय वाद में आवेला, जइसे वरखा होता। बुढ़िया आन्ही आवतिया। वड़की वाल्टी में छेद हो गइल वा।

वाकी जव क्रिया से अधिक जोर कर्त्ता प दीहल जाला तव ई क्रम उलटि जाला, कर्त्ता वाद में आवेला। जइसे—लड़े सिपाही आ नाँव सरदार के। चले ना जानी अङनवे टेढ़।

उद्देश्य आ विधेय के विस्तार—उद्देश्य के विस्तार उद्देश्य के पहिले आ विधेय के विस्तार विधेय के पहिले रखल जाला। जइसे—मोहन के वड़का छँवड़ा हमार आम तूर ले गइल। सोकना वएला वड़ा जोर से हूँफत वा।

ऊपर के वाक्य में छँवड़ा आ वएला उद्देश्य वा वाकी उद्देश्य के पहिले आइल शब्द 'मोहन के वड़का' आ 'सोकना' उद्देश्य के विशेषता भा खूवी वतलावत वा। संक्षेप में उद्देश्य के विशेषता वतलावे वाला शब्द भा समूह उद्देश्य के विस्तार कहाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधेय के विशेषता भा खूबी बतलावे वाला शब्द भा शब्द-समूह विधेय के विस्तार कहाला। ऊपर के वाक्य में 'तूर ले गइल' आ 'हूँफत बा' विधेय बा आ 'हमार आम' आ 'बड़ा जोर से' विधेय के विस्तार भइल।

शब्द आ पद

वर्ण (अक्षर) के समूह शब्द कहाला आ पदो के इहे परिभाषा ह। बाकी जब शब्द के वाक्य में प्रयोग होला तबे ऊ 'पद' कहाला। जब तक शब्द के वाक्य में प्रयोग ना होखे तब तक ओकरा के शब्द कहल जाला। जब ई वाक्य में खप जाला तब 'पद' के नाँव से जानल जाला।

वाक्य के भेद

बनावट के अनुसार

१. साधारण वाक्य
२. मिश्र वाक्य
३. संयुक्त वाक्य

१. **साधारण वाक्य**--जवना वाक्य में एगो उद्देश्य होखे आ एके विधेय होखे ओकरा के साधारन वाक्य कहल जाला। जइसे--दयाशंकर अइले। करनी भेजल जाई। हमरा से उठल नइखे जात। झूठ बोलल पाप ह।

ऊपर के वाक्य में एके उद्देश्य आ एके विधेय बा।

२. **मिश्र वाक्य**--अइसन वाक्य जवना में मुख्य उपवाक्य एके होखे बाकी आश्रित उपवाक्य एगो भा एगो से अधिक होखे, मिश्र वाक्य कहाला। जइसे ऊहे बहादुर सिपाही ह जे जान के हथेली प लेके लड़ेला आ मातृभूमि के रछेया करेला। हम चाहतानी कि देश के नागरिक ईमानदार होखसु आ बीर बनसु। हम ओइसन जिनिगी जीअल चाहतानी जहवाँ काम होखे आ एकरा बाद आराम होखे आ ना त खाली आराम आ आनन्द हमरा के बेकाम आ अपाहिज बना दी। फेनु आराम आ आनन्द के मजा कहाँ मिली ?

ऊपर के वाक्य में उहे बहादुर सिपाही ह, हम ओइसन जिनिगी जीअल चाहतानी, मुख्य उपवाक्य बाड़े स आ एकरा अलावे सभ आश्रित उप वाक्य।

आश्रित उपवाक्य

संज्ञा उपवाक्य--जवन उपवाक्य कवनो क्रिया के उद्देश्य (कर्त्ता), कर्म, पूरक वगैरह बनि के प्रयोग होखे ओकरे के संज्ञा उपवाक्य कहल जाला, जइसे--ऊ का चाहतारे बुझात नइखे। हम सुनले रहीं कि बिआह ठीक होगइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रिया के कर्म के रूप में

हम नइखीं चाहत कि हमरा खाली सुखे-सुख मिलो। एह में मुख्य उपवाक्य के क्रिया वा 'चाहत' जवना के कर्म—हमरा खाली सुखे-सुख मिलो, संज्ञा उपवाक्य वा।

क्रिया के पूरक के रूप में

उनका इच्छा वा कि सभे आलस छोड़ि के मेहनती बनो। बाबूजी के विचार वा कि हम जल्दी प्रवेशिका पास क के काम धरीं। एह दूनो वाक्य में 'इच्छा वा' आ 'विचार वा' के पूरक बनि के जवन उपवाक्य आइल बाड़े स ऊ संज्ञा उपवाक्य हवेसन।

विशेषण उपवाक्य—ओइसन उपवाक्य जवन कवनो संज्ञा के विशेषता बतावे, विशेषण उपवाक्य मानल जाला, जइसे—अइसन बात सुनावतानी जवना प अतिवारे नइखे होत। एह में 'जवना प अतिवारे नइखे होत' विशेषण उपवाक्य वा।

क्रियाविशेषण उपवाक्य—जवन उपवाक्य से क्रिया भा क्रियाविशेषण के विशेषता जाहिर होखे, ओकरा के क्रियाविशेषण उपवाक्य कहल जाला। एकर पाँच गो भेद देखल जा सकेला—

१, **कालवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य**—जसहीं साँप निकलल ओसहीं ऊ भागि चलले। जब नाश के समय आवेला तब बुधि मरा जाला। जब-जब रउरा भीरी अइलों तब-तब रउरा मदत कइलीं।

२. **स्थानवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य**—जहाँ जाली खेहोरानी उहाँ ना मिले आग-पानी। जहाँ साँझि उहाँ बिहान। जहवाँ से आवाज आवत रहे ओहिजे एगो बिलारि लुकाइल रहे।

३ **रीतिवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य**—जइसन रउरा लिखतानीं ओइसन हम नइखीं लिख सकत। जस बोईला तस काटीला।

४. **परिणामवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य**—जइसे जइसे आमद बढ़ेला, खरचा बढ़ेला। जे जतने ज्ञान के समुन्दर में गोता लगाई, ऊ भाव के मोती छानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. कार्य-कारण वाचक क्रियाविशेषण उप वाक्य—हम तहरा खातिर जान तक दे देवि, काहे कि तू हमार वहुते उपकार कइले बाड़। ऊ एहसे नहाता कि भर देह कादो लागल रहल हा।

३. संयुक्त वाक्य—दू भा अधिक साधारन भा मिश्र वाक्यन के स्वतंत्र मेल से वनल वाक्य के संयुक्त वाक्य कहल जाला। संयुक्त वाक्य में कम-से-कम दूगो मुख्य उपवाक्य जरूर होला आ ई एक दोसरा के समानाधिकरण होला।

साधारण+साधारण।	मिश्र+साधारण
साधारण+मिश्र।	मिश्र+मिश्र

(क) कमल अइले आ किताव ले गइले।

(ख) ऊ खा लेले आ पेट एह तरी अकड़ गइल कि वएद वोलावे के परल।

(ग) ऊ हवे त बुधिमान वाकी कुछ पूछि द त आसमान के जोन्ही गिने लागेलन।

ऊपर लिखल वाक्य में 'वाकी' संयोजक अव्यय के प्रयोग भइल वा।

वाक्य के भेद (क) अर्थ के अनुसार

(१) विधि सूचक (२) निषेध सूचक (३) प्रश्न सूचक (४) आज्ञा सूचक (५) इच्छा सूचक (६) संदेह सूचक (७) संकेत सूचक (८) विस्मय सूचक।

१. विधि सूचक—जवना से कवनो क्रिया के भइल मालूम होखे, जइसे—स्व० वेनीपुरी जी हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक रहन। श्री अरुण मधुर गायक हवन।

२. निषेध सूचक—जवना से कवनो वात के इन्कार मालूम पड़े, जइसे—एहिजा हमार मन नइखे लागत। हमरा पास फूटल कउड़ियो नइखे।

३. प्रश्न सूचक—जवना से कवनो सवाल पूछल मालूम होखे, जइसे—ई कवना के गाइ ह? हई किताव केकर ह? हमार जूता कहाँ वा? वरँहपुर कवन राह जाई?

४. आज्ञा सूचक—जवना से आज्ञा, प्रार्थना भा उपदेश मालूम होखे, जइसे—सोझ वइठ। आइल जाव। सास ससुर के सेवा कर। आँव परल वा त केरा खा। कूकुर के ढेला मत मार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. इच्छा सूचक—जवना से इच्छा भा आसिरवाद मालूम होखे, जइसे—आनन्द रहीं। भगवान सुकलान करसु। हम पढ़ि-लिखि के खेती करबि। अपने कमाई से घर बनाइब।

६ संदेह सूचक—जवना से संदेह भा संभावना मालूम होखे, जइसे—हो सकेला काल्हु ऊ आवसु। अब ले गाड़ी चहुँप गइल होई। दुआरे बरिआत लागल होई। मेहरारू गावत होइहें स।

७. संकेत सूचक—जवना से संकेत मालूम होखे। जहँवाँ एक काम के भइल दोसरा काम प निर्भर करत होखे ओहिजा संकेत सूचक वाक्य के प्रयोग होला, जइसे—तू कह त बोझा उठा दीं। रउरा मदत ना करितीं त हम मर जइतीं।

८. विस्मय सूचक—जवना से अचरज, खुसी, दुख वगैरह के भाव जाहिर होखे, जइसे—वाह ! लाख रुपया के बात कहल। अच्छा भइल तू आ गइल ! ओह ! ऊ गरीब बिका गइल।

वाक्य के भेद (ख) क्रिया के अनुसार

क्रिया के अनुसार वाक्य तीन तरह के होला—(१) कर्त्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाव वाच्य।

कर्त्तृवाच्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष कर्त्ता के अनुसार होला। कर्मवाच्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष कर्म के अनुसार होला। भाववाच्य में क्रिया के लिंग वचन पुरुष ना कर्त्ता के अनुसार होला आ ना कर्म के अनुसार बलुक अइसन क्रिया हमेसा एकवचन, पुल्लिंग आ अन्य पुरुष में रहेले। उदाहरन—

१. कर्त्तृवाच्य—मीठू किताब पढ़ता। मीना किताब पढ़तिया।

२. कर्मवाच्य—हमरा से किताब पढ़ाता। राम से गाड़ी हँकातिया।

३. भाववाच्य—मोहन से उठल बइठल नइखे जात। सोमरिया से रसोई नइखे होत।

वाक्य-विश्लेषण

कवनो वाक्य के अंगन के अलग-अलग कइल आ उन्हनी के आपसी संबंध बतावल 'वाक्य-विश्लेषण' कहाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाक्य विश्लेषण के 'वाक्य-विग्रह', 'वाक्य-विच्छेद', 'वाक्य-विभाजन' भा 'वाक्य-पृथक्करण' कहल जाला।

वाक्य-विश्लेषण में सबसे पहिले वाक्य के प्रकार बतलावे के चाहीं। साधारन, मिश्र, आ संयुक्त, एह तीनों प्रकार के वाक्यन के विश्लेषण अलग-अलग ढंग से होला।

साधारन वाक्य के विश्लेषण

नीचे लिखल क्रम से वाक्य के अंग बतलावे के चाहीं :—

१. वाक्य के साधारन उद्देश्य।
२. उद्देश्य के विस्तारक शब्द (जो होखे त)।
३. साधारन विधेय (क्रिया)।
४. कर्म—जो होखे त।
५. कर्म के विस्तारक शब्द (जो होखे त)।
६. विधेय विशेषण—जो होखे त।
७. विधेय के विस्तार।

वाक्य-विश्लेषण एगो त ऊपर लिखल तरीका से कइल जाला आ दोसर तरीका ह नीचे लिखल तालिका बना के

तालिका सं०—१

उद्देश्य		विधेय			
साधारन उद्देश्य	उद्देश्य के विस्तार	साधारन विधेय (क्रिया)	कर्म आ ओकर विस्तार	विधेय विशेषण	विधेय के विस्तार

नीचे साधारन वाक्य दीहल जाता जवना के विश्लेषण नीचे तालिका न०—२ में देखल जा सकत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. हमरा ओहिजा रहत कइएक वरिस हो गइल।

२. हमार वात सुनि के हमार मीत उदास हो गइल।

३. मंदिर के पुजारी असहाय भइला के वोजह से भागि गइल।

४. भारत के जनता के एह आपत्तिकालीन स्थिति में अपना राष्ट्र हित के ध्यान में राखे के चाहीं।

तालिका सं०—२

	उद्देश्य		विधेय			
वाक्य	साधारन उद्देश्य	उद्देश्य के विस्तार	साधारन विधेय (क्रिया)	कर्म आ ओकर विस्तार	विधेय विशेषण	विधेय के विस्तार
१	बरिस	कइएक	हो गइल	—	—	हमरा ओहिजा रहत
२	मीत	हमार	हो गइल	—	उदास	हमार बात सुनि के
३	पुजारी	मंदिर के	भागि गइल	—	—	असहाय भइला के वोजह से
४	जनता के	भारत के	राखे के चाहीं	अपना राष्ट्र हित के ध्यान		एह आपत्ति कालीन स्थिति में

मिश्र वाक्य के विश्लेषण

पहिले वतावल जा चुकल बा कि जवना वाक्य में एगो उप मुख्यवाक्य आ एगो भा एगो से अधिका आश्रित उप वाक्य होखे त ओकरा के मिश्र वाक्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहल जाला। इहो बतावल गइल वा कि आश्रित उप वाक्य के तीन भेद होला—

(१) संज्ञा उप वाक्य

(२) विशेषण उप वाक्य

(३) क्रियाविशेषण उप वाक्य

उदाहरन—हम कहि चुकल वानी कि केकरो ऊहे चीजु नीक लागेला जवन ओकरा मन मोताबिक होखे आ ओहसे ओकर कवनो सुख-सवारथ होखे।

१. हम कहि चुकल वानी—मुख्य उप वाक्य।

२. कि लोग के ऊहे चीजु नीक लागेला संज्ञा उप वाक्य।

३. जवन ओकरा मन मोताबिक होखे—विशेषण उप वाक्य।

४. आ ओह से ओकर कवनो सुख-सवारथ होखे—समानाधिकरण विशेषण उप वाक्य।

मिश्र उप वाक्य के विश्लेषण

१. सभे के मालूम वा कि सचाई परम धर्म ह।

२. ऊ कहले कि सफाई राखल नीमन वानि ह।

३. आजु जहवाँ निमेज गाँव बा ओहिजा पहिले गंगाजी वहत रहली।

१. क. सभ के मालूम वा कि—मुख्य वाक्य।

ख. सचाई परम धर्म ह—संज्ञा उप वाक्य, 'मालूम वा' क्रिया के विधेय एह में संयोजक अव्यय 'कि' वा।

२. (क) ऊ कहले— मुख्य उप वाक्य

सफाई राखल नीमन वानि ह—संज्ञा उप वाक्य,
'कहल'—क्रिया के कर्म
'कि' संयोजक अव्यय।

३. ओहिजा पहिले गंगाजी वहत रहली—मुख्य 'उप वाक्य'
आजु जहवाँ निमेज गाँव वा—क्रियाविशेषण उप वाक्य
(स्थान वाचक)

ई सभ मिश्र वाक्य हवन स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सयुक्त वाक्य के विश्लेषण

दू भा दू से अधिक वाक्यन के मेल से रचल संयुक्त वाक्य—

(क) राम के वनवास मिलल, दशरथ के जान गइल आ कैकेयी आपन जीत मनली। एहिजा तीन सरल वाक्यन के मेल भइल वा।

(ख) वहरी वरखा वरसत रहे, विजुली चमकत रहे, वादर गरजत रहे आ हम अपना कोठरी में वइठल खिड़की से देखत रहलीं। एहिजा चार सरल वाक्यन के मेल भइल वा।

(क) में तीनों आ (ख) में चारों मुख्य उप वाक्य ह।

एगो साधारन आ एगो मिश्र वाक्य के मेल से रचल संयुक्त वाक्य—

उनुका विश्वास हो गइल कि एह विषय के जरूरे उनुका से संवंध वा आ ऊ गल्ती प ना रहलन।

(क) उनुका विश्वास हो गइल—मुख्य उप वाक्य।

(ख) कि एह······संवंध वा—संज्ञा उप वाक्य।
विश्वास हो गइल—'के' पूरक।

(ग) ऊ गलती······रहलन (क) के समानाधिकरण उप वाक्य।

३. दू भा दू से अधिक मिश्र वाक्यन के मेल से रचल संयुक्त वाक्य—

एगो ऊ वाड़े स जे आजादी के नशा में मतवाला गौरव से सिर उठवले होली मनावत वाड़े स आ एगो हम वानीं कि पिंजड़ा में परल पंछी अस तड़फड़ा रहल वानीं।

(क) एगो··· ··· ··· ···वाड़े स—मुख्य उप वाक्य

(ख) जे··· ··· ··· ······वाड़े स - विशेषण उप वाक्य,
(क) सर्वनाम 'ऊ' के विशेपता बतावता।

(ग) एगो··· ··· ··· ··· ···वानीं (क) के समानाधिकिरण उप वाक्य।

(घ) कि··· ··· ···वानीं—विशेषण उप वाक्य, (ग) में सर्वनाम 'हम' के विशेषता बतावता। 'आ' संयोजक।

एहिजा दूगो मिश्र वाक्यन के मेल भइल वा एह से एकरो के संयुक्त वाक्य कहल जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाक्य-प्रसारण

छोट-सरल वाक्य के बढ़ा-चढ़ा के कहला भा लिखला के वाक्य-प्रसारण कहल जाला। ई वक्ता भा लेखक के शब्द-भंडार आ व्यक्त करे के क्षमता पर निर्भर वा।

१. भारत गरीब देश हो गइल वा (सरल वाक्य)।

प्रसारण—भारत में अन्न कम उपजत वा, वेकारी के समस्या वा, आ एकर कारन वा उहे बाबा आदम के जमाना के खेती करे के तरीका, आबादी के दिन दूना रात चउगुना बढन्ती आ कल-कारखाना के कमी। बचत का जगहा इहाँ करजा पर करजा लिआ रहल वा।

२. नास्तिक लोग दुख के समयं आस्तिक हो जाला। (सरल वाक्य)

प्रसारण—ईश्वर के ना मानेवाला, उनुका पर विश्वास ना करेवाला कपारे दुख परला प उनुका के गोहरावेलों आ ओह छन खासिर आस्तिक बन जाला।

वाक्य-सक्षेपण

दू भा दू से अधिक वाक्यन के मिला के एक वाक्य बनावे के तरीका के वाक्य संक्षेपण कहल जाला। वाक्य-संक्षेपण करत खा अर्थ में कवनो फरक ना आवे के चाहीं।

नियम (क) वाक्यन के साधारन अंश के बार-बार जिकिर ना कइला से—
राम वजारे गइल वाड़े। उनुकर भाइयो वजारे गइल वाड़े।

संक्षेपण—राम आ उनुकर भाई बजारे गइल वाड़े।

(ख) अव्यय के प्रयोग से

उदाहरन—ऊ गरीव वा। ऊ पढ़े में तेज वा।

संक्षेपण—भले ऊ गरीब बा बाकी पढ़े में तेज बा।

(ग) वाक्यन के कुछ अंश बदले से

उदाहरन—ऊ खाना खइले। ऊ चल गइले।

संक्षेपण—ऊ खाना खा के चल गइले।

वाक्य-परिवर्तन

कवनो एगो वाक्य के बिना अर्थ बदलले भा बिगड़ले दोसरा तरह के वाक्य में बदलला के तरीका के वाक्य-परिवर्तन कहल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वरूप के लेहाज से वाक्य तीन तरह के होला—सरल, मिश्र आ संयुक्त। तीनों प्रकार के वाक्य एक दोसरा में बदलत जा सकत बाड़े स। वाक्य बदले में अभ्यस्त हो गइला से वाक्य रचना में सहूलियत होला।

(क) सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

गुरुजन के आदर सभे करेला जे गुरुजन होलन उनुकर आदर सभ लोग करेला।

(ख) मिश्र से सरल वाक्य

मिश्र वाक्य	सरल वाक्य
जे तेज विद्यार्थी होला ओकरा के सभे चाहेला।	तेज विद्यार्थी के सभे चाहेला।
जे अपना से वड़ होखे ओकर आदर करे के चाहीं।	अपना से वड़ के आदर करे के चाहीं।

(ग) सरल से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य
भारतीय जवानन के आवत देख के दुश्मन भाग गइल।	दुश्मन भारतीय जवानन के आवत देखलसि आ भाग गइल।
बरखा छुटते घाम उगि गइल।	बरखा छूटल आ घाम उगल।

(घ) संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य	सरल वाक्य
सब केहू जानता कि हम घरे गइल रहलीं हा।	हमार घरे गइल सभे जानता।

(ङ) निषेध वाचक से विधि वाचक वाक्य

निषेध वाचक वाक्य	विधि वाचक वाक्य
हम उनका से वड़ नइखीं	ऊ हमरा से वड़ बाड़े भा ; ऊ हमरा बरावर बाड़े।

(च) प्रश्नवाचक वाक्य से ज्ञापक वाक्य

प्रश्नवाचक वाक्य	ज्ञापक वाक्य
धन के ना चाहे ?	धन सभे चाहेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(छ) विस्मयसूचक से ज्ञापक वाक्य

विस्मय सूचक वाक्य	ज्ञापक वाक्य
ओह ! कइसन सुन्नर रूप वा।	वहुते सुन्नर रूप वा।

(ज) आज्ञार्थक वाक्य से ज्ञापक वाक्य

आज्ञार्थक वाक्य	ज्ञापक वाक्य
मन से पढ़।	हम तहरा के मन से पढ़े के कहत वानीं।

(झ) इच्छार्थक वाक्य से ज्ञापक वाक्य

इच्छार्थक वाक्य	ज्ञापक वाक्य
तोहार अरदुआइ बढ़े !	तहार अरदुआइ बढ़े खातिर प्रार्थना करत वानीं।

(ञ) प्रत्यक्ष वाक्य से परोक्ष वाक्य

प्रत्यक्ष वाक्य	परोक्ष वाक्य
शिक्षक छात्र से कहलन—'आपन पाठ इयाद कर'।	शिक्षक छात्र से कहलन कि ऊ आपन पाठ इयाद करो।
ऊ हमरा से कहलन—'हम वड़ा भागमानी वानीं।'	ऊ हमरा से कहलन कि ऊ वड़ा भागमानी वाड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ २०

विराम चिह्न

भाव आ विचार के साफ जाहिर करे खातिर जवना चिह्न के प्रयोग कइल जाला ओकरा के विराम चिह्न कहल जाला। एह चिह्नन से वाक्य में ठहराव के कमी-वेसी आ एक पद से दोसरा पद के संवंध मालूम होला। वाक्य के सुबोध वनावे आ वाक्य-खंड के साफ-साफ जाहिर करे खातिर विराम चिह्न के प्रयोग कइल जाला। अइसन ना कइला से वाक्य के अर्थ साफ मालूम ना होई आ ओह में अझुरहट रह जाई।

प्राचीन लेखन-सामग्रिन में खाली पूर्ण विराम (।) के चिह्न के प्रयोग मिलेगा। एकरा अलावा दोसर चिह्नन के प्रयोग ना मिले। अंग्रेजी भाषा के सम्पर्क में अइला से दोसर भारतीय भाषा में विराम चिह्नन के उपयोगिता मालूम भइल आ उन्हनी के प्रयोग होखे लागल काहें कि जवना वाक्यन में विराम चिह्न के सही-सही प्रयोग ना होखे उन्हनी के विचार आ भाव सुवोध ना होखे।

मुख्य विराम चिह्न

१.	पूर्ण विराम	(।)
२.	अल्प विराम	(,)
३.	अर्द्ध विराम	(;)
४.	प्रश्न चिह्न	(?)
५.	विस्मयादिबोधक	(!)
६.	उद्धरण	(" ") (' ')
७.	कोष्ठक	( ) [ ]
८.	संयोजक	(-)
९.	विवरण	(:-)
१०.	लोप	(... ... ...) ।

१. पूर्ण विराम चिह्न

वाक्य के पूरा भइला प एह चिह्न (।) के प्रयोग होला। सभ प्रकार के वाक्य के अंत में ई चिह्न लगावल जाला, जइसे—हम पढ़त बानीं। मोहन स्कूल जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. अल्प विराम

जवना वाक्यन के बीच में तनी देर रुके के जरूरत पड़े ओह में अल्प विराम (,) चिह्न लागेला। वाक्य के रचना करत अल्प विराम के प्रयोग सबसे अधिक होला।

(क) जहाँ तीन भा तीन से अधिक शब्दन भा खंड वाक्यन के एक दोसरा से अलग कइल जाय; जइसे—राम, जयशंकर, अगनिवेश आ मदन पाठशाला गइले।

(ख) ऊ, ई, तब, भा वगैरह जहाँ छिपल होखे उहाँ, जइसे—हम जवन कहत बानी, (ऊ) कान लगा के सुन।

(ग) जहाँ केहू के संबोधित कइल जाइ, जइसे—भाई लोग, हम रवां सभे से कुछ कहल चाहत बानी।

(घ) बाकिर, बाकी, एहसे, काहेंकि, जवना से, वगैरह शब्द जइसे— दवाई बहुत भइल, बाकी रोग नइखे छूटत। वाक्य के बीच में प्रयोग होखे तब इन्हनी के पहिले; जइसे—आजु हम ड्यूटी ना जाइब, काहेंकि तवियत ठीक नइखे। अइसन काम कर, जवना से नाँव रोशन होखो। हम मेहनत कइले रहलीहां, एही से पास हो गइली।

(ङ) जहाँ दू अलग-अलग जोड़ा शब्दन आ वाक्य-खंडन के अलग कइल जाय; जइसे—छोट आ बड़, धनी आ गरीब, मालिक आ मजदूर, सभ के देश खातिर जान देवे के चाहीं।

(च) जहँवाँ मिश्र वाक्यन के आश्रित वाक्यन से अलग करे के होखे; जइसे—हम जब लिखत रहलीं, जगत अचानक हमरा भीरी आ गइल।

(छ) उद्धरण के पहिले अल्प विराम लागेला; जइसे—ऊ कहले, "हम कानपुर जाइबि।"

(ज) समानाधिकरण के बीच में, जइसे—ईरान के बादशाह, नादिर शाह, दिल्ली प चढ़ाई कइले रहे।

३. अर्द्ध विराम (;)

जहाँ पूर्ण विराम से कम आ अल्पविराम से अधिक देर तक रुके के जरूरत पड़े उहाँ अर्द्ध विराम के प्रयोग होला। एकर प्रयोग अधिकतर मिश्र वाक्य में होला। जइसे—ऊ लाचार बा; ओकरा के मत सताव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. प्रश्न चिह्न (?)

जवना वाक्य से सवाल कइल भा पूछल जाउ, ओहिजा प्रश्नवाचक चिन्ह के प्रयोग होला जइसे कहँवाँ से आवतानी ? का खातार ? कहाई तवन करब ?

५. विस्मयादि सूचक चिह्न (!)

मन के दुख-सुख, शोक, लाज, खीस वगैरह भावन के व्यक्त करे खातिर एकर प्रयोग होला, जइसे—ओह ! कइसन अन्हेर बा ! वाह, रउरा आगइलीं ! बनि गइल बबुआ !

६. उद्धरण चिह्न (" ")

कवनो व्यक्ति के लिखल भा कहल वचन के हू-बहू ओसहीं लिखे खातिर उद्धरण चिह्न के प्रयोग कइल जाला; जइसे—श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी 'कौशिकायन' में लिखले बानी "भूखि अतने बा कि छोड़ित करुष रूखर भेस; आब एकर बढ़ित, चमकित बरित दमगर देस" ।

७. कोष्ठक चिह्न ( )

वाक्य में आइल कवनो खास पद के ठीक तरे जाहिर करे खातिर कोष्ठक के प्रयोग कइल जाला ; जइसे—अहिंसा के पुजारी (गाँधीजी) सत्य आ धर्म के रक्षक रहलीं। अफ्रीका के नीग्रो (हब्शी) लोग करिआ होलन ।

८. संयोजक चिह्न (-)

दू भा दू से अधिक शब्दन के एक दोसरा से मिलावे खातिर आ एक पद के रूप में लिखे खातिर एह चिह्न के प्रयोग कइल जाला, जइसे—दाल-भात । तन-मन-धन से मदत करीं ।

९. विवरण चिह्न (:–)

कवनो पद के व्याख्या करे खातिर भा केहू के बारे में विस्तार से कुछ कहे खातिर एह चिह्न के प्रयोग कइल जाला; जइसे—नीचे लिखल खण्ड के व्याख्या करीं :—

१०. लोप चिह्न (····)

जब कवनों वाक्य में कुछ अक्षर ना लिखे जोग भा बेकार मालूम पड़े भा आगे जवन बात होखे ऊ ना लिखल जाय तब एह चिह्न के प्रयोग होला। जइसे ऊ बात ··· हम केहू से नइखीं कहि सकत। मेहरारू के नाक ना रहे त······

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छंद विचार

छंद शब्द संस्कृत के 'छद्' शब्द से निकलल वा जवना के मतलब ढाँकल भा तोपल होला। छंदन के सभ से पुरान रूप ऋग्वेद में मिलेला। वेदन के छव अंगन में एगो मुख्य अंग छंद शास्त्र ह। पुरनका जमाना में ढेर ग्रंथ छंद में लिखात रहे। आउर छंदन के तुलना में अनुष्टुप छंद प्रधान रहे। आदिकवि वाल्मीकि के मुँहें पहिले-पहिल अनुष्टुपे छंद निकलल रहे—

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समः।
यत्क्रौंचं मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।"

छंद रचना के एगो विधा भा शैली ह जवना में मात्रा, वर्ण भा पदन के प्रयोग ओकर संख्या, यति, गति, क्रम वगैरह प वारीकी से ध्यान दीहल जाला। छंद के प्रमुख दूगो भेद होला—

१. मात्रिक—जवना में छंद के मात्रा गिनल जाला।
२. वर्णिक—जवना में छंद के वर्ण भा अक्षर गिनल जाला।

छंद के प्रमुख सात गो अंग होला—

(१) चरण (२) मात्रा भा वर्ण (३) संख्या (४) क्रम (५) गति (६) यति आ (७) तुक

सुविधा के मोताबिक छंद पाठ में जहाँ विराम आवेला उहाँ तक ऊ पूरा हिस्सा 'चरण' भा 'पाद' कहाला।

छंद शास्त्र में ह्रस्व स्वर अ, इ, उ, ऋ वगैरह के मात्रा कहल जाला। मात्रा के गिनती में स्वर के गिनती होला ओकरा सङे व्यंजन के ना। जहाँ ह्रस्व स्वर रहेला उहाँ एक मात्रा आ जहाँ दीर्घ स्वर रहेला उहाँ दू मात्रा गिनल जाला, जइसे भजन (भ् + अ, ज् + अ,) में तीन मात्रा आ राम (र् + अ + अ, म् + अ) में तीन मात्रा बा। वर्ण के गिनती करे में संयुक्त भा स्वर-युक्त वर्ण के एक मानल जाला, जइसे 'कमला में (क + म + ल) तीन वर्ण बा आ 'स्वर' में (स्व + र) दू वर्ण बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो छंद के मात्रा, भा वर्ण गिनल जाला ओकरा के संख्या आ कवना छंद में कतना कवन मात्रा रही एकर विचार क्रम कहाला।

कविता भा छंद के पढ़े में एगो खास लय होला जवना के गति कहल जाला आ काव्य पाठ में जवन रोकावट भा विराम आवेला ओकरा के यति कहल जाला। छंद के एक चरण के अंतिम मात्रा भा वर्ण जरूरत के मोताविक दोसरा भा तीसरा चाहे चउठा चरण के मात्रा भा वर्ण से मेल खाला जेकरा के तुक कहल जाला।

छंद शास्त्र में ह्रस्व स्वर के लघु (।) आ दीर्घ स्वर के गुरु (ऽ) कहल जाला।

गण—छंदशास्त्र में गण के व्यवहार होला जवना के मतलव समूह होला। अक्षर समूह के एह गणन के नीचे लिखल आठ भेद होला—

यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण।

एह गणन के अलावे छंदन में लघु आ गुरु स्वरो प विचार करे के परेला।

एह गण-समूह के आसानी से समुझे खातिर नीचे लिखल सूत्र के समुझल वाजिव होई—'यमाताराजभानसलगा'

एह सूत्र के हर अक्षर गणन के पहिला अक्षर बा। कवना गण में क गो गुरु आ क गो लघु रही एकरा जानकारी खातिर जवना गण के जानकारी करे के बा ओकर अक्षर लिखि के ओकरा बाद में दूगो वर्ण लेवे के चाहीं आ ओकरे अनुसार लघु-गुरु जाने के चाहीं, जइसे अगर भगण के जानकारी करे के बात एह गण के पहिला वर्ण 'भ' लिखाई जे एह सूत्र में गुरु रूप में बा। एकरा बाद सूत्र से दूगो वर्ण 'न' आ 'स' के लेवे के परी जे ह्रस्व रूप में बा। तव एकर रूप होई भानस अर्थात् (ऽ।।) यानी भगण में एगो गुरु (ऽ) दूगो लघु (।।) होई। एही तरी आउर गणन के नीचे तालिका से जानल जा सकत बा—

यगण	के	यमाता	में	(। ऽ ऽ)	एक लघु दूगो गुरु — अमोला।
मगण	के	मातारा	में	(ऽ ऽ ऽ)	तीनो गुरु— गाईला
तगण	के	ताराज	में	(ऽ ऽ ।)	दू गुरु एक लघु—बेकार।
रगण	के	राजमा	में	(ऽ । ऽ)	गुरु लघु गुरु— आदरा।
जगण	के	जमान	में	(। ऽ ।)	लघु गुरु लघु— जुआठ।
भगण	के	भानस	में	(ऽ । ।)	गुरु लघु लघु— ढावर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नगण के नसल में (।।।) तीनो लघु— भरथ।
सगण के सलगा में (।।ऽ) दू लघु एक गुरु– कमला।

मात्रिक छंद

जवना छंद में मात्रा के प्रयोग नियमित रूप से कइल जाला आ मात्रा के ही गिनती होला ओकरा के मात्रिक छंद कहल जाला। दोहा, सोरठा, चौपाई, वगैरह मात्रिक छंद के उदाहरण ह।

सदा भवानी दाहिने, सनमुख रहैं गनेस
पंच देव मिलि रक्षा करैं ब्रह्मा बिसुन महेस

एह छंद के पहिला आ तीसरा चरण में १३-१३ मात्रा आ दूसरा-चउथा में ११-११ मात्रा बा। एह से ई मात्रिक छंद ह।

वर्णिक छंद

जवना छंद के सभ चरणन के वर्ण के संख्या आ क्रम समान होखे ओकरा के वर्णिक छंद कहल जाला। त्रोटक, सवइया (सवैया), कवित्त वगैरह वर्णिक छंद के उदाहरण ह।

सजनी सभ साज सिंगार बिथा
बिनु साजन सावन भावत ना
सगरी कजरी झझकार चले
हमरे मन तान उठावत ना।
—शाहाबादी

एह छंद में चार पद बा। चारो में बारह-बारह वर्ण बा जवन चार-चार सगण (।।ऽ) के क्रम में बा। एह से ई वर्णिक त्रोटक छंद ह।

छंदन के संख्या

छंदशास्त्र के छंदन के संख्या लगभग आठ हजार बा। बाकी आजु काल्हु करीब-करीब एक सौ छंदन के प्रयोग चल रहल बा। भोजपुरी में प्रचलित कुछ प्रमुख छंदन के परिचय दीहल जाता।

मात्रिक छंद

चौपाई—चौपाई के सभ चरण में १६–१६ मात्रा होला। सभ चरण के अंत में मात्रा गुरु होला। पहिला-दूसरा आ तीसरा-चउथा के तुक मिलेला। चरण के अन्त में (ऽ।) ना होखे के चाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राकृत कवि के करत बड़ाई, मन हमार ना कवो अघाई।
फानल जे भासा के घेरा, भानल ना संस्कृत के फेरा।

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

दोहा—एकरा पहिला आ तीसरा चरण में १३-१३ मात्रा आ दूसरा-चउथा चरण में ११-११ मात्रा होला। यति चरण के अंत में होला। पहिला-तीसरा चरण के अंत में जगण (। ऽ ।) ना होखे। दूसरा आ चउथा चरण के अंत में लघु जरूर होला—

पावलगी सभ के करीं, घूमत चारो ओरि
टेढ़-सोझ मात्रा पढ़ीं, चउबिस सोरह जोरि

—विद्यार्थी

सोरठा—दोहा के ठीक उल्टा सोरठा होला। एकरा पहिला आ तीसरा चरण में ११-११ आ दूसरा-चउथा चरण में १३-१३ मात्रा होला—

तींत मीठ भा खार, कहलीं वे कहले बहुत।
सुनिते चतुर गँवार, लागल बा अब लालसा ॥१॥
टेढ़ सोझ तुक तार, लोक-वेद से जोहि के।
मात्रिक छद-विचार, कइलीं अपना बूझ भर ॥२॥

—विद्यार्थी

बरवै—एकरा पहिला आ तीसरा चरण में १२-१२ आ दूसरा-चउथा चरण में ७-७ मात्रा होला—

सासु न आवसु सोझा, ना बनि सेज।
रूसल दुलहा माङे भीखि दहेज।

—अवधेश प्रधान

आल्हा—आल्हा भा वीर छंद के सभ चरन में ३१ मात्रा होला। यति १६ आ फेनु १५ प होला। सभ चरण के अंत में । ऽ । रहल जरुरी बा। पहिला दूसरा ओसहीं तीसरा चउथा चरण तुकांत होखे के चाहीं।

शास्त्रीजी संग्राम सेनानी, दिल के धनी कपट छल नाय।
आगे बढ़ि के हाथ मिलवले, मिलले तासकंद में जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनि आश्चर्यं चकित बा दुनिया, दाँते अँगुरी रहल दबाय।
भारत-पाक मिताई खोजत, शास्त्री दिहलन प्राण गँवाय।

—परमेश्वर दूबे शाहाबादी

कुण्डलिया

एकरा में छव चरण होला। पहिला-दूसरा दोहा छंद के (१३ + ११) आ बाकी चार चरण रोला छंद (११ + १३) के होला। दोहा के चउथा चरण से रोला के पहिला चरण के शुरुआत होला आ दोह के पहिला चरण के पहिला शब्द रोला छंद के अंत में आवेला। सभ चरण में १४ मात्रा होला—

महँगाई के मार से जनता भइल तबाह।
ईजत मेटल धूर में महँगाइल बा चाह।
महँगाइल बा चाह, समोसा के मत बोलीं;
छूट गइल जलपान, पान ले झँखे तमोली।
मुअलन बाभन जाति, मुफुत के गइल मलाई;
दुरलभ रोटी दाल, ताल मरलसि महँगाई।

—शाहाबादी

वर्णिक छंद

द्रुतविलंबित—एह छंद में चार चरण होला। हर चरण में १२ वर्ण; एगो नगण (।।।) दोसर भगण (ऽ।। ऽ।।) आ एगो रगण (ऽ । ऽ) के क्रम से रहेला—

पावन में मद राग हुलास बा,
वदन में अनुराग पियास बा।
सरस फागुन, ना मिलला वदे,
जवन ठीक वुझाय सजाय दे।

—शाहाबादी

कवित्त—कवित्त चार चरण के वर्णिक छंद ह। एकरा हर चरण में ३१ से ३३ तक वर्ण होला। जइसे—

जै सारदा भवानी, रण चंडी के रूप धर,
बुद्धि द विवेक नेक ताकत भरपूर द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुदई सिवाना प मूड़ी उचकावत बाटे
धइके उलइ दीहीं अइसन भउर द
दूधवा के लाज राखीं देसवा के नाज राखीं
ताज राखीं गौरव के अस निठाह उर द
वाना लोहवाना, मरदाना द भोजपुर के
धूर द मंजूर, बस समहुती लउर द।
(३२ वर्ण)

—शाहाबादी

सवइया (सवैया)—सवइया चार चरण के वर्णिक छंद ह। एकरा हर चरण में २२ से २६ वर्ण रहेला।

ना उतरे दुख में, सुख में केकरो मन स कबो आपन माई
ना सुने बात जे माई के ऊ सचहूँ दुनियाँ में कहावे कसाई
ना कहे माई के माई कबो जे अभागा ऊ साँचो के रोई ना गाई
बा मन में तहँवें रहितीं हम माई के बोली जहाँ ना भुलाई
(२३ वर्ण)

—विद्यार्थी

आधुनिक भोजपुरी कविता में उर्दू ओके छंदन जइसे गजल आ रुबाई के काफी प्रयोग हो रहल बा। अंग्रेजी के सॉनेट के भी एगो-दूगो नीक नमूना देखे के मिली।

⊙

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट

भारत के कवनो आन भाषा से भोजपुरी के आपन अलग एगो अजगुत विशेषता बा—ऊ ई जे एकरा में मध्यम पुरुष खातिर चारि गो सर्वनाम के रूप बा जइसे तें, तूं, रउआ/रउरा, अपने/अपनेका जब कि संस्कृत में 'त्वम्' आ 'भवान्'; खड़ी बोली में 'तुम' आ 'आप'; बङ्ला में 'तुमि' आ 'आपनी' चाहे मैथिली में 'तूं' आ 'अहां' दूइए गो रूप बा। आदर्श भोजपुरी क्षेत्र जइसे भोजपुर, रोहतास, बलिया, सारन, गोपालगंज, सीवान, गाजीपुर, देउरिया आदि में ई चारो रूप प्रचलित बा। मध्यम पुरुष के चारो रूपन के प्रयोग नीचे लिखल अर्थ में होला—

१. तें—अपना से छोट खातिर दुलार से चाहे अनादर से। अपना से बड़ संबंधी (खाली स्त्रीलिंग) खातिर अपनइती में, जइसे—माई, आजी, दादी, फूआ, मउसी, चाची, दीदी खातिर।

२. तूं—अपना बराबरी के मरद भा मेहरारू दूनों खातिर। 'तूं' शब्द समतूल बराबरी के ह—इचिको कम ना इचिको अधिका खातिर।

३. रउआ/रउरा—साधारन तौर से अपना से बड़ भा आदरणीय खातिर।

४. अपने/अपने का—विशेष आदर-मान आ सरधा-भाव सूचित करे खातिर जइसे गुरू-उपरोहित, साधु-संत भा देव-तुल्य व्यक्तित्व खातिर।

रूपावली

१. सामान्य भूत

एकवचन	बहुवचन
तें बइठले	तोहनीका बइठल स (पु०)
	,, बइठलू स (स्त्री)
तूं बइठल (पु०)	तूं लोग/तोहनी/तोहन लोग बइठल (पु०)
,, बइठलू (स्त्री०)	,, ,, बइठलू (स्त्री०)
रउआ/रउरा बइठलीं	रउआ/रउरा सभे/लोग बइठलीं/जा
अपने/अपनेका बइठल गइल	अपने सभे बइठल गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. आसन्न भूत

तें वइठल वाड़े	तोहनीका वइठल वाड़ स (पु०)
	,, ,, वाड़ू स (स्त्री)
तूं वइठल वाड़ (पु०)	तूं लोग/तोहनी/तोहन लोग वइठल वाड़/जा (पु०)
,, ,, वाड़ू (स्त्री०)	,, ,, ,, वाड़ू जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा वइठल वानीं	रउरा सभे वइठल वानीं/जा
अपने/अपने का वइठल गइल वा	अपने सभे वइठल गइल बा

३. पूर्ण भूत

तें वइठल रहले	तोहनीका वइठल रहल स (पु०)
	,, ,, रहलू स (स्त्री)
तूं वइठल रहल/रह (पु०)	तूं लोग/तोहनी/तोहन लोग वइठल रहल/जा (पु०)
,, ,, रहलू/रह (स्त्री०)	,, ,, ,, रहलू (स्त्री०)
रउआ/रउरा वइठल रहलीं	रउआ/रउरा सभे वइठल रहलीं/जा
अपने/अपनेका वइठल गइल रहे	अपने सभे वइठल गइल रहे

४. सदिग्ध भूत

तें बइठल होइवे	तोहनीका वइठल होइव स (पु०)
	,, ,, होइवू स (स्त्री०)
तूं वइठल होइव (पु०)	तूं लोग/तोहनी वइठल होइव/जा (पु०)
,, ,, होइवू (स्त्री०)	,, ,, ,, होइवू जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा वइठल होइवि	रउआ/रउरा सभे वइठल होइवि/जा
अपने/अपनेका वइठल गइल होई	अपने सभे वइठल गइल होई

५. हेतुहेतुमद् भूत

तें वइठिते	तोहनीका वइठित स (पु०)
	,, ,, वइठितू स (स्त्री०)
तूं वइठित (पु०)	तूं लोग/तोहनी/तोहन लोग वइठित/जा(पु०)
,, वइठितू (स्त्री०)	,, ,, वइठितू/जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा वइठल होइवि	रउआ/रउरा सभे वइठितीं/जा
अपने/अपनेका वइठल जाइत	अपने सभे वइठल जाइत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. अपूर्ण भूत

तें बइठत रहले	तोहनीका बइठत रहल स (पु०)
	,, ,, रहलू स (स्त्री०)
तूं बइठत रहल (पु०)	तूं लोग/तोहनी/तोहन लोग बइठत रहल/जा (पु०)
,, ,, रहलू (स्त्री०)	,, ,, ,, रहलू जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा बइठत रहलीं/रहीं	रउआ/रउरा सभे/लोग बइठत रहलीं/रहीं/जा
अपने/अपनेका बइठल जात रहे	अपने सभे बइठल जात रहे

१ सामान्य वर्त्तमान

तें बइठत बाड़े/बइठतारे	तोहनीका बइठत बाड़ स/बइठतार/स (पु०)
	,, बइठत बाड़ू स/बइठतारू (स्त्री०)
तूं बइठत बाड़/बइठतार (पु०)	तूं लोग/तोहनी/बइठत बाड़/बइठतार/जा (पु०)
,, ,, बाड़ू/बइठतारू (स्त्री०)	,, ,, बइठत बाड़ू/बइठतारू/जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा बइठत बानीं/बइठतानी	रउआ/रउरा सभे बइठत बानीं/बइठतानी/जा
अपने/अपनेका बइठल जात बा/जाता	अपने सभे बइठल जात बा/जाता

२ संदिग्ध वर्त्तमान

तें बइठत होइबे	तोहनी का बइठत होइब स (पु०)
	,, ,, होइबू स स्त्री०)
तूं बइठत होइब (पु०)	तूं लोग/तोहनी लोग बइठत होइब/जा (पु०)
,, ,, होइबू (स्त्री०)	,, ,, ,, होइबू/जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा बइठत होइबि	रउआ/रउरा सभे बइठत होइबि/जा
अपने/अपनेका बइठल जात होई	अपने सभे बइठल जात होई

३. सामान्य भविष्यत

तें बइठबे	तोहनी का बइठब स (पु०)
	,, बइठबू स (स्त्री)
तूं बइठब (पु०)	तूं लोग/तोहनी/तोहन लोग बइठब/जा (पु०)
,, बइठबू (स्त्री०)	,, ,, ,, बइठबू/जा (स्त्री०)
रउआ/रउरा बइठबि	रउआ/रउरा सभे बइठबि/जा
अपने/अपनेका बइठल जाई	अपने सभे बइठल जाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर
के
प्रकाशन

	दाम
१. भोजपुरी संगम (गद्य-पद्य संग्रह)—सं० प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा	१-००
२. भोजपुरी कहानी संग्रह „ „	१-००
३. सुरतिया ना बिसरे (रेखाचित्र संग्रह)—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'	१-५०
४. छोटी-मुटी गाजी मियाँ (लघुकथा संग्रह)—सं० प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा	१-००
५. सेमर के फूल (उपन्यास)—डा० बचन पाठक 'सलिल'	१-००
६. हल्फी (कविता संग्रह)—मृगेन्द्र प्रताप 'श्रमिक'	१-००
७. परिछाहीं (भो० स्वगत छायानाट्य)—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'	१-००
८ फोकट में सैर (यात्रा संस्मरण)—सं० डॉ० सत्यदेव ओझा	१-००
९. आदर्श भोजपुरी कविता-कुंज—गोवर्द्धन सिंह 'गोरक्षहरि'	१-००
१०. बुरबक बनलीं (भो० एकांकी संग्रह)—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'	२-००
११ लहालोट (निबन्ध संग्रह)—सं० डा० बच्चन पाठक 'सलिल'	१-५०
१२ ऐनक (भो० रिपोर्ताज संग्रह)—परमेश्वर दूबे शाहाबादी	२-००
१३. तमाचा (बाल एकांकी संग्रह)—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'	१-००
१४. क्ष त्र ज्ञ (काव्य संग्रह)—परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'	१-००
१५. गाँव के माटी (उपन्यास)—बालेश्वर राम यादव	३-००
१६ साक्षात्कार:भोजपुरी साहित्यकार (इन्टरवियू साहित्य)-सं०निर्भीक	३-००
१७ हहरत हियरा (गीत संग्रह)—गंगा प्रसाद 'अरुण'	३-००

पता—द्वारा रोड-ए, क्वार्टर-टी-६,
टेल्को कॉलनी
जमशेदपुर-८३१००४ (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.